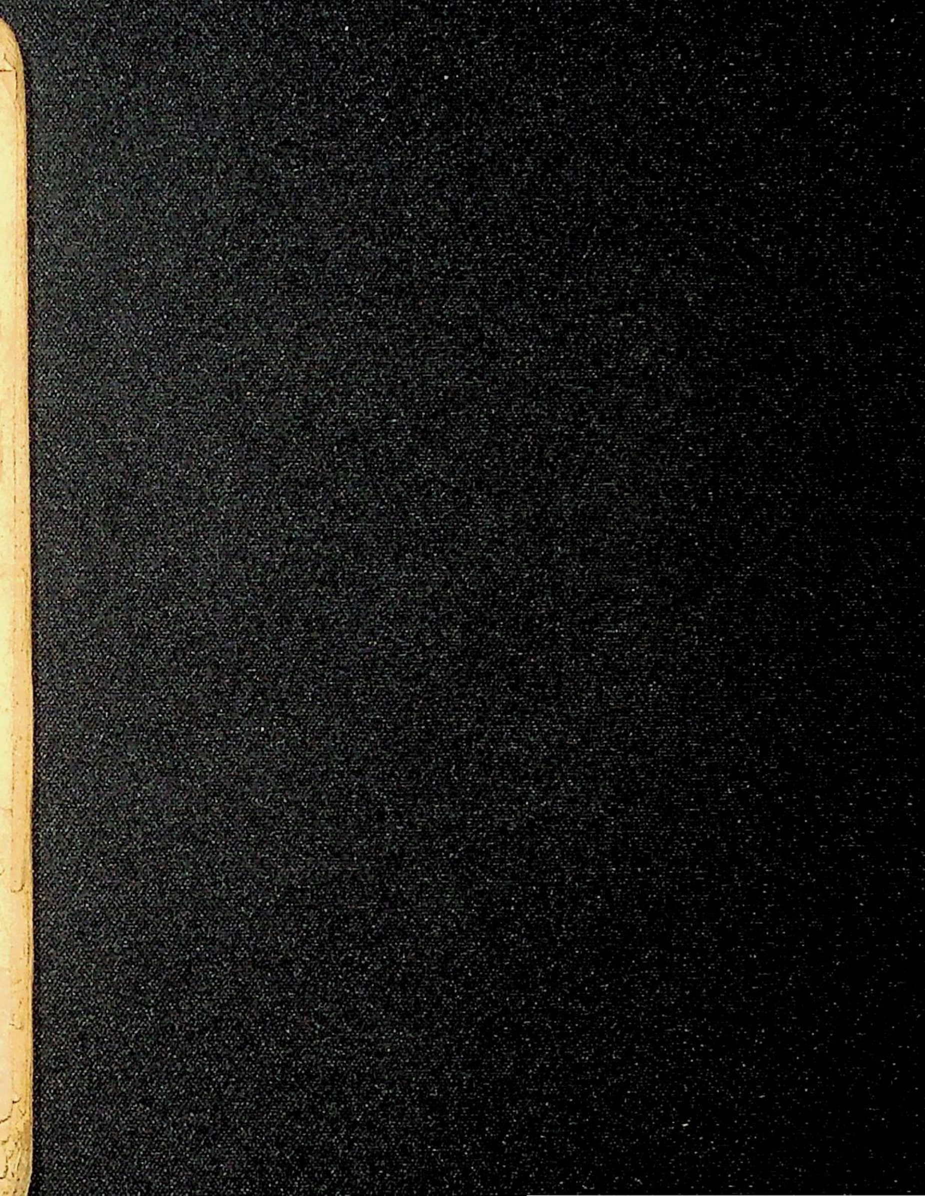
गुटका

चन्द्रकान्ता सन्तति।

तीसरा हिस्सा।

बाबू देवकीनन्दन खत्री



मिलने का पता—

मैनेजर लहरी प्रेस,

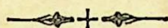
लाहौरी टोला,

बनारस सिटी।

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति ।

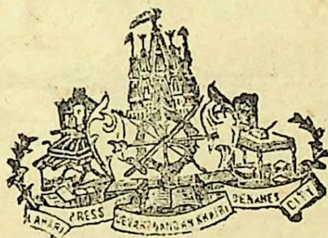
तीसरा हिस्सा ।



बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित

और

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित ।





पन्नालाल राय द्वारा

लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित ।

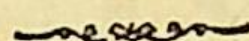
पांचवीं बार ३०००] १९२१ [मूल्य ।=) आ०

॥ श्रीः ॥



चन्द्रकान्ता सन्तति ।

तीसरा हिस्सा ।



पहिला बयान ।

पाठक समझ ही गये होंगे कि रामशिला के सामने फलगूनदी के बीच में भयानक टीले के ऊपर रहने वाले बाबाजी के पास जो दोनों औरतें गई थीं वह माधवी और उसकी सखी तिलोत्तमा थीं। बाबाजी ने उन दोनों से वादा किया था कि तुम्हारी बात का जवाब कल देंगे इसलिये दूसरे दिन वे दोनों आधी रात के समय फिर बाबाजी के पास गईं, किवाड़ खटखटाते ही अन्दर से बाबाजी ने दर्वाजा खोल दिया और उन दोनों को बुला कर अपने पास बैठाया ॥

बाबा० । कहो माधवी अच्छी हो ?

माधवी० । अच्छी क्या रहूंगी अपने किये को पछताती हूं ॥

बाबा० । अब भी अपने को सम्हालो तो मैं वादा करता हूं कि राजा बीरेन्द्रसिंह से कह कर तुम्हारा राज्य तुम्हें दिलवा दूंगा ॥

माधवी० । अजी अब भीख मांगने की इच्छा नहीं होती अब तो जहां तक बन पड़ेगा अपने दुश्मनों को मार के कलेजा ठण्ढा करूंगी,

चाहे इसके लिये मेरी भी जान जाय तो कोई परवाह नहीं ॥

बाबा० । अगर यही खयाल है तो तुम्हें अपने दीवान अग्निदत्त से बदला लेना चाहिये, बीरेन्द्रसिंह के लड़कों ने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा ॥

माधवी०। आपका कहना ठीक है मगर मैंने जो कुछ सोच रक्खा है वही करूंगी, अपना इरादा किसी तरह बदल नहीं सकती इसमें आपको हर तरह मेरी मदद करनी होगी ॥

बाबा०। खैर जिस तरह बनेगा मैं तुम्हारी मदद करूंगा मगर यह तो बताओ कि सिवाय मेरे इस समय और भी कोई तुम्हारा मददगार है या नहीं ?

माधवी०। कल तक तो मेरा मददगार कोई भी न था मगर आज मेरे कई मददगार पहुंच गये हैं अब मेरा काम जरूर हो जायगा इस में शक नहीं ॥

बाबा० । कौन मददगार पहुंच गया है ?

माधवी० । मेरा भाई भीमसेन ॥

बाबा० । शिवदत्त का लड़का भीमसेन ?

माधवी० । जी हां ॥

बाबा० । अब तुम्हारा काम हो जायगा ॥

माधवी० । तो भी आपको मेरी मदद करनी ही होगी ॥

बाबा०। मैं जरूर मदद करूंगा, जो कुछ कहो मैं करने को तैयार हूं ॥

माधवी० । कल भीमसेन उस मकान में जाने का उद्योग करेगा जिसमें किशोरी रहती है, उसने मौका पाते ही अपनी बहिन किशोरी को मार डालने की कसम खाई है, अगर कल वह उस मकान के अन्दर किसी तरह जा सका तो जरूर किशोरी को मार डालेगा फिर

मुझे किसी तरह का तरद्दुद न रहेगा और न आपसे मदद लेने की जरूरत पड़ेगी अगर शायद वह उस मकान के अन्दर न जा सका तो जिस तरह हो आपको ऐसी तरकीब करनी पड़ेगी जिसमें किशोरी उस मकान को छोड़ दे॥

बाबा०। भरसक तो मेरे मदद की जरूरत ही न पड़ेगी॥

माधवी०। ऐसा न कहिये, अगर उस मकान में कमन्द लगाने की जगह होती तब तो कोई बात ही न थी, अब तक मैं अपना काम निकाल लिये होती॥

बाबा०। हां यह तो मैं भी जानता हूं कि तुम्हारे पिता ने उस मकान के बनवाने में बड़ी कारीगरी खर्च की है मगर तौ भी भीमसेन ने उसके अन्दर जाने की कोई तरकीब सोची ही होगी॥

माधवी०। जी हां, देखा चाहिये कल क्या होता है॥

बाबा०। अच्छा अब तुम परसों मुझसे जरूर मिलना अगर कल तुम्हारा काम होगा तो ठीक ही है नहीं तो चौथे दिन मैं सहज ही में तुम्हारा काम कर दूंगा॥

"बहुत अच्छा" कहकर माधवी वहां से उठी और अपनी सखी तिलोत्तमा को साथ लिये अपने डेरे पर चली आई॥

माधवी के चले जाने पर थोड़ी देर तक बाबाजी कुछ सोचते रहे इसके बाद कुटी के बाहर निकले और दो चार दफे जोर २ से ताली बजाई। यकायक इधर उधर पेड़ों की आड़ में से चार पांच आदमी निकल कर बाबाजी के पास आये और एक ने बढ़ कर पूछा, "कहिये क्या हाल है?"

बाबाजी ने कहा, आज आप लोगों की कोई जरूरत नहीं है जहां चाहिये चले जाइये मगर कल घण्टे रात जाते जाते आप लोग यहां जुट जाइये॥

एक०। क्यों खैर तो है मैं बिना कुल हाल सुने जाने वाला नहीं॥

बाबा०। अच्छा आओ सुन लो कि कल क्या होगा और हमलोग क्या करेंगे॥

सभों को लेकर बाबाजी कुटी के अन्दर गये और किवाड़ बन्द करके न मालूम क्या बातचीत करने लगे॥

अब हम फिर उस मकान में पहुंचते हैं जिसमें किशोरी और किन्नरी का डेरा है या जहां इन्द्रजीतसिंह को लेकर कमला गई है॥

किशोरी के चिल्लाने की आवाज सुन कर किन्नरी हाथ में तलवार लिये बहुत जल्द नीचे उतर गई, कमला ने किवाड़ खटखटाया है दर्वाजा खोलना चाहिये इसका खयाल तो जाता रहा और इधर उधर किशोरी को ढूंढ़ने लगी, मगर इस ढूंढ़ने में उसने ज्यादे देर न लगाई, दोही चार दफे दालान और कोठड़ियों में घूम कर वह लौटी और सदर दर्वाजा खोल कर कमला को मकान के अन्दर कर लिया॥

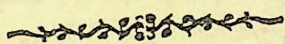
दर्वाजा खुलने में देर हुई इसीसे कमला समझ गई कि भीतर कुछ गोलमाल हुआ है, अन्दर आतेही उसने पूछा, "क्यों क्या हुआ?" इसके जवाब में बदहवास किन्नरी केवल इतनाही कह सकी कि "दर्वाजा खोलने के लिये किशोरी नीचे उतरी मगर न मालूम चिल्ला कर कहां गायब होगई!!"

कमला ने इस बात का कुछ जवाब न दिया, उसने सब के पहिले छत पर जाकर कुंअर इन्द्रजीतसिंह को कमन्द लगाने में मदद दी और जब वह और तारासिंह ऊपर चढ़ आये तो उन दोनों को भी साथ ले नीचे आंगन में उतर आई और किन्नरी ही की तरह संक्षेप में किशोरी के गायब हो जाने का हाल कह कर इधर उधर ढूंढ़ने लगी॥

ये सब बातें थोड़ी ही देर में होगईं और अँधेरा होने पर भी बात की बात में कमला ने नीचे की कुल कोठड़ियों में किशोरी को ढूंढ

हाला, परेशान और बदहवास इन्द्रजीतसिंह भी उसके साथ साथ घूमते रहे॥

ढूंढते ढूंढते कमला जब उस कोठड़ी में पहुंची जिसकी पीठ खंड-हर की तरफ पड़ती थी तो यकायक चांदना मालूम पड़ा, आखिर निश्चय हो गया कि खंडहर की तरफ से कोई दीवार में सेंध लगा कर इस मकान के अन्दर घुसा और यह आफत मचा गया। उस खुलासी सेंध की राह से निकल ये चारो आदमी भी खंडहर में गये और वहां विचित्र तमाशा देखा॥



दूसरा बयान।

शिवदत्तगढ़ में महाराज शिवदत्त बैठा हुआ बेफिक्री का हलुआ नहीं उड़ाता, सच पूछिये तो तमाम जमाने की फिक्र ने उसको आ घेरा है, वह दिन रात सोचाही करता है, उसके ऐयारों और जासूसों का दिन दौड़ते ही बीतता है, चुनार, गयाजी और राजगृही का हाल तो उसे रत्ती २ मालूम है क्योंकि इन तीनों जगहों की खबरें पहुंचाने के लिये उसने पूरा बन्दोबस्त किया हुआ है। आज यह खबर पाकर कि—गयाजी का राज्य राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे में आ गया, माधवी राजगृही छोड़ कर भाग गई, किशोरी दीवान अग्निदत्त के हाथ फँसी हुई है—शिवदत्त घबड़ा उठा और तरह तरह की बातें सोचने में यह इतना लीन हो गया कि तनोबदन की सुध जाती रही, किशोरी के ऊपर तो उसे इतना गुस्सा आया कि अगर वह यहां मौजूद होती तो अपने हाथ से टुकड़े २ कर डालता, इस समय भी वह प्रण करके उठ खड़ा हुआ कि "जब तक किशोरी के मरने की खबर न पाऊंगा अन्न न खाऊंगा।" और सीधा महल में चला गया और हुक्म देता

गया कि भीमसेन को हमारे पास भेज दो ॥

राजा शिवदत्त महल में जाकर अपनी रानी कलावती के पास बैठ गया, उसके चेहरे की उदासी और परेशानी का सबब जानने के लिये कलावती ने बहुत कुछ उद्योग किया मगर जब तक उसका लड़का भीमसेन महल में न आ गया उसने कलावती की बात का जवाब भी न दिया। मां बाप के पास पहुंचतेही भीमसेन ने प्रणाम किया और पूछा कि क्या आज्ञा होती है ?

शिव०। किशोरी के बारे में जो कुछ खबर आज पहुंची है तुमने भो सुनी होगी ॥

भीम०। जी हां ॥

शिव०। अफसोस ! फिर भी तुम्हें अपना मुंह दिखाते शरम नहीं आती ! न मालूम तुम्हारी बहादुरी किस दिन काम आवेगी और तुम किस दिन अपने को इस लायक बनाओगे कि मैं तुम्हें अपना लड़का समझूं ॥

भीम०। मुझे जो कुछ आज्ञा हो करने को तैयार हूं ॥

शिव०। मुझे उम्मीद नहीं कि तुम मेरी बात मानोगे ॥

भीम०। मैं यज्ञोपवीत हाथ में लेकर कसम खाता हूं कि जब तक जान बाकी है उस काम के करने में पूरी कोशिश करूंगा जिसके लिये आप आज्ञा देंगे ॥

शिव०। मेरा पहिला हुक्म यह है कि किशोरी का सर काट कर मेरे पास लाओ ॥

भीम०। (कुछ सोच कर ऊंची सांस लेकर) बहुत अच्छा ऐसा ही होगा। और क्या हुक्म होता है ?

शिव०। इसके बाद वीरेन्द्रसिंह या उनके लड़कों में से जब तक किसी को न मार लो यहां मत आओ। यह न समझना कि यह काम

मैं तुम्हारेही सपुर्द करता हूं बल्कि मैं खुद आज इस शिवदत्तगढ़ को छोड़ूंगा और अपना कलेजा ठंढा करने के लिये पूरा उद्योग करूंगा। बीरेन्द्रसिंह का चढ़ता प्रताप देखकर मुझे निश्चय होगया कि लड़कर मैं उन्हें किसी प्रकार नहीं जीत सकता, इस लिये आज से मैं उनके साथ लड़ने का खयाल छोड़ देता हूं और उस ढङ्ग पर चलता हूं जिसे ठग, चोर या डाकू लोग पसन्द करते हैं ॥

भीम० । अख़्तियार आपको है जो चाहे करें । मुझे आज्ञा हो तो इसी समय चला जाऊं और जो कुछ हुक्म हुआ है उसे पूरा करने का उद्योग करूं ॥

शिव० । अच्छा जाओ मगर यह कहो कि अपने साथ किस २ को ले जाते हो ?

भीम० । किसी को नहीं ॥

शिव० । तब कुछ न कर सकोगे, दो तीन ऐयार और दस बीस लड़ाकों को अपने साथ लेते जाओ ॥

भीम० । आपके यहां ऐसा कौन ऐयार है जो बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का मुकाबला करे और ऐसा कौन बहादुर है जो उन लोगों के सामने तलवार उठा सके ?

शिव० । तुम्हारा कहना ठीक है मगर तुम्हारे साथ गये हुए ऐयारों की कार्रवाई तभी तक बहुत अच्छी होगी जब तक दुश्मनों को यह न मालूम होजाय कि शिवदत्तगढ़ का कोई आया है । सिवाय इसके मैं बहादुर नाहरसिंह को तुम्हारे साथ भेजता हूं जिसका मुका-बला करने वाला बीरेन्द्रसिंह की तरफ कोई भी नहीं है ॥

भीम० । बेशक नाहरसिंह ऐसाही है मगर मुश्किल तो यह है कि नाहरसिंह जितना बहादुर है उससे ज्यादा इस बात को देखता है कि मैं अपने कौल का सच्चा हूं, जिस दिन कोई बहादुर द्वन्द युद्ध में मुझे

जीत लेगा उसी दिन मैं उसका हो जाऊंगा, ईश्वर न करे कहीं ऐसी नौबत पहुंची तो वह उसी दिन हम लोगों का दुश्मन हो जायगा ॥

शिव० । यह सब तुम्हारा खयाल है द्वन्द युद्ध में उसे वहां कोई जीतने वाला नहीं है ॥

भीम० । अच्छा जो आज्ञा ॥

शिव० । (खड़े होकर) चलो मैं इसी वक्त तुम्हारे जाने का बन्दोबस्त कर देता हूं ॥

शिवदत्त और भीमसेन के बाहर चले जाने के बाद रानी कलावती ने, जो बहुत देर से इन दोनों की बातें सुन सुन कर गरम गरम आंसू गिरा रही थी सर उठाया और लम्बी सांस लेकर कहा, "हाय अब तो जमाने का उलट फेर ही दूसरा हुआ चाहता है, बेचारी किशोरी का क्या कसूर? वह आप से तो चलीही नहीं गई, उसने अपने आप कोई ऐसा काम नहीं किया जिससे उसकी इज्जत में फर्क आवे, हाय! किस कलेजे से भीमसेन अपनी बहिन के मारने का इरादा करेगा! मेरी जिन्दगी अब व्यर्थ है क्योंकि बेचारी लड़की तो अब मारी ही जायगी, भीमसेन भी बीरेन्द्रसिंह से दुश्मनी करके अपनी जान नहीं बचा सकता, दूसरे उस लड़के का भरोसा ही क्या जो अपने हाथ से अपनी बहिन का सिर काटे, अगर इन सब बातों को भूल जाऊं और यही सोच कर बैठी रहूं कि मेरा सरवस्व तो पति है मुझे लड़के लड़कियों से क्या मतलब तो भी नहीं बनता, क्योंकि वे भी डाकूवृति लिया चाहते हैं! इस अवस्था में वे किसी प्रकार का सुख नहीं पा सकते, फिर जीते जी अपने पति को दुःख भोगते मैं कैसे देखूंगी? हाय! बीरेन्द्रसिंह वही बीरेन्द्रसिंह है जिसकी बदौलत मेरी जान बची थी, न मालूम वुर्दफरोशों की बदौलत मेरी क्या दुर्दशा होती, वही बीरेन्द्रसिंह है जिसने कृपा कर मुझे अपने पति के पास खोह में

भेजवा दिया था, वही बीरेन्द्रसिंह है जिसने हमलोगों का कसूर एक दम माफ कर दिया था और चुनार की गद्दी देने को भी तैयार था, किस किस बात की तरफ देखूं, बीरेन्द्रसिंह के बराबर धर्मात्मा ते। कोई दुनियां में न होगा, फिर किसको दोष दूं, अपने पति को ? नहीं कभी नहीं, यह भी मेरे किये न होगा, यह सब दोष मेरे कर्मों ही का है फिर जब भाग्य ही बुरे हैं ते। ऐसे भाग्य को लेकर दुनियां में क्यों रहूं ! अपनी छुट्टी ते। आप कर लेती हूं फिर मेरे पीछे क्या जाने क्या होगा इसकी खबरही किसे है ॥"

रानी कलावती पागल की तरह बहुत देर तक बकती रही आखिर उठ खड़ी हुई और ताली का गुच्छा उठा कर छोटी सी सन्दूकड़ी खोली और न मालूम उसमें से क्या निकाल कर अपने मुंह में रख लिया और पासही पड़ी हुई सोने की सुराही में से जल निकाल कर पीने के बाद कलम दावात और कागज लेकर बैठी और कुछ लिखने लगी। लेख समाप्त होते २ तक उसकी सखियां भी वहां आ पहुंचीं। कलावती ने लिखे हुए कागज को लपेट कर अपनी एक सखी के हाथ में दिया और कहा कि जब महाराज मुझे पूछें ते। यह कागज उनके हाथ में देदेना, तुमलोग जाओ अपना २ काम करो मैं इस समय सोया चाहती हूं जब तक मैं खुद न उठूं खबरदार मुझको कभी मत उठाना ॥

हुक्म पाते ही उसकी लैांडियां और सखियां वहां से हट गईं और रानी कलावती ने पलङ्ग पर लेट कर आंचल से अपना मुंह ढांप लिया ॥

दो ही पहर बाद मालूम हो गया कि रानी कलावती सो गई। आज के लिये नहीं बल्कि वह हमेशे के लिये सो गई अब वह किसी के जगाये नहीं जाग सकती !!

शाम के वक्त महाराज शिवदत्त जब फिर महल में आये ते। महा-

रानी का लिखा कागज उनके हाथ में दिया गया । पढ़ते ही शिवदत्त दौड़ा हुआ उस कमरे में गया जिस में कलावती सोई हुई थी, मुंह पर से कपड़ा हटाया, नब्ज देखा और तुरत लौट कर बाहर चला गया ॥

अब तो उसकी सखियों और लौंडियों को भी मालूम होगा कि रानी कलावती हमेशे के लिये सो गई, न मालूम बेचारी ने किन किन बातों को सोच कर जान दे देना ही मुनासिब समझा । उसकी प्यारी सखियां जिन्हें वह जान से ज्यादे मानती थी पलङ्ग के चारो तरफ जमा हो गईं और उसकी आखिरी सूरत देखने लगीं । भीमसेन चार घण्टे पहिले ही मुहिम पर रवाना हो चुका था उसे अपनी प्यारी मां के मरने की कुछ खबर ही नहीं और यह सोच कर कि वह उदास और सुस्त होकर अपना काम न कर सकेगा, शिवदत्त ने भी कलावती के मरने की खबर उसके कान तक पहुंचने न दी ॥

ऐयारों और थोड़े से लड़ाकों के सिवाय नाहरसिंह को साथ लिये हुए भीमसेन राज्यगृही की तरफ रवाना हुआ । बेशक नाहरसिंह लड़ाई के फन में बहुत ही जबरदस्त था, उसे विश्वास था कि कोई अकेला आदमी मुझसे लड़ कर जीत नहीं सकता, भीमसेन भी अपने को बहुत ताकतवर और होशियार लगाता था मगर जब से लोभवश नाहरसिंह ने उसकी नौकरी कर ली और आजमाइश के तौर पर दो चार दफे नाहरसिंह और भीमसेन से नकली लड़ाई हुई, तब से भीमसेन को मालूम हो गया कि नाहरसिंह के सामने वह एक बच्चे के बराबर है । नाहरसिंह लड़ाई फन में जितना होशियार और ताकतवर था उतना ही नेक और ईमानदार भी था, उसका यह प्रण करना बहुत ही मुनासिब था कि "जिस दिन जो कोई उसे जीतेगा वह उसी दिन से उसकी तावेदारी कबूल कर लेगा ॥"

ये लोग पहिले राजगृही में पहुंचे और एक गुप्त खोह में डेरा

डालने बाद ऐयारों को वहां का हाल चाल मालूम करने के लिये मुस्तैद किया। दो ही दिन की कोशिश में ऐयारों ने कुल हाल वहां का मालूम कर लिया और भीमसेन ने जब यह सुना कि किशोरी और माधवी वहां मौजूद नहीं हैं तब बिना छेड़छाड़ मचाये गयाजी की तरफ कूच किया॥

इस समय राजगृही को अपने कब्जे में कर लेना भीमसेन के लिये कोई बड़ी बात न थी, मगर इस खयाल से कि गयाजी में राजा बीरेन्द्रसिंह की अमलदारी हो गई है राजगृही दखल करने से कोई फायदा न होगा और बीरेन्द्रसिंह के मुकाबले में लड़ कर जीतना बहुत ही मुश्किल है, उसने राजगृही का खयाल छोड़ दिया, सिवाय इसके जाहिर हो कर वह किसी तरह किशोरी को अपने कब्जे में नहीं कर सकता था, उसे लुक छिप कर पहिले किशोरी ही पर सफाई का हाथ दिखाना मंजूर था॥

गया जी के पास पहुंचते ही एक गुप्त और भयानक पहाड़ी में उन लोगों ने डेरा डाला और खबर लेने के लिये ऐयारों को रवाना किया। जिस तरह भीमसेन के ऐयार लोग घूम २ कर टोह लिया करते थे उसी तरह माधवी की सखी तिलोत्तमा भी अपना काम साधने के लिये भेष बदल कर चारो तरफ घूमा करती थी, इत्तफाक से भीमसेन के ऐयारों की मुलाकात तिलोत्तमा से होगई और बहुत जल्द माधवी की खबर भीमसेन को और भीमसेन की खबर माधवी को लग गई॥

भीमसेन के साथ जितने लड़ाके थे उन सभों को खोह में छोड़ सिर्फ भीमसेन और नाहरसिंह को माधवी ने उस मकान में बुला लिया जिसका हाल ऊपर लिख चुके हैं॥

आज किशोरी और किन्नरी के घर में घुस कर आफत मचाने

वाले ये ही भीमसेन और नाहरसिंह हैं, अपने ऐयारों की मदद से उस मकान के बगल वाले खण्डहर में घुसकर भीमसेन ने उस मकान में सींध लगाई और उस सींध की राह नाहरसिंह ने अन्दर जाकर जो कुछ किया पाठकों को मालूम ही है ॥

नाहरसिंह मकान के अन्दर घुस कर उसी सींध की राह किशोरी को लेकर बाहर निकल आया और उस बेचारी को जमीन पर गिरा कर मालिक के हुक्म मुताबिक उसे मार डालने पर मुस्तैद हुआ मगर एक बेकसूर औरत पर इस तरह जुल्म करने का इरादा करते ही उस जवांमर्द का कलेजा दहल गया और वह किशोरी को जमीन पर रख दूर जा खड़ा हुआ और भीमसेन से जो मुंह पर नकाब डाले उस जगह मौजूद था कहा, "लीजिये इसके आगे जो कुछ करना है आपही कीजिये मेरी हिम्मत नहीं पड़ती, मगर मैं आपको भी..."

हाथ में खञ्जर लेकर भीमसेन फौरन बेचारी किशोरी की छाती पर जो उस समय डर के मारे बेहोश थी जा चढ़ा, साथ ही इसके किशोरी की बेहोशी भी जाती रही और उसने अपने को मौत के पंजे में फंसा हुआ पाया जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं ॥

भीमसेन ने खञ्जर उठा कर ज्यों ही किशोरी को मारना चाहा कि पीछे से किसी ने उसकी कलाई थाम ली और खञ्जर लिये उसके मजबूत हाथ को बेबस कर दिया, भीमसेन ने फिर कर देखा तो एक साधू की सूरत नजर पड़ी । किशोरी को छोड़ उठ खड़ा हुआ और उसी खञ्जर से उस साधू पर वार किया ॥

यह साधू वही है जो रामशिला पहाड़ी के सामने फलगू नदी के बीच में एक भयानक टीले पर रहता था और जिसके पास मदद के लिये माधवी और तिलोत्तमा का जाना और उन्हीं के पास देवीसिंह का पहुंचना भी हम लिख आये हैं, इस समय वह साधू इस बात पर

मुस्तैद दिखाई देता है कि जिस तरह बने इन दुष्टों के हाथ से बेचारी किशोरी को बचावे ॥

चांदनी रात में दूर खड़ा नाहरसिंह यह तमाशा देखता रहा मगर भीमसेन को साधू से जबर्दस्त समझ कर मदद के लिये पास न आया, भीमसेन के चलाये हुए खञ्जर ने साधू का कुछ भी नुक्सान न किया, उसने खञ्जर का वार बचा कर फुर्ती से भीमसेन के पीछे जा उसकी टांग पकड़ कर इस ढब से खैंचा कि भीमसेन किसी तरह सम्हल न सका और धम्म से जमीन पर गिर पड़ा, उसके गिरते ही साधू हट खड़ा हुआ और बोला, "उठ खड़ा हो और फिर आ कर लड़ ॥"

गुस्से में भरा हुआ भीमसेन उठ खड़ा हुआ और खञ्जर जमीन पर फेंक साधू से लपट गया क्योंकि वह कुश्ती के फन में अपने को बहुत होशियार समझता था मगर साधू से कुछ पेश न गई, थोड़ी देर में साधू ने भीमसेन को सुस्त कर दिया और कहा कि "जा मैं तुझे छोड़ देता हूं, अगर अपनी जिन्दगी चाहता है तो अभी भाग जा ॥"

भीमसेन हैरान हो कर साधू का मुंह देखता रह गया कुछ जवाब न दे सका। जमीन पर पड़ी हुई बेचारी किशोरी यह कैफियत देख रही थी मगर डरके मारे न तो उससे उठा जाता था और न वह चिल्ला ही सकती थी ॥

भीमसेन को इस तरह बेदम देख कर नाहरसिंह से न रहा गया वह झपट कर साधू के पास आया और ललकार कर बोला, "अगर बहादुरी का दावा रखता है तो इधर आ, मैं समझ गया कि तू साधू नहीं बल्कि मक्कार है ॥"

साधू महाशय नाहरसिंह से भी उलझने को तैयार हो गये मगर ऐसी नौबत न आई क्योंकि उसी समय ढूंढ़ते हुए सींध की राह से

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और तारासिंह भी खंडहर में आ पहुंचे और उनके पीछे पीछे किन्नरी और कमला भी आ मौजूद हुईं। कुंअर इन्द्रजीतसिंह को देखते ही साधूराम तो हट गए और खंडहर की दीवार फांद न मालूम कहां चले गए। एक पेड़ के पास में गड़े हुए अपने नेजे को नाहरसिंह ने उखाड़ लिया और उसी से इन्द्रजीतसिंह का मुकाबला किया। तारासिंह ने उछल कर एक लात भीमसेन को ऐसी लगाई कि वह किसी तरह सम्हल न सका तुरत जमीन पर लोट गया। भीमसेन एक लात खा कर जमीन पर लोट जाने वाला न था मगर साधू के साथ लड़ कर वह बदहवास और सुस्त हो रहा था इसलिये तारासिंह की लात सम्हाल न सका। तारासिंह ने भीमसेन की मुश्कें बांध लीं और उसे एक किनारे रख कर नाहरसिंह और इन्द्रजीतसिंह की लड़ाई का तमाशा देखने लगा॥

आधे घण्टे तक नाहरसिंह और इन्द्रजीतसिंह की लड़ाई होती रही, इन्द्रजीतसिंह की तलवार ने नाहरसिंह के नेजे को दो टुकड़े कर दिया और नाहरसिंह की ढाल पर बैठ कर कुंअर इन्द्रजीतसिंह की तलवार कब्जे से अलग हो गई, थोड़ी देर के लिये दोनों बहादुर ठहर गये, कुंअर इन्द्रजीतसिंह की बहादुरी देख कर नाहरसिंह बहुत खुश हुआ और बोलाः—

नाहर०। शाबाश! तुम्हारे ऐसा बहादुर मैंने आज तक नहीं देखा!!

इन्द्रजीत०। ईश्वर की सृष्टि में एक से एक बढ़ के पड़ा हुआ है तुम्हारे या हमारे ऐसे की बात ही क्या है॥

नाहर०। आपका कहना बहुत ठीक है, मेरा प्रण क्या है आप जानते हैं?

इन्द्रजीत०। कह जाइये अगर नहीं जानता हूं तो अब मालूम हो जायगा॥

नाहर०। मैंने प्रण किया है कि जो कोई लड़ कर मुझे जीतेगा मैं उसकी ताबेदारी कबूल करूंगा॥

इन्द्र०। तुम्हारे ऐसे बहादुर का यह प्रण करना बेमुनासिब नहीं है फिर आइये कुश्ती से निपटेरा कर लिया जाय॥

नाहर०। बहुत अच्छा आइये॥

दोनों में कुश्ती होने लगी, थोड़ी ही देर में कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने नाहरसिंह को जमीन पर दे मारा और पूछा, "कहो अब क्या इरादा है?"

नाहर०। मैं ताबेदारी कबूल करता हूं॥

इन्द्रजीतसिंह उसकी छाती पर से उठ खड़े हुए और इधर उधर देखने लगे। चारो तरफ सन्नाटा था, किशोरी किन्नरी या कमला का पता नहीं, भीमसेन और उसके साथियों का (अगर कोई वहां हो) नाम निशान नहीं, यहां तक कि अपने ऐयार तारासिंह की सूरत भी उन्हें दिखाई न दी॥

इन्द्र०। चारो तरफ सन्नाटा क्यों हो गया?

नाहर०। ताज्जुब है! इसके पहिले यहां कई आदमी थे न मालूम वे सब कहां चले गये॥

इन्द्र०। तुम कौन हो और तुम्हारे साथ कौन था?

नाहर०। मैं आपका ताबेदार हूं, मेरे साथ शिवदत्तसिंह का लड़का भीमसेन था और इसके पहिले मैं उसका नौकर था, आशा है कि आप भी अपना परिचय मुझे देंगे॥

इन्द्र०। मेरा नाम इन्द्रजीतसिंह है॥

नाहर०। हां!!

नाम सुनते ही नाहरसिंह पैरों पर गिर पड़ा और बोला—"मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूं कि उसने मुझे आपकी ताबेदारी में सौंपा

यदि किसी दूसरे की तावेदारी कबूल करनी पड़ती तो बड़ा ही दुःख होता ॥"

नाहरसिंह ने सच्चे दिल से कुमार की तावेदारी कबूल की और बड़ी देर तक दोनें बहादुर चारों तरफ घूम घूम कर लोगों को ढूंढ़ते रहे मगर किसी का पता न लगा, हां एक पेड़ के नीचे भीमसेन दिखाई पड़ा जिसके हाथ पैर कमन्द से मजबूत बँधे हुए थे। भीमसेन ने पुकार कर कहा, "क्यों नाहरसिंह ! क्या मेरी मदद न करोगे ?"

नाहर० । अब मैं तुम्हारा तावेदार नहीं हूं ॥

इन्द्र० । (भीमसेन से) तुम्हें किसने बांधा ?

भीम० । मैं पहिचानता तो नहीं मगर इतना कह सकता हूं कि आपके साथी ने ॥

इन्द्र० । और वह बाबाजी कहां चले गये ?

भीम० । क्या मालूम ॥

इतने ही में खँडहर की दीवार फांद कर आते हुए तारासिंह भी दिखाई पड़े, इन्द्रजीतसिंह घबड़ाये हुए उनकी तरफ बढ़े और पूछा, "तुम कहां चले गये थे ?"

तारा० । जिस समय हमलोग यहां आये थे, एक बाबाजी मैाजूद थे मगर न मालूम वह कहां चले गये, मैं एक आदमी की मुश्कें बांध रहा था उसी समय (हाथ का इशारा करके) उस झाड़ी में से छिपे हुए कई आदमी बाहर निकले और किशोरी को जबर्दस्ती उठा कर उसी तरफ ले चले, उन लोगों को जाते देख किन्नरी और कमला भी उसी तरफ लपकीं, मैंने यह सोच कर कि कहीं ऐसा न हो कि आपको लड़ाई के समय धोखा दे कर यह आदमी पीछे से आप पर वार करे झटपट उसकी मुश्कें बांधीं और फिर मैं भी उसी तरफ लपका जिधर वे लोग गये थे । वहां कोने में एक खुली हुई खिड़की

नजर आई, मैं भी यह सोच कर उस खिड़की के बाहर निकल गया कि बेशक इसी राह से वे लोग निकल गये होंगे ॥

इन्द्र०। फिर कुछ पता ?

तारा०। कुछ भी नहीं, न मालूम वे लोग किधर गायब हो गये, मैं आपको लड़ते हुए छोड़ गया था इस लिये तुरत लौट आया अब आप घर चलिये आपको पहुंचा कर मैं उन लोगों की खोज में निकलूंगा (नाहरसिंह की तरफ इशारा करके) इनसे क्या निपटेरा हुआ ?

इन्द्र०। इन्होंने मेरी ताबेदारी कबूल कर ली ॥

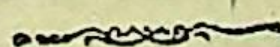
तारा०। सो तो ठीक है मगर दुश्मन का......

नाहर०। आप इन सब बातों को न सोचिये ईश्वर चाहेगा तो आपलोग मुझे बेईमान कभी न पावेंगे ॥

तारा०। ईश्वर ऐसा ही करे ॥

रात की अँधेरी बिलकुल जाती रही अच्छी तरह सवेरा होगया महल्ले के कई आदमी उस खिड़की की राह खँडहर में चले आये और अपने राजा को वहां पा हैरान हो चारो तरफ देखने लगे। कुंअर इन्द्रजीतसिंह, तारासिंह और नाहरसिंह अपने साथ भीमसेन को लिये हुए महल में पहुंचे और इन्द्रजीतसिंह ने सब हाल अपने छोटे भाई आनन्दसिंह से कहा ॥

आज रात की वारदात ने दोनों कुमारों को ज्यादे तरद्दुद में डाल दिया। किन्नरी और किशोरी के इस तरह मिल कर गायब हो जाने से दोनों ही पहिले से ज्यादे उदास हुए और सोचने लगे कि अब क्या करना चहिये !!



तीसरा बयान ।

आधीरात का समय है और सन्नाटे की हवा चल रही है। बिल्लौर की तरह खूबी पैदा करने वाली चांदनी आशिक मिजाजों को सदाही भली मालूम होती है लेकिन आज की सर्दी ने उन्हें भी पस्त कर दिया है यह हिम्मत नहीं पड़ती कि जरा मैदान में निकलें और इस चांदनी की बाहर लें, घर में बैठे दर्वाजे की तरफ देखा करने और उसासें लेने से होता ही क्या है, मर्दानगी कोई और ही चीज है, इश्क किसी दूसरी ही वस्तु का नाम है, तौ भी इश्क के मारे हुए, माशूक की नागिनसी जुल्फों से अपने को डसाना ही जवांमर्दी समझते हैं, दिलवर की तिरछी निगाहों से अपने कलेजे को चलनी बनाने ही में बहादुरी मानते हैं, मगर वे लोग जो सच्चे बहादुर हैं घर बैठे 'ओफ !' करना पसन्द नहीं करते, समय पड़ने पर तलवार ही को अपना माशूक मानते हैं, देखिये इस सर्दी और ऐसे भयानक स्थान में एक सच्चे बहादुर को किसी पेड़ की आड़ में बैठ जाना भी बुरा मालूम होता है ॥

अब रात पहर भर से भी कम बाकी है, एक पहाड़ी के ऊपर जिसकी ऊंचाई बहुत ज्यादे नहीं तो इतनी कम भी नहीं है कि बिना दम लिये एक ही दौड़ में कोई ऊपर चढ़ जाय, एक आदमी मुंह पर नकाब डाले कपड़े से अपने तमाम बदन को छिपाये इधर से उधर, उधर से इधर टहल रहा है। चारो तरफ सन्नाटा है कोई उसे पहिचानने वाला यहां मौजूद नहीं इस खयाल से उसने नकाब उलट दी और कुछ देर के लिये खड़े होकर मैदान की तरफ देखने लगा ॥

इस पहाड़ी के बगल में एक दूसरी पहाड़ी है जिसकी जड़ इस पहाड़ी से मिली हुई है, मालूम होता है कि एक ही पहाड़ी के दो टुकड़े होगये हैं, बीच में डाकुओं और लुटेरों के आने जाने लायक एक

रास्ता है जिसे भयानक दर्रा कहना मुनासिब जान पड़ता है। इस आदमी की निगाह घड़ी घड़ी उस दर्रे ही की तरफ दौड़ती और सन्नाटा पा कर मैदान की तरफ घूम जाती है, इससे मालूम होता है कि उसकी आंखें किसी को ढूंढ़ रही हैं जिसके आने की उसे इस समय पूरी उम्मीद है॥

टहलते टहलते उसे बहुत देर बीत गई, पूरब तरफ आसमान पर कुछ कुछ सुपेदी फैलने लगी जिसे देख यह कुछ घबड़ाना सा हो गया और दस कदम आगे बढ़ कर मैदान की तरफ देखने लगा साथ ही इसके चौंका और धीरे में बोल उठा, "आ पहुंचे !!"

उस आदमी ने धीरे से सीटी बजाई। इधर उधर चट्टानों की आड़ में छिपे हुए दस बारह आदमी निकल आये जिन्हें देख वह हुकूमत के तौर पर बोला, "देखो वे लोग आ पहुंचे अब बहुत जल्द नीचे उतर चलना चाहिये॥"

बात के अन्दाज से मालूम हो गया कि वह आदमी जो बहुत देर से पहाड़ी के ऊपर टहल रहा था इन सभों का सर्दार है, अब उसने अपने चेहरे पर नकाब डाल ली और तेजी के साथ अपने साथियों को ले कर पहाड़ी के नीचे उतर आया और उन लोगों का मुहाना रोक लिया॥

कपड़े में लपेटी हुई एक लाश उठाये और कई आदमी उसे चारो तरफ से घेरे हुए उसी दर्रे में घुसे, वे लोग कदम बढ़ाये जा रहे थे स्वप्न में भी यह गुमान न था कि हमलोगों के काम में बाधा डालने वाला इस पहाड़ के बीच में कोई मिलेगा॥

जब लाश उठाये हुए वे लोग उस दर्रे के बीच में घुसे बल्कि उन लोगों ने जब आधा दर्रा तै कर लिया, तब यकायक चारो तरफ से छिपे हुए कई आदमी उन लोगों पर टूट पड़े और हर तरह से

उन्हें लाचार कर दिया, वे लोग किसी तरह उस लाश को न ले जा सके, तीन चार आदमियों के घायल होने और एक के मर जाने पर उसी जगह उस लाश को छोड़ उन लोगों को भाग जाना पड़ा॥

दुश्मनों के भाग जाने पर उस सर्दार ने जो पहिले ही से उस पहाड़ी पर मौजूद था और जिसका जिक्र हम कर आये हैं अपने साथियों को पुकार कर कहा, "पीछा करने की कोई जरूरत नहीं, हमारा मतलब निकल गया, मगर यह देख लेना चाहिये कि यह किशोरी है या नहीं॥"

एक ने अपने बटुये में से मोमबत्ती निकाल कर जलाई और उस लाश के मुंह पर से कपड़ा हटा कर देखा और कहा, "किशोरी ही तो है।" सर्दार ने किशोरी की नब्ज पर हाथ रक्खा और कहा:—

सर्दार०। ओफ! इसे बहुत तेज बेहोशी दी गई है, देखो तुम भी देख लो॥

एक०। (नब्ज देख कर) बेशक बहुत ज्यादे बेहोशी दी गई, ऐसी हालत में अक्सर जान निकल जाती है॥

दूसरा०। इसे कुछ कम करना चाहिये॥

सर्दार ने अपने बटुये में से एक डिबिया निकाली और खोल कर किशोरी को सुंघाने बाद फिर नब्ज पर हाथ रक्खा और कहा, "बस इससे ज्यादे बेहोशी कम करने से यह होश में आ जायगी, चलो उठाओ, अब यहां ठहरना मुनासिब नहीं है॥"

किशोरी को उठा कर वे लोग उसी दर्रे की राह घूमते हुए पहाड़ी के पार होगये और न मालूम किस तरफ चले गये। इनके जाने बाद उसी जगह से (जहां पर लड़ाई हुई थी) छिपा हुआ एक आदमी निकला और चारो तरफ देखने लगा। जब वहां किसी को मौजूद न पाया तो धीरे से बोल उठा:—

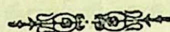
"हमारा पहिले ही से यहां आ पहुंचना कैसा मुनासिब हुआ! हम उन लोगों को खूब पहिचानते हैं जो लड़ भिड़ कर बेचारी किशोरी को ले गये, खैर क्या मुजायका है मुझसे भाग कर ये लोग कहां जायँगे। मेरे लिये तो दोनों ही बराबर हैं, वे ले जाते तब भी उतनी ही मेहनत करनी पड़ती और ये लोग ले गये हैं तब भी उतनी ही मेहनत करनी पड़ेगी खैर हरि इच्छा, अब बाबाजी को ढूंढ़ना चाहिये, उन्होंने भी इसी जगह मिलने का वादा किया है॥"

इतना कह वह आदमी चारो तरफ घूमने और बाबाजी को ढूंढ़ने लगा। इस समय इस आदमी को यदि माधवी देखती तो तुरत पहिचान लेती क्योंकि यह वही साधू है जो रामशिला पहाड़ी के सामने टीले पर रहता था, जिसके पास माधवी गई थी, या जिसने भीमसेन के हाथ से उस समय किशोरी की जान बचाई थी जब खंडहर के बीच में वह उसकी छाती पर सवार हो खञ्जर उसके कलेजे के पार किया ही चाहता था॥

साफ सवेरा हो चुका था बल्कि पूरब तरफ सूर्य की लालिमा ने चौथाई आसमान पर अपना दखल जमा लिया था। यह साधू इधर उधर घूमता फिरता एक जगह अटक गया और सोचने लगा कि किधर जायँ! क्या करें! इतने में सामने से इसी की सूरत शक्ल के एक दूसरे बाबाजी आते हुए दिखाई पड़े, देखते ही यह उनकी तरफ बढ़ा और बोला—"मैं बड़ी देर से यहां आपको ढूंढ़ रहा था क्योंकि इसी जगह मिलने का आपने वादा किया था॥"

अभी आये हुए बाबाजी ने कहा, "मैं भी वादा पूरा करने के लिये आ पहुंचा, (हँस कर) बहुत खासे! यदि इस समय कोई देखे तो अवश्य बावला हो जाय और कहे कि एक ही रङ्ग ढङ्ग और सूरत शक्ल के दो बाबाजी कहां से पैदा हुए। अच्छा अब हमारे पीछे २ चले आओ॥"

दोनों बाबाजी ने एक तरफ का रास्ता लिया और देखते देखते न मालूम किधर गायब हो गये और किस खोह में जा छिपे ॥



चौथा बयान ।

किशोरी की जब आंख खुली तो उसने अपने को एक सुन्दर मसहरी पर लेटे हुए पाया, उम्दः कपड़ों और जेवरों से सजी हुई कई औरतें भी उसे दिखाई पड़ीं, पहिले तो किशोरी ने यही समझा कि ये सब अच्छे अमीरों और सर्दारों की लड़कियां हैं मगर थोड़ीही देर बाद उनकी बातचीत और कायदे से मालूम हो गया कि लौंडियां हैं । अपनी बेबसी और बदकिस्मती पर रोती हुई किशोरी को भी यह जानने की बड़ी उत्कण्ठा हुई कि किस महाराजाधिराज के मकान में मैं आ फँसी हूं जिसकी लौंडियां इस शान और शौकत की दिखाई पड़ती हैं ॥

किशोरी को होश में आते देख उनमें की दो तीन लौंडियां न मालूम कहां चली गईं, मगर किशोरी ने समझ लिया कि मेरे होश में आने की किसी को खबर करने गई हैं ॥

ताज्जुब भरी निगाहों से किशोरी चारो तरफ देखने लगी । वाह वाह क्या सुन्दर कमरा बना हुआ है ! चारो तरफ दीवारों पर मीना-कारी का काम किया हुआ है, छत में सुनहरी बेल और बीच बीच में जड़ाऊ फूलों को देख कर अक्ल दङ्ग होती है, न मालूम इसकी तैयारी में कितने रुपये खर्च होगये होंगे, छत से लटकती हुई बिल्लौरी हांडियों की परइयों में मानिक की लोलकें लटक रही हैं, जड़ाऊ डारों पर बेशकीमती दीवारगीरें अपनी बहार दिखा रही हैं, दर्वाजों की मह-राबों पर अंगूर की बेलें और उस पर बैठी हुई छोटी छोटी खूबसूरत

चिड़ियाओं के बनाने में कारीगर ने जो कुछ मेहनत की होगी उसका जानना बहुतही मुश्किल है। उन अंगूरों में कहीं २ पक्के अंगूर की जगह मानिक और कच्चे की जगह पन्ना काम में लाया गया था। इलावे इन सब बातों के उस मकान की सजावट का हाल अगर लिखा जाय तो हमारा असल मतलब बिल्कुल छूट जाय और मुख़सर लिखावट के वादे में फर्क पड़ जाय॥

इस मकान को देख किशोरी दङ्ग होगई, उसकी हालत का लिखना बहुतही मुश्किल है, जिधर उसकी निगाह जाती उधरही को हो रहती थी, उस मकान की सजावट किशोरी अच्छी तरह देखने भी न पाई थी कि पहिले की सी कई लौंडियां वहां आ मौजूद हुई और बोलीं "महाराज को साथ लिये हुए रानी साहबा आती हैं॥"

महाराज को साथ लिये रानी साहबा उस कमरे में आ पहुंचीं, बेचारी किशोरी को क्या मालूम कि वे दोनों कौन हैं और कहां के राजा हैं? तौ भी इन दोनों की सूरत शक्ल देखते ही किशोरी रुआब में आ गई। महाराज की उम्र लगभग पचास वर्ष के होगी। लम्बा कद, गोल चेहरा, बड़ी बड़ी आंखें, चौड़ी पेशानी, ऊपर को उठी हुई मूछें, बहादुरी चेहरे पर बरस रही थी। रानी साहब की उम्र भी लगभग पैंतीस वर्ष के होगी फिर भी उनके बदन की घुलावट और खूबसूरती नौजवान परीजमालों की आंखें नीची करती थीं, उसकी बड़ी २ रतनार आंखों में अब भी वही बात थी जो उसकी जवानी में होगी। उनके अङ्गों की सफाई में किसी तरह फर्क नहीं आया था, इस समय धानी पोशाक उनकी खूबसूरती को बढ़ा रही थी, जड़ाऊ जेवरों से उसका बदन भरा हुआ था मगर देखने वाला यही कहेगा कि इन्हें जेवरों की कोई जरूरत नहीं यह तो हुस्न ही के बोझ से दबी जाती हैं॥

उन दोनों के रुआब ने किशोरी को पलङ्ग पर पड़े रहने न दिया वह उठ खड़ी हुई और उनकी तरफ देखने लगी। रानी साहबा चाहे कैसी ही खूबसूरत क्यों न हों, उन्हें अपनी खूबसूरती का चाहे कितना ही घमंड क्यों न हो मगर किशोरी की सूरत देखते ही वे दङ्ग हो गईं, सारी शेखी हवा होगई। उस समय वह हर तरह से सुस्त और उदास थी, किसी तरह की सजावट उसके बदन पर न थी, तो भी महारानी के जी ने गवाही दे दी कि इससे बढ़ कर खूबसूरत दुनियां में कोई न होगी। किशोरी उसकी खूबसूरती के रुआब में आकर पलङ्ग के नीचे नहीं उतरी बल्कि उसकी इज्जत के लिहाज से और यह सोच कर कि जब इस मकान की इतनी बड़ी सजावट है तो उस के खास कमरे की क्या हालत होगी और वह कितने बड़े राज्य और दौलत की मालिक होगी॥

राजा और रानी दोनों ने प्यार की निगाह से किशोरी की तरफ देखा और राजा ने आगे बढ़ कर किशोरी की पीठ पर हाथ फेर के कहा, "बेशक यह मेरी ही पतोहू होने के लायक है॥"

इस आखिरी शब्द ने किशोरी के साथ वह काम किया जो नमक जख्म के साथ, आग फूस की झोपड़ी के साथ, तीर कलेजे के साथ, शराब धर्म के साथ, लालच ईमान के साथ और बिजली गिर कर तनोबदन के साथ करती है॥



पांचवां बयान ।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह, नाहरसिंह और तारासिंह को साथ लिये घर आये और अपने छोटे भाई से सब हाल कहा, वे भी सुन कर बहुत उदास हुए और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये। दोनों कुमार बड़ेही तरद्दुद में पड़े। अगर तारासिंह को पता लगाने के लिये भेजें तो गया में कोई ऐयार न रह जाय और यह बात अगर उनके पिता सुनें तो बहुत रञ्ज हों जिसका खयाल उन्हें सब से ज्यादे था। दो पहर दिन चढ़े तक दोनों भाई बड़े ही तरद्दुद में पड़े रहे, दो पहर बाद उनका तरद्दुद कुछ कम हुआ जब भैरोसिंह, पण्डित बद्रीनाथ और जगन्नाथ ज्योतिषी वहां आ मौजूद हुए। इन तीनों के पहुंचने से दोनों कुमार बहुत खुश हुए और समझे कि अब हमारा काम अटका न रहेगा॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह, भैरोसिंह, तारासिंह, पण्डित बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी ये सब बाग की बारहदरी में एकान्त समझ कर चले गये और बातचीत करने लगे॥

आनन्द०। लीजिये साहब अब तो दुश्मन लोग यहां भी बहुत से हो गये॥

ज्योतिषी०। कोई हर्ज नहीं॥

इन्द्र०। भैरोसिंह! पहिले तुम अपना हाल कहो यहां से जाने बाद क्या हुआ?

भैरो०। मुझे तो रास्ते ही में मालूम हो गया था कि किशोरी वहां नहीं है॥

इन्द्र०। यह हाल मुझे भी मालूम हुआ था॥

भैरो०। ठीक है वह आदमी आपके पास भी आया होगा जिसने

मुझे खबर दी थी ॥

इन्द्र० । खैर तब क्या हुआ ?

भैरो० । फिर भी मैं वहां चला गया (बद्रीनाथ और ज्योतिषी जी की तरफ इशारा करके) और इन लोगों के साथ मिलकर काम करने लगा । ये लोग दो सौ बहादुरों के साथ वहां पहिले ही से मौजूद थे, आखिर यह हुआ कि दीवान अग्निदत्त और दो तीन उसके साथी गिरफ़ार करके चुनार भेज दिये गये, माधवी का पता नहीं कि वह कहां गई, वहां की रिआया सब अग्निदत्त से रञ्ज थी इसलिये राजगृही अपने कब्जे में कर लेना हमलोगों को बहुत ही सहज हुआ, अब उन्हीं दो सौ आदमियों के साथ पन्नालाल को वहां छोड़ आया हूं ॥

बद्री० । आप यहां का हाल तो कहिये, सुना है यहां बड़े बड़े बेढब मामले हो गये हैं ?

इन्द्र० । यहां का हाल तो भैरोसिंह की ज़ुबानी आपने सुना ही होगा इसके बाद आज रात को एक अजीब बात होगई है ॥

तारासिंह ने रात का कुल हाल उन लोगों से कहा जिसे सुन वे लोग बहुत ही तरद्दुद में पड़ गये ॥

इन लोगों की बातचीत होही रही थी कि एक चोबदार ने आकर अर्ज किया कि अखण्डनाथ बाबाजी बाहर खड़े हैं यहां आया चाहते हैं । अखण्डनाथ का नाम सुन ये लोग सोचने लगे कि कौन हैं और कहां से आये हैं ! आखिर इन्द्रजीतसिंह ने उन्हें अपने पास बुलाया और सूरत देखते ही पहिचान लिया ॥

पाठक ! ये अखण्डनाथ बाबाजी वही हैं जो रामशिला पहाड़ी के सामने फल्गू के बीच भयानक टीले पर रहते थे, जिनके पास माधवी आती थी, जिन्होंने उस समय किशोरी की जान बचाई थी जब खण्डहर में उसकी छाती पर सवार हो भीमसेन खञ्जर उसके

कलेजे में भोंका ही चाहता था और जिसका हाल ऊपर के तीसरे बयान में हम लिख आये हैं। बाबाजी के तारासिंह भी पहिचानते थे क्योंकि कल रात को यह भी इन्द्रजीतसिंह के साथ ही थे॥

इन्द्रजीतसिंह ने उठ कर बाबाजी को प्रणाम किया, इनको उठते देख और सब लोग भी उठ खड़े हुए, कुमार ने अपने पास बाबाजी को बैठाया और ऐयारों की तरफ देख के कहा, "इन्हीं का हाल मैं कह चुका हूं, इन्हीं ही ने उस खण्डहर में किशोरी की जान बचाई थी॥"

बाबा०। जान बचाने वाला तो ईश्वर है मैं क्या कर सकता हूं, यह तो कहिये उस मामले के बाद का भी आपको खबर है कि क्या हुआ?

इन्द्रजीत०। कुछ भी नहीं हमलोग इसी सोच में पड़े हैं॥

बाबा०। अच्छा हम से सुनिये। दो औरतें और जो उस मकान में थीं उनका हाल तो मुझे मालूम नहीं कि किशोरी की खोज में कहां गईं, मगर किशोरी का हाल मैं खूब जानता हूं॥

बाबाजी की बातों ने सभों का दिल अपनी तरफ खैंच लिया और सब लोग एकाग्र हो उनकी बातें सुनने लगे। बाबाजी ने यों कहना शुरू किया :—

"नाहरसिंह से जब कुमार लड़ रहे थे उस समय भीमसेन के साथियों को जो उसी जगह छिपे हुए थे, मौका मिला और वे लोग किशोरी को ले कर शिवदत्तगढ़ की तरफ भागे मगर ले जा न सके क्योंकि रास्ते ही में रोहतासगढ़ * के राजा के ऐयार लोग छिपे हुए

* रोहतासगढ़ बिहार के इलाके में मशहूर मोकाम है, यह एक किला पहाड़ के ऊपर है, उस जमाने में किले की लम्बाई चौड़ाई लग भग दस कोस की होगी, बड़े बड़े राजा लोग भी इसके फतह करने

थे उन लोगों ने लड़ भिड़ कर किशोरी को छीन लिया और रोहतासगढ़ ले गये। किशोरी की खूबसूरती का हाल सुनकर रोहतासगढ़ के राजा ने इरादा कर लिया था कि अपने लड़के के साथ उसे ब्याहेगा और बहुत दिन से उसके ऐयार लोग किशोरी की धुन में लगे हुए थे अब मौका पा कर वे लोग अपना काम कर गए, अगर आपलोग जल्द उसके छुड़ाने की फिक्र न करेंगे तो किशोरी के बचने की उम्मीद जाती रहेगी। लड़ भिड़ कर रोहतासगढ़ के किले का फतह करना बहुत ही मुश्किल है, चाहे फौज और दौलत में आप लोग बढ़ के क्यों न हों मगर पहाड़ के ऊपर उस आलीशान किले के अन्दर घुसना बड़ा ही कठिन है। जो हो आप लोग हिम्मत न हारें, किशोरी का खयाल चाहे न भी हो मगर यह सोच कर कि आपके समीप यह मजबूत किला आप ही के योग्य है जरूर मेहनत करना चाहिये, ईश्वर आपको विजय देगा, जहां तक हो सकेगा मैं भी आप की मदद करूंगा॥"

बाबाजी की जुबानी हाल सुन कर कुंअर इन्द्रजीतसिंह बहुत प्रसन्न हुए, एक तो किशोरी के पता लगने की खुशी दूसरे रोहतासगढ़ के राजा से बड़ी भारी लड़ाई लड़ कर जवानी का हौसला निकालने और मशहूर किले पर अपना दखल जमाने की खुशी से गद्गद होगये और जोश भरी आवाज में बाबाजी से बोले :—

इन्द्रजीत०। बड़े बड़े वीरों की आत्माएं स्वर्ग से झांक कर देखेंगी कि रोहतासगढ़ की लड़ाई कैसी होती है और किस तरह हमलोग उस किले को फतह करते हैं, रोहतासगढ़ का हाल हम बखूबी जानते

का हौसला नहीं कर सकते थे, आज कल वह इमारत बिलकुल टूट फूट गई है तो भी देखने योग्य है॥

हैं, मगर बिना कोई सबब हाथ लगे इरादा नहीं कर सकते थे ॥

बाबा०। अच्छा एक लोटा जल मंगाइये ॥

तुरत जल आया, बाबाजी ने अपनी दाढ़ी नोच कर फेंक दी और मुंह धो डाला। अब तो सभों ने पहिचान लिया कि ये देवीसिंह हैं ॥

पाठक ! रामशिला पहाड़ी के सामने भयानक टीले पर रहने वाले बाबाजी से देवीसिंह का मिलना आप भूले न होंगे, यह भी याद होगा जो देवीसिंह ने बाबाजी से कहा था कि "कल इस स्थान को हम छोड़ देंगे।" बस बाबाजी के जाने बाद देवीसिंह ही उनकी सूरत से उस गद्दी पर जा बिराजे और जो कुछ काम किया आप जानते ही हैं। उस दिन बाबाजी की सूरत में देवीसिंह ही थे जिस दिन माधवी ने मिल कर कहा था कि "हमारी मदद के लिये भीमसेन आ गया है।" असल बाबाजी भी उस पहाड़ी पर देवीसिंह से मिल चुके हैं जहां हमने लिखा है कि एक ही सूरत के दो बाबाजी इकट्ठे हुए हैं और उन्हीं बाबाजी की जुबानी रोहतासगढ़ का मामला देवीसिंह ने सुना था ॥

देवीसिंह ने अपना बिल्कुल हाल दोनों कुमारों से कहा और आखिर में बोले कि अब रोहतासगढ़ पर हम लोग जरूर चढ़ाई करेंगे ॥

इन्द्र०। बहुत अच्छी बात है हम लोगों का हौसला तभी दिखाई देगा। हां यह तो कहिये कि नाहरसिंह से कैसा बर्ताव किया जाय ?

देवी०। कौन नाहरसिंह ?

इन्द्रजीत०। उस खण्डहर में जो मुझसे लड़ा था। बड़ा ही बहादुर है, उसने प्रण किया था कि जो मुझसे जीतेगा मैं उसका ताबेदार हो जाऊंगा अब उसने भीमसेन का साथ छोड़ दिया और हम लोगों के साथ रहने को तैयार है ॥

देवी०। ऐसे बहादुर पर जरूर मेहरबानी करनी चाहिये मगर

आज हम उसे आजमावेंगे । आप उसके लिये एक मकान दे दें और हर तरह से आराम का बन्दोबस्त कर दें ॥

इन्द्रजीत० । बहुत अच्छा ॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने उसी समय नाहरसिंह को अपने पास बुलवाया और बड़ी मेहरबानी के साथ पेश आये, एक मकान दे कर अपने सेनापति की पदवी उसे दी और भीमसेन को कैद में रखने का हुक्म दे दिया ॥

अपने ऊपर कुमार की इतनी मेहरबानी देख कर नाहरसिंह बहुत प्रसन्न हुआ और सलाम करके अपने ठिकाने चला गया और सेनापति के काम को ईमानदारी के साथ पूरा करने का उद्योग करने लगा ॥

आधी रात जा चुकी है, चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, गलियों और सड़कों पर चौकीदारों के "जागते रहियो, होशियार रहियो ।" पुकारने की आवाज़ आ रही है । नाहरसिंह अपने मकान में पलङ्ग पर लेटा हुआ कोई किताब देख रहा है और सिर्हाने शमादान जल रहा है ॥

नाहरसिंह के हाथ में श्रुति, स्मृति, वा पुरान की कोई पुस्तक नहीं है, उसके हाथ में तस्वीरों की एक किताब है जिसके पन्ने वह उलटता है और एक एक तस्वीर को देर तक बड़े गौर से देखता है । इन तस्वीरों में बड़े बड़े राजाओं और बहादुरों की मशहूर मशहूर लड़ाइयों का नक्शा दिखाया है और पहलवानों की बहादुरी और दिलावरों की दिलावरी का खाका उतारा हुआ है जिसे देख बहादुर नाहरसिंह की रगें जोश मारतो हैं और वह चाहता है कि ऐसी लड़ाइयों में हमें भी कभी हौसला निकालने का मौका मिले ॥

तस्वीरें देखते देखते बहुत देर हो गई, नाहरसिंह की नींद भरी

आंखें भी बन्द होने लगीं, आखिर उसने किताब बन्द करके एक तरफ रख दी और थोड़ी ही देर में गहरी नींद सो गया ॥

इस मकान के किसी कोने में एक आदमी न मालूम कब का छिपा हुआ था जो नाहरसिंह को सोता जान उस कमरे में चला आया और पलङ्ग के पास खड़ा हो उसे गौर से देखने लगा। इस आदमी को हम नहीं पहिचानते क्योंकि मुंह पर नकाब डाले हुए है। थोड़ी देर बाद अपने जेब से उसने एक पुड़िया निकाली और चुटकी बुकनी की नाहरसिंह के नाक के पास ले गया, सांस के साथ धूड़ा दिमाग में पहुंचते ही वह एक छींक मार कर बेहोश हो गया ॥

उस आदमी ने अपने कमर से एक रस्सी खोली और नाहरसिंह के हाथ पैर खूब मजबूती से बांध कर उसे होशियार किया और तलवार खैंच मुंह पर से नकाब हटा सामने खड़ा होगया। होश में आते ही नाहरसिंह ने अपने को बेबस और हाथ में नङ्गी तलवार लिये महाराज शिवदत्त को सामने मौजूद पाया ॥

शिव०। क्यों नाहरसिंह! एक नाजुक समय में हमारे लड़के का साथ छोड़ देना और उसे दुश्मनों के हाथ में फँसा देना क्या तुम्हें मुनासिब था?

नाहर०। जब तक बहादुर इन्द्रजीतसिंह ने मुझ पर फतह नहीं पाई तब तक मैं बराबर तुम्हारे लड़के का साथी रहा, जब कुमार ने मुझे जीत लिया तो अपने कौल के मुताबिक उनकी ताबेदारी कबूल कर ली, मेरे कौल को तो तुम भी जानते ही थे ॥

शिव०। जोकुछ तुमने किया उसकी सजा देने के लिये इस समय मैं मौजूद हूं ॥

नाहर०। खैर ईश्वर की मर्जी ॥

शिव०। अब भी अगर तुम हमारा साथ देना मंजूर करो तो

छोड़ देता हूं ॥

नाहर०। यह नहीं हो सकता, ऐसे बहादुर का साथ छोड़ तुम्हारे ऐसे बेईमान का सङ्ग करना मुझे मंजूर नहीं ॥

शिव०। (डपट कर और तलवार उठा कर) क्या तुम्हें अपनी जान देना मंजूर है ?

नाहर०। खुशी से मंजूर है मगर मालिक का सङ्ग छोड़ना कबूल नहीं है ॥

शिव०। देखो मैं फिर तुम्हें समझाता हूं, सोचो और मेरा साथ दो ॥

नाहर०। बस, बहुत बकवाद करने की कोई जरूरत नहीं जो कुछ तुम कर सको कर लो, मैं ऐसी बातें नहीं सुनना चाहता ॥

शिवदत्त ने बहुत कुछ समझाया और डराया धमकाया मगर बहादुर नाहरसिंह की नीयत न बदली, आखिर लाचार होकर शिवदत्त ने अपने हाथ से तलवार दूर फेंक दी और नाहरसिंह की पीठ ठोंक कर बोला :—

"शाबाश बहादुर ! तुम्हारे ऐसे जवांमर्दों का दिल अगर ऐसा न होगा तो किसका होगा ? मैं शिवदत्त नहीं हूं, कुमार का ऐयार देवीसिंह हूं तुम्हें आजमाने के लिये आया था ॥"

इतना कह नाहरसिंह की मुश्कें खोल दीं और वहां से फौरन चले गये। देवीसिंह ने यह हाल दोनों कुमारों से कह कर नाहरसिंह की तारीफ की मगर बहादुर नाहरसिंह ने अपनी जिन्दगी भर इस आजमाने का हाल किसी से न कहा ॥

दूसरे दिन देवीसिंह चुनार चले गये और कह गये कि रोहतासगढ़ की लड़ाई का बन्दोबस्त करके मैं बहुत जल्द आऊंगा ॥

यह जान कर कि किशोरी को रोहतासगढ़ वाले ले गये हैं कुंअर

इन्द्रजीतसिंह की बेचैनी हद्द से ज्यादे बढ़ गई। दम भर के लिये भी आराम करना मुश्किल हो गया, दो ही पहर में सूरत बदल गई, किसी का बुलाना या कुछ पूछना उन्हें जहर सा मालूम पड़ने लगा, इनकी ऐसी हालत देख भैरोसिंह से न रहा गया, निराले में बैठ उन्हें समझाने लगे ॥

इन्द्र०। तुम्हारे समझाने से मेरी हालत किसी तरह बदल नहीं सकती और किशोरी के जान का खतरा जो मुझे लगा हुआ है किसी तरह कम नहीं हो सकता ॥

भैरो०। किशोरी को अगर शिवदत्त गढ़ वाले लेजाते तो बेशक उसके जान का खतरा था, क्योंकि शिवदत्त रञ्ज के मारे बिना उसकी जान लिये न रहता, अब तो वह रोहतासगढ़ के राजा के कब्जे में है और वह अपने लड़के से उसकी शादी किया चाहता है, ऐसी हालत में किशोरी का जानी दुश्मन वह क्योंकर हो सकेगा ॥

इन्द्र०। अगर जबर्दस्ती किशोरी की शादी कर दी गई तब क्या होगा ?

भैरो०। हां अगर ऐसा हो तो जरूर रञ्ज होगा। खैर आप चिन्ता न करिये ईश्वर चाहे तो पांच ही सात दिन में मैं बखेड़ा तै कर देता हूं॥

इन्द्र०। क्या किशोरी को वहां से ले आओगे ?

भैरो०। रोहतासगढ़ के किले में घुस कर किशोरी का निकाल लाना दो तीन दिन का काम नहीं, इसके अतिरिक्त क्या रोहतासगढ़ का किला ऐयारों से खाली होगा ?

इन्द्र०। फिर तुम पांच सात दिन में क्या करोगे ?

भैरो०। कोई काम ऐसा जरूर करूंगा जिससे किशोरी की शादी रुक जायगी ॥

इन्द्र०। वह क्या ?

भैरो० । जिस तरह बनेगा वहां के राज कुमार 'कल्याणसिंह' को पकड़ लाऊंगा, जब हम लोगों का फैसला हो जायगा तब छोड़ दूंगा ॥

इन्द्र० । हां अगर ऐसा करो तो क्या बात है ॥

भैरो० । आप चिन्ता न कीजिये मैं अभी यहां से रवाना होता हूं मगर आप किसी से मेरे जाने का हाल न कहियेगा ॥

इन्द्र० । क्या अकेले जाओगे ?

भैरो० । जी हां ॥

इन्द्र० । कहीं फँस जाओ तो मैं तुम्हारी राह देखता रह जाऊं कोई खबर देने वाला भी नहीं ॥

भैरो० । ऐसी उम्मीद न रखिये ॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह से वादा करके भैरोसिंह रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए, भैरोसिंह का अकेले रोहतासगढ़ जाना इन्द्रजीतसिंह को न भाया उस समय तो भैरोसिंह की जिद्द से चुप हो रहे थे मगर उनके जाने बाद कुमार ने सब हाल पण्डित बद्रीनाथ से कह कर दोस्त की मदद के लिये जाने का हुक्म दिया । हुक्म पाते ही ऐयारी के सामान से लैस हो पण्डित बद्रीनाथ भी रोहतासगढ़ रवाना हुए और रास्ते में भैरोसिंह से जा मिले ॥

दो रोज चलकर ये दोनों आदमी रोहतासगढ़ पहुंचे* और पहाड़

---

* राजा शिवप्रसाद सितारए हिन्द ने अपनी किताब जाम-जहांनुमा में लिखा है कि "आरे से करीब पचहत्तर मील के दक्खिन पश्चिम को झुकता हुआ हजार फीट ऊंचे पहाड़ के ऊपर एक बड़ा मजबूत किला "रोहतासगढ़" जिसका असल नाम "रोहताश्रम" है दस मील मुरब्बः की वसअत में सोन नदी के बांएं किनारे पर उजाड़ पड़ा हुआ है, उस

के ऊपर चढ़ किले में दाखिल हुए। यह बहुत बड़ा किला पहाड़ पर निहायत खूबी का बना हुआ था, इसी के अन्दर शहर बसा हुआ था जो बड़े २ सौदागरों, महाजनों, ब्योपारियों और जवहरियों के कार-बार से अपनी चमक दमक दिखा रहा था। इस शहर की खूबी और सजावट का हाल इस जगह लिखने की कोई जरूरत नहीं मालूम होती और न इतना समय है, हां मौके मौके पर दो चार दफे पढ़ कर इसकी खूबी का हाल पाठक मालूम कर लेंगे। उस किले के अन्दर एक किला और था जिसमें महाराज और उनके आपुस वाले रहा करते थे और लोगों में वह महल के नाम से मशहूर था॥

इस पहाड़ पर छोटे २ झरने और तालाब बहुत हैं, ऊपर जाने के लिये केवल एक ही राह है वह भी बहुत बारीक, उसके चारो तरफ घना जङ्गल इस ढब का है कि जरा भी आदमी चूका और राह भूल कर कई दिन तक भटकने की नौबत आई, दुश्मनों का इस पहाड़ पर चढ़ना बहुत मुश्किल है और वह बारीक राह भी इस लायक नहीं कि पांच सात आदमी बाहर से चढ़ सकें। भेष बदले हुए हमारे

में जाने के वास्ते एकही रास्ता दो कोस की चढ़ाई का तङ्ग सा बना हुआ है बाकी सब तरफ वह पहाड़ जङ्गल और नदियों से ऐसा घिरा हुआ है कि किसी तौर से वहां आदमी का गुजर नहीं हो सकता, उस किले के अन्दर दो मन्दिर अगले जमाने के अभी तक मौजूद हैं बाकी सब इमारतें, महल, बाग और तालाब वगैरह जिनका अब सिर्फ निशान भर रह गया है, मुसलमान बादशाहों के बनाये हुए हैं॥"

(ग्रन्थकर्ता) मगर अकबर के जमाने में, जो "बिहार" का हाल लिखा गया है उससे मालूम होता है कि यह मुकाम मुसलमानी अमल-दारी के पहिले का बना हुआ है॥

दोनों ऐयार रोहतासगढ़ पहुंचे और वहां की रङ्गत देख कर समझ गये कि इस किले को फतह करने में बहुत मुश्किल पड़ेगी ॥

भैरोसिंह और पण्डित बद्रीनाथ मथुरिया चौबे बने हुए रोहतासगढ में घूमने और एक एक चीज को अच्छी तरह देखने लगे । दो पहर के समय एक शिवालय पर पहुंचे जो बहुत ही खूबसूरत और बड़ा बना हुआ था, सभामण्डप इतना बड़ा था कि सौ डेढ़ सौ आदमी अच्छी तरह उसमें बैठ सकते थे । उसके चारो तरफ खुलासा सहन था जिस पर कई ब्राह्मण और पुजेरी बैठे धूप सेंक रहे थे । उन्हीं लोगों के पास जाकर हमारे दोनों ऐयार खड़े होगये और गरज कर बोले, "जै जमुना मैया की ॥"

पुजारियों ने हमारे दोनों चौबों को खातिरदारी से बैठाया और बातचीत करने लगे ॥

एक पु० । कहिये चौबेजी कब आना हुआ ?

बद्री० । बस अभी तो चलेही आते हैं महाराज पहाड़ पर चढ़ते चढ़ते थक गये गला सूख गया कृपा कर सिल लुढ़िया दो तो भङ्ग छने और चित्त ठिकाने हो ॥

पुजे० । लीजिये, सिल लुढ़िया लीजिये, भङ्ग लीजिये, मसाला लीजिये, चीनी लीजिये, खूब भङ्ग छानिये ॥

भैरो० । भङ्ग मसाला तो हमारे पास है आप ब्राह्मणों का क्यों नुक्सान करें ॥

पुजे० । नहीं नहीं हमारा कुछ नहीं है यहां सब चीज महाराज के हुक्म से मौजूद रहती है, ब्राह्मण परदेसी जो कोई आवे सभों को देने का हुक्म है ॥

बद्री० । वाह वाह, तब क्या बात है ! लाइये, महाराज की जयजयकार मनावें ॥

पुजेरी ने इन दोनों को सब सामान दिया और इन दोनों ने भङ्ग बनाई आप भी पी और पुजेरियों को भी पिलाई। दोनों ऐयारों ने बातचीत और मसखरेपन से वहां के पुजेरियों को अपने बस में कर लिया, बड़े पुजेरी बहुत ही प्रसन्न हुए और बोले, "चौबेजी महाराज! बड़े भाग्य से आप लोगों के दर्शन हुए हैं आपलोग दो चार रोज यहां जरूर रहिये, इसी जगह आपको महाराज कुमार से भी मिलावेंगे और आप लोगों को बहुत कुछ दिलावेंगे। हमारे महाराज कुमार बहुत ही हँसमुख, नेक और बुद्धिमान हैं, आप उन्हें देख बहुत प्रसन्न होंगे॥"

बद्री०। बहुत खूब महाराज, जब आप लोगों की इतनी कृपा है तो हम जरूर रहेंगे और आपके महाराज कुमार से भी मिलेंगे, वे यहां कब आते हैं?

पुजे०। प्रातः और सायंकाल दोनों समय यहां आते हैं और इसी मन्दिर में सन्ध्या पूजा करते हैं॥

भैरो०। तब तो आज भी उनके दर्शन होंगे॥

पुजे०। अवश्य॥

यह मन्दिर किले की दीवार के पास ही था, पीछे की तरफ एक छोटी सी लोहे की खिड़की थी जिस राह से लोग किले के बाहर घने जङ्गल में जा सकते थे। पुजारी के हुक्म से भङ्ग पीने के बाद दोनों ऐयार उसी राह से जङ्गल में गये और मैदान हो कर लौट आये। पुजेरी लोग भी उसी राह से जङ्गल मैदान गए॥

सन्ध्या समय महाराज कुमार भी वहां आये और मन्दिर के अन्दर दर्वाजा बन्द करके घण्टे भर से ज्यादे देर तक सन्ध्या पूजा करते रहे, उस समय केवल एक बड़ा पुजेरी उस मन्दिर में तब तक मौजूद रहा जबतक महाराज कुमार नित्य नेम करते रहे। दोनों ऐयारों ने भी महाराज कुमार को अच्छी तरह देखा, पुजेरी जी को

कह दिया था कि आज महाराज कुमार को यह मत कहना कि यहां दो चौबे आये हैं, कल सायंकाल को हम लोगों का सामना कराना॥

दोनों ऐयारों ने रातभर उसी मन्दिर में गुजारा किया। अपने मसखरेपन से पुजेरी महाशय को बहुतही प्रसन्न किया, साथही इसके उन्हें इस बात का विश्वास दिलाया कि इस पहाड़ के नीचे एक बड़े भारी महात्मा आये हुए हैं आपको उनसे जरूर मिलावेंगे हमलोगों पर उनकी बड़ी ही कृपा रहती है॥

सवेरे उठ कर इन दोनों ने फिर भङ्ग घोट कर पी और सभों को पिलाने बाद उसी खिड़की की राह मैदान गये। दोनों ऐयार तो अपनी धुन में थे और महाराज कुमार को यहां से उड़ाने की फिक्र सोच रहे थे, उसी खिड़की की राह से निकल जाने का उन्होंने मौका तजवीजा था इस लिये मैदान जाती समय इस जङ्गल को दोनों आदमी अच्छी तरह देखने लगे कि इधर सीधी सड़क पर निकल जाने का क्योंकर हमलोगों को मौका मिल सकता है। इस काम में उन्होंने दिन भर बिता दिया और रास्ता समझ कर शाम होते होते मन्दिर में लौट आये॥

पुजे०। कहिये चौबेजी महाराज! आप लोग कहां चले गये थे?

बद्री०। अजी महाराज कुछ न पूछो, जरा आगे क्या बढ़ गये बस जहन्नुम में मिल गये, ऐसा रास्ता भूले कि बस हमाराही जी जानता है॥

भैरो०। ईश्वर की कृपा से इस समय लौट आये नहीं तो कोई उम्मीद यहां पहुंचने की न थी॥

पुजे०। राम राम, यह जङ्गल बड़ा ही भयानक है, कई दफे तो हमलोग इसमें भूल गये हैं और दो दो दिन तक भटकते रह गये हैं, आप बेचारे तो नये ठहरे, आइये बैठिये कुछ जलपान कीजिये॥

भैरो०। अजी कहां का खाना कैसा पीना, होश तो ठिकाने ही

नहीं है, बस भङ्ग पीकर खूब सोवेंगे, घूमते २ ऐसा थके कि तमाम बदन चूर चूर होगया, कृपानिधान! आज भी हमलोगों की इत्तला कुमार से न कीजियेगा। हमलोग मिलने लायक नहीं है, इस समय तो खूब गहरी छनेगी॥

पुजे०। खैर ऐसाही सही (हँस कर) आइये बैठिये तो॥

दोनों ऐयारों ने भङ्ग पी और लोगों को भी पिलाई, कुछ देर आराम करने बाद बाजार में घूमने फिरने के लिये गये और अच्छी तरह देख भाल कर लौट आये। सोते समय फिर उसी महात्मा का जिक्र पुजेरी से करने लगे जिनसे मिलाने का वादा कर चुके थे, यहां तक कि पुजेरी जी उनसे मिलने के लिये जल्दी करने लगे और बोले, "यह तो कहिये कल आप उनके दर्शन करावेंगे या नहीं ?"

बद्री०। जरूर, बस कुमार यहां से सन्ध्या पूजा करके लौट जायँ तो चले चलिये, मगर अकेले आपही चलिये नहीं तो महात्मा बड़ा बिगड़ेंगे कि इतने आदमियों को क्यों ले आये। वह जल्दी किसी से मिलने वाले नहीं हैं॥

पुजे०। हमें क्या गरज पड़ी है जो किसी को साथ ले जायँ अकेले आपके साथ चलेंगे॥

भैरो०। बस तभी तो ठीक है॥

दूसरे दिन जब महाराज कुमार सन्ध्या पूजा करके लौट गये तो बद्रीनाथ और भैरोसिंह पुजेरी जी को साथ ले वहां से रवाना हुए और पहाड़ के नीचे उतरने बाद बोले, "बस अब आप यहां बूटी छान लें तब आगे चलें इसी लिये लुढ़िया लेता आया हूं॥"

पुजे०। क्या हर्ज है, बूटी छान लीजिये॥

बद्री०। आपके हिस्से की भी बनाऊं न ?

पुजे०। इस दो पहर के समय क्या बूटी पिलाइयेगा, हमें तो इतनी

आदत न थी आपही लोगों के सबब से दो दिन से खूब पीने में आती है॥

बद्री० । क्या हर्ज है थोड़ी सी पी लीजियेगा ॥

पुजे० । जैसी आपकी मर्जी ॥

हमारे बहादुर ऐयारों ने एक पत्थर की चट्टान पर भङ्ग घोट कर पी और नजर बचा थोड़ीसी बेहोशी की दवा मिला कर पुजेरी जी के पिलाई । थोड़ीही देर में पुजेरी जी महाराज तो चीं बोल गये और गहरी बेहोशी में मस्त हो गये । दोनों ऐयार उन्हें उठा कर लेगये और एक झाड़ी में छिपा आये ॥

बद्री० । अब क्या करना चाहिये ?

भैरो० । आप यहां रहिये मैं उसी तर्कीब से कुमार को उड़ा लाता हूं ॥

बद्री० । अच्छा मैं अपने हाथ से पुजेरी की सूरत तुम्हें बनाता हूं ॥

भैरो० । बनाइये ॥

पुजेरी की सूरत बन बद्रीनाथ को उसी जगह छोड़ भैरोसिंह लैाटे और सन्ध्या होने के पहिलेही मन्दिर में पहुंचे, लोगों ने पूछा, "कहिये पुजेरी जी महात्मा से मुलाकात हुई या नहीं ? अकेले क्यों लैाटे ! चैाबेजी कहां रह गये ?"

नकली पुजेरी ने कहा, "महात्मा से मुलाकात हुई, वाह क्या बात है महात्मा की, वह तो पूरे सिद्ध हैं, दोनों चैाबों को बहुत मानते हैं" उन्हें तो आने न दिया मैं चला आया । अब चैाबे जी कल आवेंगे ॥

समय पर महाराज कुमार भी आ पहुंचे और सन्ध्या करने के लिये मन्दिर के अन्दर घुसे, मामूली तैार पर पुजेरी जी के बदले में नकली पुजेरी अर्थात् भैरोसिंह मन्दिर के अन्दर रहे और कुमार के अन्दर जाने बाद भीतर से किवाड़ बन्द कर लिया । सन्ध्या करने के समय महाराज कुमार के साथ मन्दिर के अन्दर घुस कर पुजेरी

जी क्या क्या किया करते थे यह दोनों ऐयारों ने इनसे बातों बात में पहिले ही दरियाफ़ कर लिया था। पुजेरीजी मन्दिर के अन्दर बैठे कुछ विशेष काम नहीं करते थे, केवल पूजा का सामान कुमार के आगे जमा कर देते थे और एक किनारे बैठ रहते थे। चलती समय प्रसादी में माला कुमार को देते थे और वे उसे सूंघ आंखों से लगा उसी जगह रख चले जाते थे, आज इन सब कामों को ऐयार पुजेरी जी ने पूरा किया॥

इस मन्दिर में चारो तरफ चार दर्वाजे थे, आगे की तरफ तो कई आदमी और पहरे वाले बैठे रहते थे, बाईं तरफ के दर्वाजे पर होम करने का कुंड बना हुआ था, दाहिने दर्वाजे पर कई फूलों के गमले रक्खे हुए थे और पिछला दर्वाजा बिल्कुल सन्नाटा पड़ता था॥

मन्दिर के अन्दर दर्वाजा बन्द करके कुमार सन्ध्या करने लगे प्राणायाम के समय मौका जान कर नकली पुजेरी ने आशीर्वाद देने वाले फूल के माले में बेहोशी का धूड़ा मिलाया, जब कुमार चलने लगे पुजेरीजी ने माला गले में डाली, कुमार ने उसे गले से निकाल सूंघा और माथे से लगा कर उसी जगह रख दिया॥

माला सूंघने के साथही कुमार का सिर घूमा और बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। भैरोसिंह ने झटपट उनकी गठड़ी बांधी और पिछले दर्वाजे की राह बाहर निकल आये, इसके बाद उसी छोटी खिड़की की राह किले के बाहर हो जङ्गल का रास्ता लिया और दो ही घण्टे में उस जगह जा पहुंचे जहां पण्डित बद्रीनाथ को छोड़ गये थे। ये दोनों ऐयार कुमार कल्यानसिंह को ले गयाजी की तरफ रवाना हुए॥



छठवां बयान ।

इश्क भी क्या बुरी बला है । हाय ! इस दुष्ट ने जिसका पीछा किया उसे खराब करके छोड़ दिया, उसके लिये दुनिया भर के अच्छे पदार्थ बेकाम और बुरे बना दिये, छिटकी हुई चांदनी उसके बदन में चिनगारियां पैदा करती है, शाम की ठण्ढा ठण्ढी हवा उसे लू सी लगती है, खुशनुमा फूलों को देखने से उसके कलेजे में कांटे चुभते हैं बाग की रविशों पर टहलने से पैरों में छाले पड़ते हैं, नरम बिछावन पर पड़े रहने से हड्डियां टूटती हैं और वह करवटें बदल बदल कर भी किसी तरह आराम नहीं ले सकता ॥

खाना पीना हराम हो जाता है, मिसरी की डली जहर मालूम होती है, गम खाते खाते पेट भर जाता है, प्यास बुझाने के लिये आंसू की बूंदें बहुत हो जाती हैं, हजार दुःख भोगने पर भी किसी की जुल्फों में उलझी हुई जान को निकल भागने का मौका हाथ नहीं लगता ॥

दोस्तों की नसीहतें जिगर के टुकड़े टुकड़े करती हैं, जुदाई की आग में कलेजा भुन जाता है, बदन का खून पानी हो जाता है, इसी से उसकी भूख प्यास दोनों जाती रहती हैं । जिसकी सूरत उसकी आंखों में खुपी रहती है दरोदीवार में वही दिखाई देता है, स्वप्न में भी अठलाता हुआ वही नजर आता है, उसकी सुनी हुई बातें रात दिन कान में गूंजा करती हैं, हँसी के समय दिखाई दिये हुए मोतियों से दांत गले का हार बन बैठते हैं भुलाए नहीं भूलते, जादू भरी चितवनों की याद दिल को उच्चाट कर देती है, गले में हाथ डाल कर ली हुई अंगड़ाई बदन को दबाये देती है, उसकी याद में एक तरफ झुके हुए कभी सीधे नहीं होने पाते ॥

वे दिन रात आंखें बन्द कर हुस्न के बाग में टहला करते हैं, ठंढी

सांसें आंधी का काम देती हैं, सूखे पत्ते उड़ाया करते हैं और धीरे धीरे आप भी ऐसे सूख जाते हैं कि सांस के साथ ही उड़ जाने की हिम्मत बांधते हैं, मुहब्बत का गुरू चाबुक लिये हरदम पीछे मौजूद रहता है, बुदबुदाते हुए अपने चेले को कहीं ठहरने नहीं देता और माशूक के नाम के सिवाय कोई दूसरा शब्द मुंह से निकलने नहीं देता॥

आदमी क्या हवा तक ऐसों से दिल्लगी करती है केवाड़ खटखटा माशूक के आने की याद दिला दिल में चुटकियां लेती है और कभी कान में झुक कर कहती है कि मैं उस गली से आती हूं जिसमें तेरा प्यारा रहता है॥

बाग में टहलने के समय हवा के चपेटों में पड़ी हुई पेड़ों की टहनियां हिल हिल कर उसे अपने पास बुलाती हैं और जब वह पास जाता है हँसी के दो फूल गिरा कर चुप हो जाती हैं, जिससे उसका दिल और भी बेचैन हो जाता है और दोनों हाथों से कलेजा थाम कर बैठ जाता है। उसके प्यारे रिश्तेदार यह हालत देख अफसोस करते हैं और उसकी नर्म उंगलियों को हाथ में ले पूछते हैं कि क्या अपनी जुल्फें सँवारने के लिये ये नाखून बढ़ा रक्खे हैं?

बेचैनी इतनी बढ़ जाती है कि आधे घण्टे तक के लिये भी ध्यान एक तरफ नहीं जमता और न एक जगह थोड़ी देर तक आराम के साथ बैठने की मोहलत मिलती है, आंखों में छिपी रहने वाली नींद भी न मालूम कहां चली जाती है और अपनी जगह टकटकी को जो दम की दम में तरह तरह की तस्वीरें बनाने और बिगाड़ने वाली है छोड़ जाती है॥

यही हमारे कुंअर इन्द्रजीतसिंह और उनकी प्यारी किशोरी का हाल था। इस समय दोनों एक दूसरे से दूर पड़े हैं मगर मुहब्बत का

भूत रङ्ग बिरङ्ग की सूरत बन दोनों की आंखों में नाचा करता है, बढ़ती हुई उदासी और बेचैनी किसी तरह कम नहीं होती॥

रोहतासगढ़ महल में रहने वाली जितनी औरतें हैं सभों को किशोरी की खातिरदारी का ध्यान रहने पर भी किशोरी की उदासी किसी तरह कम नहीं होती, उसे वहां किसी तरह की तकलीफ नहीं थी मगर कलेजे को टुकड़े टुकड़े करने वाली वह बात एक सायत के लिये भी उसके दिल से नहीं भूलती जो उसने पहिले पीठ पर हाथ फेरते हुए महाराज के मुंह से सुनी थी, अर्थात् "यह तो मेरी ही पतोहू होने लायक है॥"

यों तो ऊंचे दर्जे की औरतों के जिद करने से लाचार हो कर जनानी नजरबाग में किशोरी को टहलना ही पड़ता था मगर वहां की कोई चीज उस बेचारी के जी को ढाढ़स नहीं दे सकती थी। खिले हुए गुलाब के फूल पर नजर पड़ते ही वह मुर्झा जाती, नर्गिस की तरफ देखते ही उसकी शर्मीली आंखें पलकों की चिलमन में छिप जातीं, सरो के पास पहुंचते ही वह गम के बोझ से झुक जाती और खुशनुमा फूलों से भरी हुई पेचीली लतायें उसके सामने पड़ कर इन्द्रजीतसिंह की सँबुली जुल्फों की याद दिलातीं जिसमें उलझी हुई उसकी जान को जीते जी छूटने की उम्मीद न थी॥

रविशों को वह यार की जुदाई का मैदान समझती, छोटे छोटे रँगीले फूलों से भरे हुए पेड़ पौधों की कियारियों को घना जङ्गल जानती और गूंजते हुए भौरों की आवाज उसके कानों में झिल्ली की झनकार मालूम होती जो जङ्गल में बिना मौसिम पर ध्यान दिये बारहों महीने बोला और इत्तफाक से आ पड़े हुए नाजुक बदनों के कलेजे को दहलाया करती है॥

गर्म हवा के झोंकों से हिलती हुई रङ्गबिरङ्ग की खूबसूरत पत्तियों

को देखते ही वह कांप जाती, सुन्दर और साफ मोती सरीखे जल से भरे और बहते हुए बनावटी झरने के पास पहुंचते ही उसका दिल डूब जाता, छूटते हुए फौआरे पर नजर पड़तेही कलेजा मुंह को आता और आंखों से टपाटप आंसू की बूंदें गिरने लगतीं जिसे देख तरह तरह की बोलियों से दिल खुश करने वाली बाग की नाजुक चिड़ियाओं से चुप न रहा जाता और बोल उठतीं कि "हाय हाय! इस बेचारी का दिल किसी की जुदाई में खून होगया और वह खून पानी हो कर आंखों की राह निकला जाता है॥"

उन कुल जवान नाजुक और चञ्चल औरतों को जो किशोरी के साथ रहने पर मुस्तैद की गई थीं उसकी हालत पर अफसोस आता मगर लाचार थीं क्योंकि उन्हें अपनी जान बहुत ही प्यारी थी॥

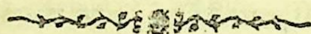
रात के समय जब किशोरी अपने को अकेली पाती तो तरह २ की बातें सोचा करती, कभी तो वह निकल भागने की तर्कीब सोचती मगर अनहोनी जान उधर से खयाल को लौटा कर अपने प्यारे इन्द्रजीतसिंह की तरफ ध्यान लगाती और कहती कि क्या वे मेरी मदद न करेंगे? मुझे यहां से न छुड़ावेंगे? जरूर छुड़ावेंगे मगर कब? जब उन्हें यह खबर होगी कि किशोरी फलानी जगह कैद है। हाय हाय!! कहीं ऐसा न हो कि उनको खबर होते २ तक मुझे यह दुनियां छोड़ देनी पड़े और दिल के अरमान दिलही में ले जाने पड़ें। अगर मेरे साथ जबर्दस्ती की जायगी तो जरूर ऐसा करूंगी और सिवाय उसके जिसके ऊपर न्योछावर हो चुकी हूं दूसरे की न कहलाऊंगी, ऐसी नौबत आने के पहिले ही शरीर छोड़ उनसे आ मिलूंगी, कोई ताकत ऐसी नहीं जो ऐसा करने से मुझे रोक सकें। हे ईश्वर! क्या तू उन आफत के परकाले ऐयारों को यहां का रास्ता न बतावेगा जो कुमार के लिये जान तक दे देने को हरदम मुस्तैद रहते हैं॥

एक रात वह इसी सोच विचार में पड़ी थी कि सवेरा होगया और कमरे के बाहर से एक ऐसी आवाज उसके कान में आई कि वह चौंक पड़ी और उसके फैले हुए खयाल (खयालात) इकट्ठे हो गये और कुछ कुछ खुशी उसके चेहरे पर झलकने लगी। वह आवाज यह थी:—

"यह काम बेशक बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का है ॥"

किशोरी उठ खड़ी हुई और कमरे के बाहर निकलने पर घण्टेही भर में उसे मालूम होगया कि कुंअर कल्यानसिंह को बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग ले भागे ॥

अब किशोरी को अपने छूटने की कुछ कुछ उम्मीद हुई और वह दिन रात इस खयाल में डूबी रहने लगी कि देखें इसके आगे क्या होता है ॥



सातवां बयान ।

आधी रात से ज्यादे जा चुकी है, किशोरी अपने कमरे में मसहरी पर लेटी हुई न मालूम क्या सोच रही है, हां उसकी डबडबाई हुई आंखें तो जरूर इस बात की खबर देती हैं कि उसके दिल में किसी तरह का दर्द है। उसकी आंखों में नींद बिल्कुल नहीं, घड़ी २ करवटें बदलती और लम्बी सांसें लेकर रह जाती है। यकायक कमरे के बाहर से कोई तड़पा देने वाली आवाज उसके कान में आई जिसके सुनते ही वह बेचैन होगई किसी तरह लेटी न रह सकी, पलङ्ग से नीचे उतर पड़ी और दरवाजा खोल बाहर आ इधर उधर देखने लगी। वह आवाज किसी के सिसक सिसक कर रोने की थी ॥

कमरे के बाहर आठ दर का दालान था, एक खम्भे के सहारे खड़ी

बिलक बिलक कर रोती हुई एक कमसिन औरत को किशोरी ने देखा, चरमे और उस औरत पर चांदनी अच्छी तरह पड़ रही थी, पास आने से मालूम हुआ कि सर्दी से यह औरत कांप भी रही है क्योंकि कोई भारी कपड़ा उसके बदन पर न था जिससे सर्दी का बचाव होता ॥

किशोरी का दिल तो पहिले ही से जख्मी हो रहा था वह इस तरह से बिलक बिलक कर किसी को रोते कब देख सकती थी जाते ही उस औरत का हाथ थाम लिया और पूछा:—

"तुझ पर क्या आफत आई है जो इस तरह बिलक बिलक कर रो रही है?"

औरत०। हाय! मेरे ऊपर वह आफत आई है जो किसी तरह टल नहीं सकती!!

किशोरी उसे अपने कमरे में ले आई और अपने पास फर्श पर बैठा कर बातचीत करने लगी। इस औरत की उम्र अठारह वर्ष से ज्यादे न होगी, यह हर तरह से खूबसूरत और नाज़ुक थी, इसके बदन में जो कुछ जेवर था उसके देखने से साफ मालूम होता था कि यह जरूर किसी बड़े खानदान की लड़की है ॥

किशोरी०। मैं उम्मीद करती हूं कि अपने दिल का हाल साफ साफ मुझसे कहोगी और मुझे बहिन समझ कर कुछ न छिपाओगी॥

औरत०। बहिन! मैं जरूर अपना हाल तुमसे कहूंगी क्योंकि तुम भी उसी बला में फँसी हो जिसमें मैं॥

किशोरी०। (चौंक कर) क्या मेरी ही तरह से तुझ पर भी जुल्म किया गया है?

औरत०। बेशक॥

किशोरी०। (लम्बी सांस लेकर) हे ईश्वर! मैंने तो किसी के

साथ बुराई नहीं की थी, फिर क्यों यह दुःख भोग रही हूं ॥

औरत० । मैं अब इस जगह ठहर नहीं सकती ॥

किशो०। सो क्यों ! क्या किसी तरह का खौफ मालूम होता है ?

औरत०। नहीं नहीं, डर किसी बात का नहीं है, इस समय मुझे किसी की मदद से निकल भागने की उम्मीद है, इसी लिये अपने कमरे से निकल कर यहां तक आई थी ॥

किशोरी० । क्या कोई तर्कीब निकाली गई है ?

औरत० । हां, अगर चाहो तो तुम भी मेरे साथ यहां से भाग सकती हो । इसी राज्य का एक जबर्दस्त आदमी आज हमारी मदद करेगा ॥

यह सुन कर किशोरी बहुत ही खुश हुई । वह औरत कौन है ? उसका नाम क्या है ? उस पर क्या दुःख आ पड़ा है ? यह सब पूछना तो बिल्कुल भूल गई और निकल भागने की खुशी में उस औरत का हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर प्रेम से उसकी तरफ देख पूछने लगी, "क्या तुम्हारी मदद से मेरा भी छुटकारा यहां से हो सकता है ?"

औरत० । जरूर हो सकता है मगर अब देर न करना चाहिये ॥

इसके जवाब में किशोरी कुछ कहा ही चाहती थी कि सामने का दरवाजा खुला और एक हसीन औरत अन्दर आती हुई दिखाई पड़ी । इसकी अवस्था लगभग बीस वर्ष के होगी, सुपेद गेहूं का सा रङ्ग, कद लम्बा न नाटा, बदन साफ और सुडौल, नमकीन चेहरा, रस भरी आंखें, नाक में एक हीरे की कील के इलावे दो चार मामूली गहने पहिरे हुए थी, तौ भी वह इस लायक थी कि ऊंचे दर्जे की खूबसूरतों की पंक्ति में बैठ सके । इसे देखते ही वह औरत जो किशोरी के पास बैठी हुई थी चौंकी और उसकी तरफ देख कर बोली:--

लाली ! इस समय तुम्हारा यहां आना मुझे ताज्जुब में डालता है !!

लाली०। यह सुनकर तुम्हें और भी ताज्जुब होगा कि मैं तुम्हारे पञ्जे से बेचारी किशोरी की जान बचाने के लिये आई हूं॥

इतना सुनते ही उस औरत का रङ्ग ढङ्ग बिल्कुल बदल गया, उसके चेहरे पर जो उदासी अभी तक छाई हुई थी बिल्कुल जाती रही और तमतमाहट आ मौजूद हुई, उसकी आंखें जो अभी तक डब-डबाई हुई थीं खुश्क हो गईं और उनमें गुस्से की सुर्खी दिखाई देने लगी, वह इस निगाह से लाली को देखने लगी जैसे उस पर किसी तरह की हुकूमत रखती हो॥

लाली को किशोरी भी पहिचानती थी, क्योंकि यह उन हसीनों में से थी जो किशोरी के दिल बहलाने और उसकी हिफाजत करने के लिये तैनात की गई थीं॥

हुकूमत भरी निगाहों से कई सायत तक लाली की तरफ देखने बाद वह औरत फिर बोली:—

लाली! क्या आज तू पागल होगई है जो मेरे सामने इस तरह से बेअदब हो कर बोलती है?

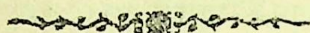
लाली०। तू है कौन जो तेरे साथ अदब का बर्ताव करूँ॥

औरत०। (खड़ी हो कर) तू नहीं जानती कि मैं कौन हूं?

लाली०। कुन्दन! मैं खूब जानती हूं, मगर तुझे यह नहीं मालूम कि तेरी नकेल मेरे हाथ में है जिससे तू मेरा कुछ भी नहीं कर सकती और अपनी बेईमानी का जाल बेचारी किशोरी पर नहीं फैला सकती॥

इतना सुनतेही वह औरत जिसका नाम कुन्दन था लाल होगई और अपने जोश को किसी तरह सम्हाल न सकी, छुरा जो कमर में छिपाये हुए थी हाथ में ले लिया और मारने के लिये लाली की तरफ झपटी। लाली ने झट अपने बगल से एक नारङ्गी निकाल कर उसे दिखाई और पूछा, "क्या तू भूल गई कि इसमें के फाड़ियां हैं?"

नारङ्गी देखने के साथही और लाली के मुंह से निकले हुए उन शब्दों को सुनते ही उसका जोश जाता रहा, खौफ और घबरहट से उसका रङ्ग बिल्कुल उड़ गया और वह एक चीख मार कर जमीन पर गिर पड़ी ॥



आठवां बयान ।

रोहतासगढ़ किले के सामने पहाड़ी से कुछ दूर हट कर वीरेन्द्रसिंह का लश्कर पड़ा हुआ है, चारो तरफ फौजी आदमी अपने २ काम में लगे हुए दिखाई देते हैं, कुछ फौज आ चुकी है और बराबर चलीही आती है, बीच में राजा वीरेन्द्रसिंह का कारचोबी खेमा शानशौकत के साथ खड़ा है, उसके दोनों बगल कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का खेमा है, सामने और पीछे की तरफ दुपट्टी बड़े बड़े सर्दारों और बहादुरों का डेरा खड़ा है, बाजार लगने की तैयारियां हो रही हैं, लड़ाई का सामान इतना इकट्ठा हो रहा है कि देखने से दुश्मनों का कलेजा दहल जाय । डेरा खड़ा होने के दूसरे दिन कुंअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, पण्डित बद्रीनाथ, भैरोसिंह, तारासिंह, जगन्नाथ ज्योतिषी, फतहसिंह (पुराने सेनापति जो नौगढ़ में थे) और नाहरसिंह इत्यादि को साथ लिये राजा वीरेन्द्रसिंह भी आ पहुंचे और वे लोग अपने २ खेमे में उतरे । पन्नालाल गयाजी में और रामनारायण और चुन्नीलाल चुनारगढ़ में रक्खे गये । इस लड़ाई के लिये सेनापति की पदवी नाहरसिंह को दी गई है । तीसरे दिन और भी फौज आ जाने पर पांच झंडे पचास हजार फौज का निशान खड़ा किया गया, बहादुरों के चेहरे पर खुशी की सुर्खी मालूम होती थी, सब इसी फिक्र में थे कि जहां तक हो लड़ाई जल्द

छिड़ जाय और बेशक एकही दो दिन में लड़ाई छिड़ जाने की उम्मीद थी मगर बीरेन्द्रसिंह के लश्कर पर यकायक ऐसी आफत आ पड़ी कि कई दिनों तक लड़ाई रुकी रही। इस आफत के आने का किसी को स्वप्न में भी गुमान न था जिसका हाल हम आगे चल कर लिखेंगे॥

राजा दिग्विजयसिंह का पत्र ले कर उनका एक ऐयार बीरेन्द्रसिंह के पास आया, बीरेन्द्रसिंह ने पत्र ले कर मुन्शी को पढ़ने के लिये दिया, उसमें जो कुछ लिखा था उसका सँक्षेप यह है :—

"हमसे आपसे कभी की दुश्मनी नहीं, न मालूम आपुस में लड़ने या बिगाड़ पैदा करने का इरादा आपने क्यों किया! खैर इसका सबब जो कुछ हो हम नहीं कह सकते मगर इतना याद रखना चाहिये कि पचास वर्ष लड़ कर भी यह किला आप हमसे नहीं ले सकते, हम चुपचाप बैठे रहें तो भी आप हमारा कुछ नहीं कर सकते, खैर हम आपसे लड़ेंगे और मैदान में निकल कर बहादुरी दिखावेंगे, अगर आपको अपनी बहादुरी या जवांमर्दी का घमण्ड है तो फौज की जान क्यों लेते हैं एक पर एक लड़ के फैसला कर लीजिये। बहादुरों की कार्रवाई देखने बाद हमसे और आपसे द्वन्दयुद्ध होजाय, आप हम पर फतह पाइये तो यह राज्य आपका होजाय, नहीं तो आप हमारे मात-हत समझे जायँ। अफसोस! इस समय हमारा लड़का मौजूद नहीं है अगर होता तो आपके दोनों लड़कों से वह अकेला ही भिड़ जाता॥"

इस पत्रके जवाब में जो कुछ बीरेन्द्रसिंह ने लिखा हम उसका भी सँक्षेप नीचे लिख देते हैं :—

"आप हमारे राज्य में घुसकर किशोरी को ले गये क्या यह आपकी जबर्दस्ती नहीं है? क्या इसे लड़ाई की बुनियाद कायम करना नहीं कह सकते? हां अगर आप किशोरी को इज्जत के साथ हमारे

पास भेज दें तो हम बेशक अपने घर लौट जायेंगे नहीं तो याद रहे हम इस किले की एक एक ईंट उखाड़ कर फेंक देंगे जिसकी मजबूती पर आप घमण्ड करते हैं। हमलोग द्वन्दयुद्ध करने के लिये भी तैयार हैं, जिसका जी चाहे एक पर एक लड़ के हौसला निकाल ले। आपका लड़का मेरे यहां कैद है, यदि आप किशोरी को मेरे पास भेज दें तो हम उसे छोड़ देने के लिये तैयार हैं॥"

इस पत्र के जवाब में रोहतासगढ़ के किले से तोप की एक आवाज आई। अब लड़ाई में किसी तरह का शक न रहा, दोनों तरफ के ऐयार अपनी अपनी कार्रवाई दिखाने पर मुस्तैद हो गये और उन लोगों ने जो कुछ किया उसका हाल आगे चल कर मालूम होगा॥

रोहतासगढ़ किले के अन्दर राजमहल की अटारियों पर चढ़ी हुई बहुत सी औरतें उस तरफ देख रही हैं जिधर बीरेन्द्रसिंह का लश्कर पड़ा हुआ है। कुंअर कल्यानसिंह के गिरफ़ार हो जाने से किशोरी को एक तरह की निश्चिन्ती होगई थी क्योंकि ज्यादे डर उसे अपनी शादी उसके साथ हो जाने का था, अपने मरने की उसे जरा भी परवाह न थी। हां कुंअर इन्द्रजीतसिंह की याद वह एक सायत के लिये भी नहीं भुला सकती थी जिनकी तस्वीर उसके कलेजे में खिची हुई थी। बीरेन्द्रसिंह की लड़ाई का हाल सुन उसे बड़ी खुशी हुई और वह भी अपनी अटारी पर चढ़ कर हसरत भरी निगाहों से उस तरफ देखने लगी जिधर बीरेन्द्रसिंह की फौज पड़ी हुई थी, वह फौज चाहे यहां से दूर हो तौ भी किशोरी की निगाहें वहां तक पहुंच और भीड़ में घुस घुस कर किसी को ढूंढ़ निकालने की कोशिश कर रही थीं। इस समय किशोरी के साथ वही लाली थी, जिसने आज कई दिन हुए किशोरी के कमरे में कुन्दन को नारङ्गी दिखा कर डरा दिया था॥

लाली किशोरी की निगहबानी पर रक्खी गई थी तौ भी वह किशोरी पर मेहरबानी रखती थी। किशोरी ने नारङ्गी वाले भेद को जानने की कई दफे कोशिश की मगर पता न लगा, उस दिन के बाद कई दफे कुन्दन से भी मुलाकात हुई मगर पूछने पर उसने ऐसी कोई बात न कही जिससे किशोरी का शक दूर हो जाता। नित्य एक घर में रहने पर भी लाली और कुन्दन में फिर किसी तरह की दुश्मनी दिखाई न पड़ी, इस बात ने किशोरी के ताज्जुब को और भी बढ़ा रक्खा था॥

इस समय किशोरी के साथ सिवाय लाली के दूसरी कोई औरत न थी, ये दोनों बीरेन्द्रसिंह के लश्कर की तरफ बड़े गौर से देख रही थीं कि किशोरी को फिर वही नारङ्गी वाली बात याद आई और थोड़ी देर तक सोचने के बाद लाली से पूछने लगी:—

किशो०। लाली! उस दिन की बात जब मैं याद करती हूं और उसपर बिचार करती हूं तो कुन्दन की दगाबाजी साफ झलक जाती है, कुन्दन अगर सच्ची होती तो तुमको मारने के लिये न झपटती या हकीकत में अगर वह उस समय यहां से भाग जाने वाली होती तो उसके काम में विघ्न पड़ जाने से उसे रञ्ज होता सो उसके बदले में वह खुश दिखाई देती है॥

लाली०। नहीं वह एकदम से झूठी नहीं है॥

किशोरी०। क्या उसकी बातों का कोई हिस्सा सच भी था?

लाली०। जरूर था॥

किशोरी०। वह क्या?

लाली०। यही कि वह भी इस किले में उसी काम के लिये लाई गई है जिस काम के लिये आप लाई गई हैं॥

किशोरी०। तुम्हारे राजकुमार के साथ व्याहने के लिये?

लाली०। हां॥

किशो०। अच्छा उसकी और कौनसी बात सच थी?

लाली०। इन सब बातों को पूछ कर क्या करोगी इस भेद के खुलने पर बहुत बड़ी बुराई पैदा होगी॥

किशो०। नहीं नहीं मेरी प्यारी लाली! मेरी जुबान से वह बात कोई दूसरा कभी नहीं सुन सकता, मैं उम्मीद करती हूं कि तुम मुझसे उसका हाल साफ साफ कह दोगी, उस दिन से मुझे विश्वास हो गया कि तुम मेरी दर्दशरीक हो, अगर मेरा ख्याल ठीक है तो तुम उसका हाल मुझे जरूर बता दो जिसमें मैं हरदम उससे होशियार रहूं॥

लाली०। अब वह तुम्हारे साथ बुराई कभी न करेगी॥

किशोरी०। तौभी मेहरबानी करके........

लाली०। खैर बता देती हूं मगर खबरदार इसका जिक्र किसी दूसरे के सामने मत करना॥

किशोरी०। ऐसा तो मैं कदापि नहीं कर सकती और तुम खुद जानती हो कि इस महल में सिवाय तुम्हारे कोई भी ऐसा नहीं है कि जिससे मैं दो बातें करती होऊं॥

लाली०। अच्छा तो सिवाय उस बात के जो मैं ऊपर कह चुकी हूं बाकी कुल बातें उसकी झूठ थीं। वह इस मकान से भागा नहीं चाहती थी, वह तो हमारे कुमार के साथ व्याह होने की उम्मीद में खुश है मगर जिस दिन से तुम आई हो उस दिन से वह फिक्र में पड़ गई है, वह खूबसूरती और इज्जत में तुमको अपने से बहुत बढ़के समझती है और हकीकत में ऐसा है भी। उसे यह खयाल सता रहा है कि राजकुमार से पहिले किशोरी की शादी होलेगी तब मेरी होगी और ऐसी अवस्था में किशोरी बड़ी रानी कहलावेगी और उसी के लड़के गद्दी के मालिक समझे जायँगे, इसी से वह इस फिक्र में थी

कि तुम्हें मारडाले मगर किसी ऐसे ठिकाने पर लेजा कर जिसे उसपर कोई शक न कर सके ॥

किशो० । छिः छिः !!

लाली० । मगर अब वह तुम्हारे साथ बुराई नहीं कर सकती ॥

किशो० । और वह नारङ्गी वाला भेद क्या है ?

लाली० । वह मैं नहीं कह सकती, तुम उसी से क्यों नहीं पूछतीं अब तो वह हरदम तुम्हारी खुशामद किया करती है ॥

किशोरी० । मैं उससे पूछ चुकी हूं ॥

लाली० । उसने क्या कहा ?

किशो० । उसने कहा कि लाली ने नारङ्गी दिखा कर यह नसी-हत की कि देखो इसमें कई फांकें हैं मगर एक साथ रहने और छिलके से ढके होने के कारण एक ही गिनी जाती है कोई कह नहीं सकता कि इसमें के फांकें हैं, इसी तरह हम लोगों को भी रहना चाहिये ॥

लाली० । ठीक तो कहा ॥

किशो० । वाह वाह तुमने भी उसी का साथ दिया, एकदम छोकड़ी बना कर भुलावा देने लगीं !!

लाली० । (हँस कर) खैर घबराओ मत सब मालूम हो जायगा ॥

इतने में सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने की आहट मालूम हुई, दोनों उस तरफ देखने लगीं, कुन्दन ने पहुंच कर दोनों को सलाम किया और हँसी २ में लाली की तरफ देख कर बोली, "एक आदमी तुम्हें खोजता हुआ यहां आया है, वह कहता है कि लाली ने मेरी किताब चुराई है, वह किताब जो किसी के खून से लिखी गई है ॥"

कुन्दन के इन शब्दों में न मालूम क्या भेद भरा हुआ था कि सुनते ही लाली के चेहरे का रङ्ग उड़ गया, खौफ के मारे उसके तमाम बदन में कपकपी पैदा होगई और मालूम होता था कि किसी ने इसके

तमाम बदन का खून खैंच लिया है, थोड़ी देर तक वह अपने हवास में न रही अन्त में उसने हाथ जोड़ के कुन्दन से कहा :—

लाली०। कुन्दन! मुझे माफ कर, मुझसे बड़ी भूल हुई, मुझ पर रहम खा, मैं तमाम उम्र तेरी लौंड़ी होकर रहूंगी ॥

कुन्दन०। क्या गुलामी की दस्तावेज मेरी आंचल पर लिखदेगी?

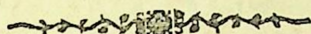
कुन्दन के इस दूसरे जुमले ने तो लाली को एकदम बदहवास कर दिया, अबकी दफे वह अपने को किसी तरह न सम्हाल सकी, उसका सर घूमने लगा और वह चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ी ॥

लाली का यह हाल, देख कुन्दन चुपचाप वहां से चली गई, उसकी सूरत से मालूम होता था कि वह अपनी कार्रवाई पर खुश है या उसने लाली के ऊपर अपनी हुकूमत पैदा कर ली है, उसका मुंह सिकोड़ कर सर हिलाना कहे देता था कि वह लाली पर कुछ और भी जुल्म किया चाहती है ॥

बेचारी किशोरी का अजब हाल था। नारङ्गी वाला भेद जानने के लिये वह पहिले ही परेशान थी अब इस दूसरे भेद ने और भी कलेजा ऐंठ दिया, उसने बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाला और लाली को उसी तरह छोड़ छत के नीचे उतर आई और अपने कमरे में से एक गिलास जल का लाकर लाली के मुंह पर छींटा दिया। थोड़ी देर में लाली होश में आई और बिना कुछ बात किये रोती हुई अपने रहने की जगह चली गई और किशोरी भी अपने कमरे की तरफ रवाना हुई ॥

जिस कमरे में किशोरी रहती थी वह एक खुशनुमा बाग के बीचोबीच में था, इस बाग के चारो कोनों में छोटी २ चार इमारतें और भी थीं, एक में वे कुल औरतें रहती थीं जो किशोरी की हिफाजत के लिये मुकर्रर की गई थीं, उन कुल औरतों की अफसर लाली

थी। दूसरे मकान में दो तीन लौंडियों के साथ लाली रहती थी। तीसरा मकान अमीराना ठाठ से रहने के लिये कुन्दन को मिला हुआ था, चौथे मकान में जो सब से छोटा था ताला बन्द था मगर बारी बारी से कई औरतें नङ्गी तलवार लिये उसके दर्वाजे पर पहरा दिया करती थीं। यह बाग जनाने महल के बीचोबीच में था, किसी गैर का यहां आना या यहां से किसी का निकल भागना बड़ाही मुश्किल था॥



नौवां बयान।

आधी रात का समय है चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। कुंअर बीरेन्द्रसिंह के लश्कर में पहरा देने वालों के सिवाय सभी आराम की नींद सोये हुए हैं, हां थोड़े से फौजी आदमियों का सोना कुछ विचित्र ही ढङ्ग का है जिन्हें न तो जागा ही कह सकते हैं और न सोने वालों ही में गिन सकते हैं क्योंकि वे लोग जो गिनती में एक हजार से ज्यादे न होंगे लड़ाई की पोशाक पहिरे और डरे हर्बे बदन पर लगाये लेटे हुए हैं, जाड़े का मौसिम है मगर कोई ऐसा कपड़ा जो बखूबी सरदी को दूर कर सके ओढ़े हुए नहीं हैं। इसलिये तेज हवा के साथ मिली हुई सरदी उन्हें नींद में मस्त होने नहीं देती॥

राजा बीरेन्द्रसिंह के खेमे की चौकसी फतहसिंह कर रहे हैं, खुद तो दर्वाजे के आगे एक चौकी पर बैठे हुए हैं मगर मातहत के सिपाही खेमे के चारो तरफ नङ्गी तलवारें लिये घूम रहे हैं। कुंअर इन्द्रजीतसिंह के खेमे की चौकसी कंचनसिंह और आनन्दसिंह के खेमे की हिफाजत नाहरसिंह कई सिपाहियों के साथ कर रहे हैं॥

जब आधी रात से ज्यादे जा चुकी एक आदमी कुंअर इन्द्रजीतसिंह के खेमे के दर्वाजे पर आया और कंचनसिंह के पास सलाम

करके खड़ा हो गया, यह आदमी लम्बे कद का और मजबूत मालूम होता था, सर पर मुंडासा बांधे और ऊपर से एक कश्मीरी स्याह चोगा डाले हुए था ॥

कंचन० । तुम कौन हो और क्यों आये हो ?

आदमी० । मैं रोहतासगढ़ किले का रहने वाला हूं किशोरी जी का सन्देसा लेकर आया हूं ॥

कंचन० । क्या सन्देसा है ?

आदमी० । हुक्म है कि कुमार के सिवाय और किसी से न कहूं ॥

कंचन० । कुमार तो इस समय सोये हुए हैं ॥

आदमी० । अगर आप मेरा आना जरूरी समझते हों तो मुझे खेमे के अन्दर ले चलिये या कुमार को उठा कर खबर कर दीजिये ॥

कंचन० । (कुछ सोच कर) बेशक ऐसी हालत में कुमार को जगाना ही पड़ेगा, कहो तुम्हारा नाम क्या है ?

आदमी० । मैं अपना नाम नहीं बता सकता, कुमार मुझे अच्छी तरह जानते हैं, आप अपने साथ मुझे खेमे के अन्दर ले चलिये, आंख खुलतेही कुमार मुझे पहिचान लेंगे आपको कुछ कहने की जरूरत न पड़ेगी ॥

कंचनसिंह उस आदमी को लेकर खेमे के अन्दर घुसा, आगे २ कंचनसिंह और पीछे २ वह आदमी, जब दोनों खेमे के मध्य में पहुंचे तो उस आदमी ने अपने कपड़े के अन्दर से एक भुजाली निकाल कर धोखे में पड़े हुए बेचारे कंचनसिंह की गर्दन पर पीछे से इस जोर से मारी कि खट से सिर कट कर दूर जा गिरा, बेचारे के मुंह से आवाज तक न निकलने पाई । इसके बाद उसने भुजाली पोंछ कर अपने कमर में रक्खी और नींद में मस्त सोये हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास जाकर खड़ा हो गया, कमर से एक शीशी निकाली

और बहुत सम्हाल कर कुमार के नाकसे लगाई। इस शीशी में तेज बेहोशी की दवा थी, कुमार के बेहोश होजाने बाद उसने अपने कमर से एक लोई खोली और उसमें उनकी गठरी बांध दर्वाजे पर परदे के पास आकर देखने लगा कि आगे की तरफ सन्नाटा है या नहीं॥

इस समय पहरेवाले गश्त लगाते हुए खेमे के पीछे की तरफ निकल गये थे, आगे सन्नाटा पाकर उसने कुमार की गठड़ी उठाई और खेमे के बाहर हो अपने को बचाता हुआ लश्कर से निकल गया। लश्कर से कुछ दूर पर एक रथ खड़ा था जिसमें दो मजबूत मुश्की रङ्ग के घोड़े जुते हुए थे, कोचवान तैयार बैठा था। गठड़ी खोल कर कुमार को उसी पर लिटा दिया और खुद भी सवार हो रथ हांकने का हुक्म दिया। रथ थोड़ी ही दूर गया था कि सारथी को मालूम हो गया कि पीछे २ कोई सवार आ रहा है, उसने घबड़ा कर अन्दर बैठे हुए उस आदमी से कहा कि कोई सवार बराबर रथ के साथ चला आ रहा है॥

रथ और तेज किया गया मगर सवार ने पीछा न छोड़ा। सुबह होते २ तक रथ बहुत दूर निकल गया और ऐसी जगह पहुंचा जहां सड़क के दोनों तरफ घना जङ्गल था। तब वह सवार घोड़ा बढ़ा कर रथ के बराबर आया और बोला, "बस अब रथ रोक लो॥"

सारथी०। तुम कौन हो जो तुम्हारे कहने से रथ रोका जाय?

सवार०। हम तुम्हारे बाप हैं, खबरदार अब रथ आगे न बढ़ने पावे॥

इस सवार के हाथ में एक बरछी थी, जब सारथी ने उसकी बात कुछ न सुनी तो लाचार उसने बरछी मारी। चोट खा कर सारथी जमीन पर गिर पड़ा, रथ का घोड़ा भड़क कर और तेजी के साथ भागा और पहिया सारथी के ऊपर से हो कर निकल गया॥

सवार ने घोड़े को भी बरछी मारी, एक घोड़ा जख्मी हो कर गिर पड़ा दूसरा घोड़ा भी रुक गया, वह आदमी जो रथ के अन्दर बैठा हुआ था कूद कर तलवार खैंच सवार के सामने आ खड़ा हुआ। बात की बात में सवार ने उसे भी बेजान कर दिया और घोड़े के नीचे उतर पड़ा। यह सवार नकाबपोश था ॥

बरछी गाड़ कर घोड़े को उसके साथ बांध दिया और बड़ी होशियारी से कुंअर इन्द्रजीतसिंह को रथ के नीचे उतारा। सड़क के दोनों तरफ घना जङ्गल था, कुमार को उठा कर जङ्गल में ले गया और एक सलई के पेड़ के नीचे रख लौट आया और अपने घोड़े पर सवार हो फिर उसी जगह पहुंचने बाद कुमार के पास बैठ उनको होश में लाने की फिक्र करने लगा ॥

सुबह की ठण्डी हवा लगने पर कुमार होश में आये और घबड़ा कर उठ बैठे, सवार तलवार खैंच सामने खड़ा हो गया। कुमार भी सँभल कर खड़े हो गये और बोलेः—

कुमार०। क्या तुम हमें यहां लाये हो ?

सवार०। नहीं कोई दूसरा ही आपको लिये जाता था मैं ने छुड़ाया है ॥

कुमार०। (चारों तरफ देख कर) जब तुमने मुझे किसी दुश्मन के हाथ से छुड़ाया है तो स्वयम् तलवार ले कर सामने क्यों खड़े हो गये ?

सवार०। आपकी बहादुरी और दिलावरी की बहुत कुछ तारीफ सुनी है लड़ने का हौसला रखता हूं ॥

कुमार०। मेरे पास कोई हरबा न होने पर भी लड़ने को तैयार हूं वार करो ॥

सवार०। जो आदमी रथ पर सवार करके आपको लिये जाता था

उसकी ढाल तलवार मैं ले आया हूं (हाथ का इशारा करके) वह देखिये आपके बगल में मौजूद है उठा लीजिये और मुकाबला कीजिये, मैं खाली हाथ आपसे लड़ना नहीं चाहता ॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह ढाल तलवार उठा पैतरे के साथ उस नकाब-पोश सवार के मुकाबिले में खड़े होगये, थोड़ी देर तक लड़ाई होती रही, कुमार को मालूम हो गया कि यह दुश्मनी के तौर पर नहीं लड़ता ललकार कर बोले, "तुम लड़ते हो या खिलवाड़ करते हो?"

सवार। दुश्मनी तो आपसे है नहीं ॥

कुमार०। फिर लड़ने को तैयार क्यों हुए ?

सवार०। इस लिये कि आपके बदन में जरा फुर्ती आ जावे, बहुत देर तक बेहोश पड़े रहने से रगों में सुस्ती आ गई होगी, अगर आपसे दुश्मनी रहती तो आपको दुश्मन के हाथ से क्यों बचाता ?

कुमार०। तो क्या तुम हमारे दोस्त हो ?

सवार०। मैं यह भी नहीं कह सकता ॥

कुमार०। जरूर तुम हमारे दोस्त हो अगर दुश्मन के हाथ से हमें बचाया ॥

सवार०। क्या इस बारे में आपको शक है कि मैंने आपकी जान बचाई ॥

कुमार०। जरूर शक है। मैं कैसे विश्वास कर सकता हूं कि तुम मुझे यहां लाये हो या कोई दूसरा !!

सवार०। इसके लिये मैं तीन सबूत दूंगा। एक तो अगर मैं दुश्मन होता तो बेहोशी की हालत में तुम्हें मार डालता ॥

कुमार०। बेशक, और दो सबूत कौन से हैं ?

सवार०। जरा ठहरिये मैं अभी आता हूं तो वे दो सबूत भी देता हूं ॥

इतना कह वह नकाबपोश सवार झट अपने घोड़े पर सवार हुआ और वहां पहुंचा जहां वह रथ था जिस पर कुमार लाये गये थे। एक घोड़ा मरा हुआ पड़ा था दूसरा बागडोर से बंधा अलग खड़ा था, उस ऐयार की लाश भी उसी जगह पड़ी हुई थी जो कुमार को बेहोश करके उठा लाया था, पीछे की तरफ थोड़ी दूर पर सारथी की लाश थी॥

वह नकाबपोश सवार अपने घोड़े से उतर पड़ा और जोर लगा कर किसी तरह उस रथ को उलट दिया जो अभी तक खड़ा था फिर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये? उसकी निगाह सारथी की लाश पर पड़ी वहां गया और उस लाश को घसीट लाकर रथ के पास रख दिया और फिर कुछ सोच कर धीरे से बोला— "अब कुमार नहीं समझ सकते कि उनका लश्कर किधर है और वे किस तरफ से लाये गये, उन्हें धोखे में डाल कर अपनी और उनकी किस्मत का अन्दाजा लेना चाहिये।" इसके बाद वह सवार फिर अपने घोड़े पर सवार हुआ और वहां पहुंचा जहां कुमार बैठे उसकी राह देख रहे थे॥

कुमार०। तुम कहां गये थे?

सवार०। एक आदमी की खोज में गया था मगर वह नहीं मिला॥

कुमार०। खैर, तुम अपनी सचाई के लिये और सबूत देने वाले थे?

सवार०। हां आप जरा तकलीफ कीजिये और मेरे साथ आइये॥

सवार घोड़े से उतर पड़ा और कुमार से बोला, "आप इस घोड़े पर सवार हो लीजिये और मेरे साथ चलिये।" मगर कुमार ने मंजूर न किया। सवार ने भी घोड़े की लगाम थाम ली और पैदल कुमार को लिये हुए उस रथ के पास पहुंचा और सब हाल कह कर बोला,

"देखिये इसी रथ पर आप लाये गये, यही बदमाश आपको लाया है और यह दूसरा सारथी है, मैं इत्तफ़ाक से आपके पास मिलने के लिये जा रहा था जो आपके काम आया, अब इस रथ का एक घोड़ा बचा हुआ है इसी पर आप सवार होकर अपने लश्कर में चले जाइये ॥"

कुमार०। बेशक तुमने मेरी जान बचाई इसका अहसान कभी न भूलूंगा ?

सवार०। क्या इसका अहसान आप मानते हैं ?

कुमार०। जरूर ॥

सवार०। तो आप कुछ देकर इस अहसान का बोझ अपने ऊपर से उतार दीजिये ॥

कुमार०। बड़ी खुशी के साथ मैं ऐसा करने को तैयार हूं, जो कहो दूं ॥

सवार०। इस समय तो आपसे कुछ नहीं ले सकता, मगर आप वादा करें तो जरूरत पड़ने पर आपसे कुछ मांगू और मदद लूं ॥

कुमार०। मैं वादा करता हूं कि जो कुछ मांगोगे दूंगा, जब चाहे ले लो ॥

सवार०। देखिये फिर बदल न जाइयेगा ॥

कुमार०। कभी नहीं यह क्षत्रियों का धर्म नहीं है ॥

सवार०। अच्छा अब एक सबूत और देता हूं कि बिना आपको किसी तरह का कष्ट दिये अपने घर चला जाता हूं ॥

कुमार०। मगर तुम अपने चेहरे पर से नकाब तो हटाओ जिसमें तुमको पहिचान रक्खूं ॥

सवार०। यह बात तो जरूरी है ॥

इतना कह कर उस सवार ने चेहरे पर से नकाब उलट दी और कुमार को हैरत में डाल दिया क्योंकि यह एक हसीन और नौजवान

औरत थी ॥

बेशक सिवाय किशोरी के ऐसी हसीन औरत कुमार ने कभी नहीं देखी थी, उसने अपनी तिरछी चितवन से कुमार के दिल को शिकार कर लिया और उनकी बँधी हुई टकटकी की तरफ कुछ खयाल न कर उन्हें उसी तरह छोड़ सड़क से नीचे उतर जङ्गल का रास्ता लिया ॥

उसके चले जाने बाद थोड़ी देर तक तो कुमार उसी तरफ देखते रहे जिधर वह घोड़े पर सवार हो कर गई थी इसके बाद रथ और सड़क की तरफ देखा फिर उस घोडें के पास गये जो रथ के दो घोड़ों में से जीता मौजूद था, उसकी पीठ पर जो कुछ असबाब था खोल दिया सिर्फ लगाम रहने दी और नङ्गी पीठ पर सवार हो उसी तरफ का रास्ता लिया जिधर वह नकाबपोश औरत उनके देखते २ चली गई थी ॥

भूखे प्यासे दो पहर तक घोड़ा दौड़ाये चले गये मगर उस औरत का पता न लगा कि किधर गई और क्या हुई। भूख और प्यास से परेशान होगये और इस फिक्र में पड़े कि कहीं से ठण्ढा पानी मिले तो प्यास बुझावें मगर इस जङ्गल में कहीं सोते या झरने का पता न लगा, लाचार वह आगे बढ़ते ही गये और शाम होते २ एक ऐसे मैदान में पहुंचे जिसके चारो तरफ तो घना जङ्गल मगर बीच में सुन्दर साफ जल से लहराता हुआ एक अनूठा तालाब था ॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह उस विचित्र तालाब को देख बड़े ही विस्मित हुए और एक टक उसकी तरफ देखने लगे। इस तालाब के बीचो-बीच एक खूबसूरत छोटा सा मकान बना हुआ था जिसके चारो तरफ सहन था और चारो कोनों में चार औरतें तीर कमान से चढ़ाये मुस्तैद थीं, मालूम होता था कि ये अभी तीर छोड़ा ही चाहती हैं। कमरे

की छत पर एक छोटे से चबूतरे पर भी एक औरत दिखाई पड़ी जिसका सिर नीचे और पैर आसमान की तरफ था। बड़ी देर तक गौर से देखने बाद मालूम हुआ कि वे औरतें जानदार नहीं हैं बल्कि बनावटी हैं जिन्हें पुतली कहना मुनासिब है। एक छोटी सी डोंगी भी उसी चबूतरे के साथ किसी के सहारे बंधी हुई थी जिससे मालूम होता था कि इस मकान में जरूर कोई रहता है जिसके आने जाने के लिये यह डोंगी मौजूद है॥

कुमार घोड़े की लगाम एक पत्थर से अटका तालाब के नीचे उतरे, हाथ मुंह धो जल पीया और कुछ सुस्ताने बाद फिर उसी मकान की तरफ देखने लगे। कुमार का इरादा हुआ कि तैर कर उस मकान तक जाय और देखें कि उसमें क्या है। सूर्य्य अस्त होते २ एक औरत उस मकान के अन्दर से निकली और सहन पर खड़ी हो कुमार की तरफ देखने लगी और हाथ के इशारे से कहा कि यहां से चले जाओ। कुमार ने उस औरत को साफ पहिचान लिया कि यह वही नकाबपोश सवार है जिसने कुमार को रथ पर ले जाते हुए ऐयार के हाथ से बचाया था॥

दसवां बयान।

कुछ रात जा चुकी है रोहतासगढ़ किले के अन्दर अपने मकान में बैठी हुई बेचारी किशोरी न मालूम किस ध्यान में डूबी हुई है और क्या सोच रही है, कोई दूसरी औरत उसके पास नहीं है। आखिर किसी के पैर की आहट पा अपने खयाल में डूबी हुई किशोरी ने सिर उठाया और दर्वाजे की तरफ देखने लगी। लाली ने पहुंच कर सलाम किया और कहा, "माफ कीजियेगा मैं बिना हुक्म के इस कमरे में आई हूं॥"

किशोरी० । मैंने लौंडियों को हुक्म दे रक्खा है कि इस कमरे में कोई न आने पावे, मगर साथ ही इसके यह भी कह दिया था कि लाली आने का इरादा करे तो उसे मत रोकना ॥

लाली० । बेशक आपने मेरे ऊपर बड़ी मेहरबानी की ॥

किशोरी०। मगर न मालूम तुम मेरे ऊपर दया क्यों नहीं करतीं। आओ बैठो ॥

लाली० । (बैठ कर) आप ऐसा न कहें मैं जी जान से आपके काम आने को तैयार हूं ॥

किशोरी० । ये सब बनावटी बातें करती हो अगर ऐसा होता तो अपना और कुन्दन वाला भेद मुझसे क्यों छिपातीं ? नारङ्गी वाले भेद से तो मैं पहिले ही हैरान हो रही थी मगर जब से कुन्दन ने अपनी बातों का असर तुम पर डाला है तब से मेरी घबराहट और भी बढ़ गई है ॥

लाली० । बेशक आपको बहुत कुछ ताज्जुब हुआ होगा, मैं कसम खा कर कह सकती हूं कि कुन्दन ने उस समय जो कुछ मुझे कहा था, या कुन्दन की जिन बातों को सुन कर मैं डर गई थी वह उसे पहिले से मालूम न थीं अगर मालूम होतीं तो जिस समय मैंने नारङ्गी दिखा कर उसे धमकाया था उसी समय वह मुझसे बदला ले लेती, अब मुझे विश्वास हो गया कि इस मकान में कोई बाहर का आदमी जरूर आया है जिसने हमारे भेद से कुन्दन को होशियार कर दिया अफसोस! अब मेरी जान मुफ्त में जाया चाहती है क्योंकि कुन्दन बड़ी ही बेरहम और बदकार औरत है ॥

किशोरी० । तुम्हारी बातें मेरी घबराहट को बढ़ा रही हैं कृपा करके कुछ कहो तो सही क्या भेद है ?

लाली० । मैं बिलकुल हाल आप से कहूंगी और आपकी चिन्ता

दूर करूंगी मगर आज रात भर आप मुझे और माफ कीजिये और इस समय एक काम में मेरी मदद कीजिये ॥

किशोरी०। वह क्या ?

लाली०। यह तो मुझे विश्वास हो ही गया कि अब मेरी जान किसी तरह नहीं बच सकती, तो भी अपने बचाने के लिये मैं कोई न कोई उद्योग जरूर करूंगी, मैं चाहती हूं कि अपने मरने के पहिले ही कुन्दन को इस दुनिया से उठा दूं मगर एक ऐसे अण्डस में पड़ गई हूं कि ऐसा करने का इरादा भी नहीं कर सकती, हां कुन्दन का कुछ विशेष हाल जानना चाहती हूं और इसके बाद बाग के उस कोने वाले मकान में घुसा चाहती हूं जिसमें हरदम ताला बन्द रहता है और दर्वाजे पर नङ्गी तलवार लिये दो औरतें बारी २ से पहरा दिया करती हैं, इन्हीं दोनों कामों में मैं आपसे मदद लिया चाहती हूं ॥

किशोरी०। उस मकान में क्या है तुम्हें कुछ मालूम है ?

लाली०। हां कुछ मालूम है और बाकी भेद जानना चाहती हूं, मुझे विश्वास है कि अगर तुम भी मेरे साथ उस मकान के अन्दर चलोगी और हम दोनों आदमी किसी तरह बच कर निकल आयेंगे तो फिर तुम्हें भी इस कैद से छुट्टी मिल जायगी, मगर उसके अन्दर जाना और बच कर निकल आना यही मुश्किल है ॥

किशोरी०। यह और भी ताज्जुब की बात तुमने कही, खैर ऐसी ज़िन्दगी से मैं मरना उत्तम समझती हूं, जो कुछ तुम्हें करना हो करो और जिस तरह की मदद मुझसे लिया चाहती हो लो ॥

लाली०। (एक छोटी सी तस्वीर कमर से निकाल कर और किशोरी के हाथ में देकर) थोड़ी देर बाद मामूली तौर पर कुन्दन ज़रूर तुम्हारे पास आवेगी, यह तस्वीर ऐसे ढङ्ग से उसे दिखाना जिसमें उसे यह न मालूम हो कि तुम जान बूझ कर दिखा रही हो, फिर

उसके चेहरे की जैसी रङ्गत हो या जो कुछ वह कहे मुझसे कहना। इस समय तो यही एक काम है॥

किशोरी०। यह काम मैं बखूबी कर सकूंगी॥

किशोरी ने लाली के हाथ से तस्वीर ले कर पहिले खुद देखी, इस तस्वीर में एक खोह की हालत दिखाई थी जिसमें एक आदमी उलटा लटक रहा था, और एक औरत हाथ में छुरा लिये उसके बदन में घाव लगा रही थी, पास एक कमासिन औरत खड़ी थी और कोने की तरफ कब्र खोदी जा रही थी॥

पाठक! यह तस्वीर ठीक उस समय की थी जिसका हाल पहिले हिस्से के आठवें बयान में हम लिख आये हैं, वह हाल किशोरी को अभी तक मालूम नहीं हुआ। किशोरी उस तस्वीर को देख कर बहुत ही हैरान हुई और उसके बारे में लाली से कुछ पूछना चाहा मगर लाली तस्वीर देने के बाद वहां न ठहरी तुरत बाहर चली गई॥

लाली के जाने के थोड़ी ही देर बाद कुन्दन आ पहुंची मगर उस समय किशोरी उस तस्वीर को देखने में अपने को यहां तक भूली हुई थी कि कुन्दन का आना उसे तब मालूम हुआ जब उसने पास आ कर और कुछ देर तक खड़े रह कर पूछा, "कहो बहिन! क्या देख रही हो?"

किशोरी०। (चौंक कर) हैं! तुम यहां कब से खड़ी हो?

कुन्दन०। कुछ देर से। इस तस्वीर में कौन सी ऐसी बात है जिसे तुम बड़े गौर से देख रही हो?

किशोरी०। तुमने इस तस्वीर को देखा?

कुन्दन०। सैकड़ों दफे, मैं समझती हूं कि यह तस्वीर तुम्हें लाली ने दी है खास मुझे दिखाने के लिये। आप लाली से कह दीजियेगा कि मैं इस तस्वीर को देख कर नहीं डर सकती। मैं बिना बदला

लिये कभी न छोड़ूंगी, क्योंकि जिस दिन पहिले पहिल रात को आप से मुलाकात हुई थी उस दिन यहां से मेरे निकल जाने का सामान बिल्कुल ठीक था इसी लाली ने मेरे उद्योग को मट्टी कर दिया और मेरे मददगारों को भी फँसा दिया, खैर देखा जायगा मैं आपके मिलने से प्रसन्न थी मगर अफसोस उसने झूठी बातें गढ़ कर आपका दिल भी मेरी तरफ से फेर दिया, तौ भी मैं आपके साथ बुराई न करूंगी और जहां तक हो सकेगा उसकी चालबाजियों से आपको होशियार कर दूंगी मानने न मानने का आपको अख़्तियार है॥

किशोरी०। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता कि क्या हो रहा है। हे ईश्वर! मैंने क्या अपराध किया था कि चारो तरफ से सङ्कट ने आ कर मुझे घेर लिया, हाय! मैं बिल्कुल नहीं जान सकती कि यहां कौन मेरा दोस्त है और कौन दुश्मन!!

इतना कह किशोरी रोने लगी, उसने अपने को बहुत सँभालना चाहा मगर न हो सका हिचकियों ने उसका गला दबा दिया। कुंदन किशोरी के पास बैठ गई और उसका हाथ अपने दोनों हाथों में दबा कर बोली:—

प्यारी किशोरी! यह समझाना तो बहुत मुश्किल है कि यहां आपका दोस्त कौन है, बात बना कर दोस्ती साबित करना भूल है, तिसमें दुश्मन के घर में, हां मैं यह जरूर साबित कर दूंगी कि लाली आपसे दुश्मनी रखती है। लाली ने आपसे जरूर कहा होगा कि आप ही की तरह मैं भी कुमार के साथ व्याह करने के लिये लाई गई हूं मगर नहीं यह बात बिल्कुल झूठ है, असल तो यह है कि लाली मुझको बिल्कुल नहीं जानती और न मैं जानती हूं कि लाली कौन है! मगर आजकल लाली जिस फिक्र में पड़ी है उससे मैं समझती हूं कि वह आपके साथ दुश्मनी कर रही है ताज्जुब नहीं कि वह आपको एक

दिन उस मकान में ले जाय जिसका ताला बराबर बन्द रहता है और जिसके दरवाजे पर नङ्गी तलवार का पहरा पड़ा करता है, क्योंकि आजकल वह वहां पहरा देने वाली औरतों से दोस्ती बढ़ा रही है और ताला खोलने के लिये एक ताली तैयार कर रही है, उसकी दुश्मनी का अन्त उसी दिन होगा जिस दिन वह आपको उस मकान के अन्दर कर देगी, फिर आपकी जान किसी तरह नहीं बच सकती। उसका ऐसा करना केवल आप ही के साथ दुश्मनी करना नहीं है, बल्कि यहां के राजा और इस राज्य के साथ दुश्मनी करना है, बेशक वह आपको उस मकान के अन्दर भेजेगी और आप उस चौकठ के अन्दर कभी पैर न रक्खेगी ॥

किशोरी०। उस मकान के अन्दर क्या है ?

कुन्दन०। सो मैं नहीं जानती ॥

किशोरी०। यहां का कोई आदमी जानता है ?

कुन्दन०। कोई नहीं, बल्कि जहां तक मैं खयाल करती हूं राजा भी उसके अन्दर का हाल नहीं जानता ॥

किशोरी०। क्या वह मकान कभी खोला नहीं जाता ?

कुन्दन०। मेरे सामने तो कभी खोला नहीं गया ॥

किशोरी०। फिर कैसे कह सकती हो कि उसके अन्दर जा कर कोई बच नहीं सकता ॥

कुन्दन०। इसका जानना तो कोई मुश्किल नहीं है, पहिले यही सोचिये कि वहां हर दम ताला बन्द रहता है अगर कोई चोरी से भीतर गया भी तो निकलने का मौका मुश्किल से मिलेगा फिर हम लोगों को उसके अन्दर जाकर फायदा ही क्या होगा ? आपने देखा होगा उस दरवाजे के ऊपर लिखा हुआ है कि—"इसके अन्दर जो जायगा उसका सिर आप से आप कट कर गिर पड़ेगा।" जो हो

मगर लाली आपको उस मकान के अन्दर जरूर भेजना चाहेगी ॥

किशोरी०। खैर इस तस्वीर का हाल अगर तुम जानती हो तो कहो ॥

कुन्दन०। कहती हूं सुनो—जब कुंअर इन्द्रजीतसिंह को धोखा देकर माधवी लेगई तो उनके छोटे भाई आनन्दसिंह उनकी खोज में निकले। एक मुसलमानी ने उन्हें धोखा देकर गिरफ़ार कर लिया और अपने साथ शादी करनी चाही मगर उन्होंने मंजूर न किया और तीन दिन भूखे प्यासे उसके यहां कैद रह गये आखिर उन्हीं के ऐयार देवीसिंह ने उस कैद से उनको छुड़ाया मगर उन्हें अभी तक मालूम नहीं है कि उन्हें देवीसिंह ने छुड़ाया था ॥

इसके बाद उस तस्वीर के बारे में जो कुछ आनन्दसिंह ने देखा सुना था कुन्दन ने वहां तक कह सुनाया जब आनन्दसिंह बेहोश करके उस खोह के बाहर निकाल दिये गये बल्कि घर तक पहुंचा दिये गये ॥

किशोरी०। यह सब हाल तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

कुन्दन०। मुझे देवीसिंह ने कहा था ॥

किशोरी०। देवीसिंह से तुमसे क्या सम्बन्ध ?

कुन्दन०। जान पहिचान है, आपने इस तस्वीर के बारे में लाली से कुछ सुना है या नहीं ?

किशोरी०। कुछ नहीं ॥

कुन्दन०। पूछिये देखें क्या कहती है, अच्छा अब मैं जाती हूं फिर मिलूंगी ॥

किशोरी०। जरा ठहरो तो ॥

कुन्दन०। अब मत रोको बेमौका हो जायगा मैं फिर बहुत जल्द मिलूंगी ॥

कुन्दन चली गई मगर किशोरी पहिले से भी ज्यादे सोच में पड़ गई। कभी तो उसका दिल लाली की तरफ झुकता और उसको अपना दुःख सुख का साथी समझती, कभी सोचते सोचते लाली की बातों में शक पड़ जाने पर कुन्दन ही को सच्ची समझी, उसका दिल दोनों तरफ के खिचाव में पड़ कर बेबस हो रहा था, वह ठीक कुन्दन निश्चय नहीं कर सकती थी कि अपना हमदर्द लाली को बनावे या कुन्दन को क्योंकि लाली और कुन्दन दोनों ही अपने अपने असली भेदों का किशोरी से छिपा रही थीं ॥

उसी दिन लाली ने फिर मिल कर किशोरी से पूछा कि "उस तस्वीर को देख कर कुन्दन की क्या दशा हुई ?" जिसके जवाब में किशोरी ने कहा कि "कुन्दन ने उस तस्वीर की तरफ ध्यान भी न दिया और मेरे खुद पूछने पर उसने कहा कि मैं नहीं जानती यह तस्वीर कैसी है और न इसे कभी मैंने पहिले देखा ही था ॥"

यह सुन कर लाली का चेहरा कुछ उदास हो गया और वह किशोरी के पास से उठकर चली गई । किशोरी ने कहा कि भला तुम ही बताती जाओ यह तस्वीर कैसी है ? लाली ने इसका कुछ भी जवाब न दिया और चली गई ॥

इस बात को कई दिन बीत गये, लश्कर से कुंअर इन्द्रजीतसिंह के गायब होने का हाल भी चारो तरफ फैल गया जिसे सुन धीरे धीरे किशोरी की उदासी और भी ज्यादे बढ़ गई ॥

एक दिन रात को अपनी पलङ्गड़ी पर लेटी हुई किशोरी तरह तरह की बातें सोच रही थी, लाली और कुन्दन के बारे में भी गैार कर रही थी, यकायक वह उठ बैठी और धीरे से आपही आप बोली, "अब मुझे खुद कुछ करना चाहिये इस तरह पड़े रहने से काम नहीं चलता, अफसोस ! मेरे पास कोई हर्बा भी नहीं है ॥"

किशोरी पलङ्ग के नीचे उतरी और कमरे में इधर उधर टहलने लगी आखिर कमरे के बाहर निकली, देखा कि पहरेदार लौंडियां गहरी नींद में सो रही हैं। आधी रात से ज्यादे जा चुकी थी चारो तरफ अँधेरा छाया हुआ था, धीरे धीरे कदम बढ़ाती हुई कुन्दन के मकान की तरफ बढ़ी, जब पास पहुंची तो देखा कि एक आदमी काले कपड़े पहिने उसी तरफ लपका हुआ जारहा है बल्कि उस कमरे के दालान में पहुंच गया जिसमें कुन्दन रहती थी। किशोरी एक पेड़ की आड़ में खड़ी हो गई, शायद इसलिये कि वह आदमी लौट कर चला जाय तो आगे बढ़ूं॥

थोड़ी देर बाद कुन्दन भी उसी आदमी के साथ बाहर निकली और धीरे धीरे बाग के उस तरफ रवाना हुई जिधर घने दरख़्त लगे हुए थे। जब दोनों उस पेड़ के पास पहुंचे जिसकी आड़ में किशोरी छिपी हुई थी तब वह आदमी रुका और धीरे से बोला:—

आदमी०। अब तुम जाओ, ज्यादे दूर तक पहुंचाने की कोई जरूरत नहीं॥

कुन्दन०। फिर भी मैं काहती हूं कि अब पांच सात दिन "नारङ्गी" की कोई जरूरत नहीं॥

आदमी०। खैर मगर किशोरी पर दया बनाये रहना॥

कुन्दन०। इसके कहने की कोई जरूरत नहीं॥

वह आदमी पेड़ों के झुण्ड की तरफ चला गया और कुन्दन लौट कर अपने कमरे में चली गई। किशोरी भी वहां न ठहरी और अपने कमरे में आ कर पलङ्ग पर लेट रही क्योंकि उन दोनों की बातों ने जिसे किशोरी ने अच्छी तरह सुना था उसे परेशान कर दिया और वह तरह तरह की बातें सोचने लगी मगर अपने दिल का हाल किससे कहे इस लायक वहां कोई भी न था॥

पहिले तो किशोरी बनिस्बत कुन्दन के लाली को सच्ची और नेक समझती थी मगर अब वह बात न रही। किशोरी उस आदमी के मुंह से निकली हुई उस बात को फिर याद करने लगी कि "किशोरी पर दया बनाये रहना॥"

वह आदमी कौन था, इस बाग में आना और यहां से निकल कर जाना तो बड़ाही मुश्किल है फिर वह क्योंकर आया! उस आदमी की आवाज पहिचानी हुई मालूम होती है, बेशक मैं उससे कई दफे बातें कर चुकी हूं, मगर कब और कहां सो याद नहीं पड़ता और न उसकी सूरत का ध्यान बंधता है, कुन्दन ने कहा था "पांच सात दिन तक नारङ्गी की कोई जरूरत नहीं।" इससे मालूम होता है कि वह नारङ्गी वाली बात कुछ उसी आदमी से सम्बन्ध रखती है और लाली उस भेद को जानती है, इस समय तो यह निश्चय होगया कि कुन्दन मेरी खैरखाह है पर लाली मुझसे दुश्मनी किया चाहती है, मगर इसका भी विश्वास नहीं होता। कुछ भेद खुला मगर इससे तो और भी उलझन होगई, खैर कोशिश करूंगी तो कुछ और भी पता लगेगा मगर अब लाली का हाल मालूम करना चाहिये॥

थोड़ी देर तक इस सब बातों को किशोरी सोचती रही, आखिर फिर अपने पलङ्ग से उठी और कमरे के बाहर आई, उसकी हिफाजत करने वाली लौंडियां उसी तरह गहरी नींद में सो रही थीं। जरा रुक कर बाग के उस कोने की तरफ बढ़ी जिधर लाली का मकान था, पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाती और रुक २ कर चारो तरफ की आहट लेती हुई चली जाती थी, जब लाली के मकान के पास पहुंची धीरे २ किसी की बात चीत की आहट पा एक अँगूर की झाड़ी में रुक रही और कान लगा कर सुनने लगी, केवल इतनाही सुना, "आप बेफिक्र रहिये जबतक मैं जीती हूं कुन्दन किशोरी का

कुछ बिगाड़ नहीं सकती और न उसे कोई दूसरा ले जा सकता है, किशोरी इन्द्रजीतसिंह की है और बेशक उन तक पहुंचाई जायगी॥"

किशोरी ने पहिचान लिया कि यह लाली की आवाज है, लाली ने यह बात बहुत धीरे से कही थी मगर किशोरी बहुत पास पहुंच चुकी थी इस लिये बखूबी सुन कर पहिचान सकी कि लाली की आवाज है मगर यह न मालूम हुआ कि दूसरा आदमी कौन है। लाली अपने कमरे के पास ही थी, बात कह कर तुरत दो चार सीढ़ियां चढ़ अपने कमरे में घुस गई और उसी जगह से एक आदमी निकल कर पेड़ों की आड़ में छिपता हुआ बाग के पिछली तरफ जिधर दरवाजे में बराबर ताला बन्द रहने वाला मकान था चला गया मगर उसी समय जोर से चोर चोर की आवाज आई। किशोरी ने इस आवाज को भी पहिचान कर मालूम कर लिया कि कुन्दन है जो इस आदमी को फँसाया चाहती है। किशोरी फौरन लपकती हुई अपने कमरे में चली आई और चोर चोर की आवाज बढ़ती ही गई॥

किशोरी अपने कमरे में आकर पलङ्ग पर लेट रही और उन बातों पर गौर करने लगी जो अभी दो तीन घण्टे के हेर फेर में देख सुन की थी। कुन्दन की तरफ गई और लाली की तरफ भी गई, जिससे मालूम हो गया कि वे दोनों एक एक आदमी से जान पहिचान रखती हैं जो बहुत छिप कर इस मकान में आता है! कुंदन के साथ जो आदमी मिलने आया था उसकी जुबानी जो कुछ मैंने सुना उससे जाना जाता था कि कुंदन मुझसे दुश्मनी नहीं रखती बल्कि मेहरबानी का बर्ताव किया चाहती है। इसके बाद जब लाली की तरफ गई तो वहां की बातचीत से मालूम हुआ कि लाली सच्चे दिल से मेरी मददगार है और कुन्दन शायद दुश्मनी की निगाह से मुझे देखती है। हां ठीक है, अब समझी, बेशक ऐसाही होगा, नहीं नहीं मुझे कुन्दन की बातों

पर विश्वास न करना चाहिये, अच्छा देखा जायगा । कुन्दन ने बेमौके चोर चोर का शोर मचाया कहीं ऐसा न हो कि बेचारी लाली पर कोई आफत आवे ॥

इन्हीं सब बातों को सोचती हुई किशोरी ने बची हुई थोड़ी रात जाग कर बिता दी और सुबह की सुपेदी फैलने के साथही अपने कमरे के बाहर निकली क्योंकि रात की बातों का पता लगाने के लिये उसका जी बेचैन हो रहा था ॥

किशोरी जैसेही दालान में पहुंची सामने से कुंदन को आते हुए देखा । कुंदन ने पास आकर सलाम किया और कहा, "रात का कुछ हाल मालूम है या नहीं ?"

किशोरी० । सब कुछ मालूम है, तुम्हीं ने तो गुल मचाया था ॥

कुन्दन० । (ताज्जुब से) यह कैसे कहती हो ?

किशो० । तुम्हारी आवाज साफ मालूम होती थी ॥

कुन्दन० । मैं तो चोर चोर का गुल सुन कर वहां पहुंची थी और उन्हीं लोगों की तरह खुद भी चिल्लाने लगी थी ॥

किशो० । (हँस कर) शायद ऐसा ही हो ॥

कुन्दन० । क्या इसमें आपको शक है ?

किशो० । बेशक ! लो यह लाली भी आ रही है ॥

कुन्दन० । (कुछ घबड़ा कर) जो कुछ किया इन्हीं ने किया ॥

इतने ही में लाली भी आकर खड़ी हो गई और कुंदन की तरफ देख कर बोली, "आपका वार तो खाली गया ॥"

कुन्दन० । (घबड़ा कर) मैंने क्या..........

लाली० । बस रहने दीजिये आपने मेरी कार्रवाई कम देखी होगी मगर दो घण्टे पहिले मैं आपकी पूरी कार्रवाई मालूम कर चुकी थी ॥

कुन्दन० । (बदहवास होकर) आप तो कसम खा......

लाली०। हां हां, मुझे खूब याद है मैं उसे नहीं भूलती ॥

किशो०। जो हो मुझे तो अब पांच सात दिन तक नारङ्गी की कोई जरूरत नहीं !!

किशोरी की इस बात ने लाली और कुंदन दोनों को चौंका दिया, लाली के चेहरे पर कुछ हँसी थी मगर कुंदन के चेहरे का रङ्ग बिलकुल उड़ गया था क्योंकि उसे विश्वास हो गया कि किशोरी ने भी रात की कुल बातें सुन लीं। कुंदन की घबराहट और परेशानी यहां तक बढ़ गई कि वह किसी तरह अपने को सम्हाल न सकी और बिना कुछ कहे वहां से अपने कमरे की तरफ चली गई। अब लाली और किशोरी में बातचीत होने लगी ॥

लाली०। मालूम होता है तुमने भी रात कुछ ऐयारी की ॥

किशो०। हां मैं कुंदन की तरफ छिप कर गई थी ॥

लाली०। तब तो तुम्हें मालूम होगया होगा कि कुंदन तुम्हें धोखा दिया चाहती है ॥

किशोरी०। पहिले तो यह साफ नहीं जान पड़ा था मगर जब तुम्हारी तरफ गई और तुमको किसी से बातें करते सुना तो विश्वास होगया कि इस महल में केवल तुम्हीं से मैं कुछ भलाई की उम्मीद कर सकती हूं ॥

लाली०। ठीक है, कुंदन की कुल बातें तुमने नहीं सुनीं क्या मुझसे भी...(रुक कर) खैर जाने दीजिये। हां अब वह समय आगया कि तुम और हम दोनो यहां से निकल भागें। क्या तुम मुझ पर विश्वास रखती हो?

किशो०। बेशक तुमसे मुझे नेकी की उम्मीद है मगर कुन्दन बहुत बिगड़ी हुई मालूम होती है ॥

लाली०। वह मेरा कुछ नहीं कर सकती ॥

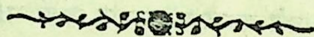
किशो०। अगर तुम्हारा हाल किसी से कह दे तो ?

लाली०। अपनी जुबान से वह नहीं कह सकती, क्योंकि वह मेरे पँजे में उतनी ही फँसी हुई है जितनी मैं उसके पँजे में ॥

किशो०। अफसोस! इतनी मेहरबानी रहने पर भी तुम वह भेद मुझसे नहीं कहतीं ॥

लाली०। घबड़ाओ मत सब कुछ मालूम हो जायगा ॥

इसके बाद लाली ने धीरे से किशोरी को कुछ समझाया और दो घण्टे में फिर मिलने का वादा करके वहां से चली गई ॥



ग्यारहवां बयान।

हम कई दफे लिख आये हैं कि उस बाग में जिसमें किशोरी रहती थी एक तरफ ऐसी इमारत है जिसके दर्वाजे पर बराबर ताला बन्द रहता है और नङ्गी तलवार का पहरा पड़ा करता है ॥

आधी रात का समय है चारो तरफ अंधेरा छाया हुआ है, तेज हवा चलने के कारण बड़े बड़े पेड़ों के पत्ते खड़खड़ाकर सन्नाटे को तोड़ रहे हैं। उसी समय हाथ में कमन्द लिये हुए लाली अपने को हर तरह से बचाती और चारो तरफ गौर से देखती हुई उस मकान के पिछवाड़े की तरफ जा रही है। जब दीवार के पास पहुंची कमंद लगा कर छत के ऊपर चढ़ गई, छत के ऊपर चारो तरफ तीन तीन हाथ ऊंची दीवार थी, लाली ने बड़ी होशियारी से छत फोड़ कर एक इतना बड़ा सूराख किया जिसमें आदमी बखूबी उतर जा सके और खुद कमन्द के सहारे उसके अन्दर उतर गई ॥

दो घंटे के बाद एक छोटीसी सन्दूकड़ी लिये हुए निकली और कमन्द के सहारे छत के नीचे उतर एक तरफ रवाना हुई। पूरब तरफ

वाली बारहदरी में आई जहां से महल में जाने का रास्ता था, फाटक के अन्दर घुस कर महल में पहुंची। यह महल बहुत बड़ा और आलीशान था, दो सौ लौंडियों और सखियों के साथ महारानी साहबा इसी में रहा करती थीं। कई दालानों और दर्वाजों को पार करती हुई लाली ने एक कोठड़ी के दर्वाजे पर पहुंच कर धीरे से कुण्डा खटखटाया॥

एक बुढ़िया ने उठ कर किवाड़ खोला और लाली को अन्दर करके फिर बन्द कर लिया। उस बुढ़िया की उम्र लगभग अस्सी वर्ष के होगी, नेकी और रहमदिली उसके चेहरे पर झलक रही थी, सिर्फ छोटीसी कोठड़ी, थोड़े से जरूरी सामान और मामूली चारपाई पर ध्यान देने से मालूम होता था कि बुढ़िया लाचारी से अपनी जिन्दगी बिता रही है। लाली ने दोनों पैर छू कर प्रणाम किया और उस बुढ़िया ने पीठ पर मुहबत से हाथ फेर कर बैठने के लिये कहा॥

लाली०। (सन्दूकड़ी आगे रख कर) यही है?

बुढ़िया०। क्या ले आई! हां ठीक है, बेशक यही है, अब आगे जो कुछ कीजियो बहुत सम्हाल के, ऐसा न हो कि इस आखिरी समय में मुझे कलङ्क लगे॥

लाली०। जहां तक हो सकेगा बड़ी होशियारी से काम करूंगी, आप आशीर्वाद दीजिये कि मेरा उद्योग सुफल हो॥

बुढ़िया०। ईश्वर तुझे इस नेकी का बदला दे, वहां कुछ डर तो नहीं मालूम हुआ?

लाली०। दिल कड़ा करके इसे ले आई नहीं तो मैंने जो कुछ देखा जीते जी भूलने योग्य नहीं, अभी तो फिर एक दफे देखना नसीब होगा, ओफ! अभी तक कलेजा कांपता है॥

बुढ़िया०। (मुस्कुरा कर) बेशक वहां ताज्जुब के सामान इकट्ठे

है मगर डरने की कोई बात नहीं, जा ईश्वर तेरी मदद करे ॥

लाली ने उस सन्दूकड़ी को उठा लिया और धीरे धीरे अपने खास घर में आ सन्दूकडी को हिफाजत से रख पलङ्ग पर जा कर लेट रही । सवेरे उठकर किशोरी के कमरे में गई ॥

किशोरी० । मुझे रात भर तुम्हारा खयाल बना रहा और घड़ी घड़ी उठकर बाहर जाती थी कि कहीं से गुल शोर की आवाज तो नहीं आती ॥

लाली० । ईश्वर की दया से मेरे काम में किसी तरह का विघ्न नहीं पड़ा ॥

किशोरी० । आओ मेरे पास बैठो, अब तो तुम्हें उम्मीद हो गई होगी कि मेरी जान बच आयगी और मैं यहां से जा सकूंगी ॥

लाली० । बेशक अब मुझे पूरी उम्मीद हो गई ॥

किशोरी० । सन्दूकड़ी मिली ?

लाली० । हां, यह सोच कर कि दिन को किसी तरह मौका न मिलेगा उसी समय मैं बूढ़ी दादी को भी दिखा आई, उन्होंने पहिचान कर कहा कि बेशक यही सन्दूकड़ी है, उस रङ्ग ढङ्ग की वहां कई सन्दूकड़ियां थीं मगर वह खास निशान जो बूढ़ी दादी ने बताया था देखकर मैं उस एक को ले आई ॥

किशोरी० । मैं भी उस सन्दूकड़ी को देखा चाहती हूं ॥

लाली० । बेशक मैं तुम्हें अपने यहां ले चल कर वह सन्दूकड़ी दिखा सकती हूं मगर उसके देखने से तुम्हें किसी तरह का फायदा नहीं बल्कि तुम्हारे वहां चलने से कुन्दन को खुटका हो जायगा और वह सोचेगी कि किशोरी लाली के यहां क्यों गई । उस सन्दूकड़ी में कोई ऐसी बात नहीं है जो देखने लायक हो, उसे मामूली एक छोटा सा डिब्बा समझना चाहिये जिसमें कहीं ताली लगने की

जगह नहीं है और वह मजबूत भी इतनी है कि किसी तरह टूट नहीं सकती ॥

किशोरी०। फिर वह क्योंकर खुल सकेगी और उसके अन्दर से वह चाभी क्योंकर निकलेगी जिसकी हमलोगों को जरूरत है?

लाली०। रेती से रेत कर उसमें सूराख किया जायगा ॥

किशोरी०। देर लगेगी ॥

लाली०। हां दो दिन में यह काम होगा क्योंकि सिवाय रात के दिन को मौका नहीं मिल सकता ॥

किशो०। मुझे तो एक एक घड़ी सौ सौ वर्ष के समान बीतती है॥

लाली०। खैर जहां इतने दिन बीते तहां दो दिन और सही ॥

थोड़ी देर तक बातचीत होती रही इसके बाद लाली उठ कर अपने मकान में चली गई और मामूली कामों की फिक्र में लगी ॥

इस मामले के तीसरे दिन आधी रात के समय लाली अपने मकान से बाहर निकली और किशोरी के मकान में आई, वे लौंडियां जो किशोरी के यहां पहरे पर मुकर्रर थीं गहरी नींद में पड़ी खुर्राटे ले रही थीं मगर किशोरी की आंखों में नींद का नाम निशान नहीं, वह पलङ्ग पर लेटी दरवाजे की तरफ देख रही थी। उसी समय हाथ में एक छोटी सी गठड़ी लिये लाली ने भी कमरे के अन्दर पैर रक्खा जिसे देखते ही किशोरी उठ खड़ी हुई और बड़ी मुहब्बत से हाथ पकड़ लाली को अपने पास बैठाया ॥

किशोरी०। ओफ! ये दो दिन बड़ी कठिनता से बीते, दिन रात डर लगा रहता था ॥

लाली०। सो क्यों?

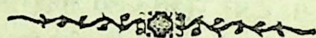
किशोरी०। इसी लिये कि कोई उस छत पर जाकर देख न ले कि किसी ने सेंध लगाई है ॥

लाली०। उँह, कौन उसपर जाता है और कौन देखता है, लो अब देर करना मुनासिब नहीं॥

किशोरी०। मैं तैयार हूं, कुछ लेने की जरूरत तो नहीं है?

लाली०। जरूरत की सब चीजें मेरे पास हैं तुम बस चली चलो॥

लाली और किशोरी वहां से रवाना हुईं और पेड़ों की आड़ में छिपती हुई उस मकान के पिछवाड़े पहुंचीं जिसकी छत में लाली ने सेंध लगाई थी। कमन्द लगा कर दोनों ऊपर चढ़ीं, कमन्द खींच लिया और उसी कमन्द के सहारे सेंध की राह दोनों मकान के अन्दर उतर गईं। वहां की अजायब बातों को देख किशोरी की अजब हालत हो गई मगर तुरत ही उसका ध्यान दूसरी तरफ जा पड़ा। किशोरी और लाली जैसे ही उस मकान के अन्दर उतरीं वैसे ही बाहर किसी के ललकारने के साथ ही कई कमन्द लगा दस पन्द्रह आदमी उस छत पर चढ़ गये और "धरो धरो, जाने न पावे, जाने न पावे" की आवाज आने लगी॥



बारहवां बयान।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह तालाब के किनारे खड़े उस विचित्र इमारत और हसीन औरत की तरफ देख रहे हैं, उनका इरादा हुआ कि तैर कर उस मकान में चले जांय जो इस तालाब के बीचोबीच में बना हुआ है मगर उस नौजवान औरत ने इन्हें हाथ के इशारे से मना किया बल्कि वहां से भाग जाने के लिये कहा। उसका इशारा समझ वह रुक गये मगर जी न माना फिर तालाब में उतरे॥

उस नाजनीन को जब विश्वास हो गया कि कुमार बिना यहां आये न मानेंगे तब उसने इशारे से ठहरने के लिये कहा और यह भी

कहा कि मैं किश्ती लेकर आती हूं। उस औरत ने किश्ती खोली और उसपर सवार हो अजीब तरह से घुमाती फिराती तालाब के पिछले कोने की तरफ लेगई और कुमार को भी उसी तरफ आने का इशारा किया। कुमार उस तरफ गये और खुशी खुशी उस औरत के साथ किश्ती पर सवार हुए। वह किश्ती को उसी तरह घुमाती फिराती मकान के पास ले गई दोनों आदमी उतर कर मकान के अन्दर गये॥

उस छोटे से मकान की सजावट कुमार ने बहुत पसन्द की, वहां सभी चीजें जरूरत की मौजूद थीं, बीच का बड़ा कमरा अच्छी तरह से सजा हुआ था, बेशकीमती शीशे लगे हुए थे, काश्मीरी गलीचे जिनमें तरह तरह के फूल बूटे बने हुए थे बिछे थे, छोटी छोटी मगर ऊंची सङ्गमर्मर की चौकियों पर सजावट के सामान और गुलदस्ते लगाये हुए थे, गाने बजाने का सामान भी मौजूद था, दीवारों पर तस्वीरों के बनाने में मुसौवरों ने अच्छी कारीगरी खर्च की थी। उस कमरे के बगल में एक और छोटा सा कमरा सजा हुआ था जिसमें सोने के लिये मसहरी बिछी हुई थी। उसके बगल में एक कोठड़ी नहाने की थी जिसकी जमीन सुपेद और स्याह पत्थरों से बनी हुई थी तथा बीच में एक छोटा सा हौज बना हुआ था जिसमें एक तरफ से तालाब का जल आता और दूसरी तरफ से निकल जाता था, इसके अलावे और भी तीन चार कोठड़ियां जरूरी कामों के लिये मौजूद थीं, मगर उस मकान में सिवाय उस एक औरत के और कोई दूसरी औरत न थी न कोई नौकर या मजदूरनी थी॥

उस मकान को देख और उसमें सिवाय उस नौजवान नाजनीन के और किसी को न पा कुमार को बड़ाही ताज्जुब हुआ। वह मकान इस योग्य था कि बिना पांच चार आदमियों के उस मकान की सफाई या वहां के सामान की दुरुस्ती हो नहीं सकती थी॥

थके मांदे और धूप खाये हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह को वह जगह बहुत ही भली मालूम हुई और उस हसीन औरत के अलौकिक रूप की छटा में वह ऐसे मोहित हुए कि पीछे की धुन बिलकुलही जाती रही । बड़े नाज और अन्दाज से उस औरत ने कुमार को कमरे में ले जा कर गद्दी पर बैठाया और आप उनके सामने बैठ गई ॥

कुमार० । तुमने जो कुछ अहसान मुझ पर किया है मैं किसी तरह उसका बदला नहीं चुका सकता ॥

औरत० । ठीक है, मगर मैं उम्मीद करती हूं कि आप कोई काम ऐसा भी न करेंगे जो मेरी बदनामी का सबब हो ॥

कुमार० । नहीं नहीं, मुझसे ऐसी उम्मीद कभी न करना, क्या सबब है जो तुमने ऐसा कहा ?

औरत० । इस मकान में जहां मैं अकेली रहती हूं आपका इस तरह आना और देर तक रहना बेशक मेरी बदनामी का सबब होगा ॥

कुमार० । (कुछ सोच कर) तुम इतनी खूबसूरत क्यों हुई ? अफसोस ! तुम्हारी एक एक अदा मुझे अपनी तरफ खैंचती है (कुछ अटक कर) जो हो, मुझे अब यहां से चले ही जाना चाहिये । ऐसा ही था तो तुम मुझे किश्ती पर चढ़ा कर यहां क्यों लाई ?

औरत० । मैंने तो पहिले ही आपको चले जाने का इशारा किया था मगर जब आप जल में तैर कर यहां आने लगे तो लाचार मुझे ऐसा करना पड़ा । मैं जान बूझ कर उस आदमी को किस तरह आफत में फंसा सकती हूं जिसकी जान खुद एक जालिम ऐयार के हाथ से बचाई हो । आप यह न समझें कि कोई आदमी तालाब में तैर कर यहां तक आ सकता है, क्योंकि इस तालाब में चारो तरफ जाल फैंके हुए हैं अगर कोई आदमी यहां तैर कर आने का इरादा करेगा तो बेशक जाल में फंस कर अपनी जान बर्बाद करेगा, यही सबब था

कि मुझे आपके लिये किश्ती ले जानी पड़ी॥

कुमार०। बेशक इसके लिये मैं भी धन्यवाद दूंगा, माफ करना मैं यह नहीं जानता था कि मेरे यहां आने से तुम्हारा नुकसान होगा, अब मैं जाता हूं मगर कृपा करके अपना नाम तो बता दो जिसमें मुझे याद रहे कि फलानी औरत ने बड़े वक्त पर मेरी मदद की थी॥

औरत०। (हँस कर) मैं अपना नाम नहीं किया चाहती और न इस धूप में आपको यहां से जाने के लिये कहती हूं बल्कि मैं उम्मीद करती हूं कि आप मेरी मेहमानी कबूल करेंगे॥

कुमार०। वाह वाह! कभी तो आप मुझे मेहमान बनाती हैं और कभी यहां से निकल जाने के लिये हुक्म लगाती हैं, आप लोग जो चाहें करें॥

औरत०। (हँस कर) खैर यह बातें पीछे होती रहेंगी आप यहां से उठें और कुछ भोजन करें क्योंकि मैं जानती हूं आपने अभी तक कुछ भोजन नहीं किया है॥

कुमार०। अभी तो स्नान सन्ध्या भी नहीं किया, मुझे ताज्जुब है कि यहां तुम्हारे पास कोई लौंडी दिखाई नहीं देती॥

औरत०। आप इसके लिये चिन्ता न करें आपकी लौंडी मैं मौजूद हूं आप जरा बैठें मैं सब सामान ठीक करके अभी आती हूं॥

इतना कह बिना कुमार की मरजी पाये वह औरत वहां से उठी और बगल के एक कमरे में चली गई, उसके जाने बाद कुमार कमरे में टहलने और एक एक चीज को गौर से देखने लगे, यकायक एक गुलदस्ते के नीचे दबे हुए कागज के टुकड़े पर उनकी नजर पड़ी। मुनासिब न था कि उस पुरजे को उठा कर पढ़ते मगर लाचार, उस पुरजे के कई अक्षर जो गुलदस्ते के नीचे दबने से रह गये थे साफ दिखाई पड़ते थे, उन्हीं अक्षरों ने कुमार को पुरजा निकाल कर पढ़ने

के लिये मजबूर किया, वे अक्षर ये थे :—

"किशोरी"

लाचार कुमार ने उस पुरजे को निकाल कर पढ़ा, यह लिखा हुआ था :—

"आपके कहे मुताबिक कुल कार्रवाई अच्छी तरह हो रही है, लाली कुन्दन में खूब घातें चल रही हैं। किशोरी ने भी पूरा धोखा खाया। किशोरी का आशिक भी यहां मौजूद है, उसे किशोरी से बहुत कुछ उम्मीद है। मैंने भी इनाम पाने लायक काम किया है इस समय लाली कुछ अजब ही रङ्ग लाया चाहती है खैर दो तीन दिन में और भी खुलासा हाल लिखूंगी ॥"

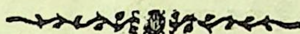
आपकी लौंडी

तारा।

कुमार ने उस पुरजे को झटपट पढ़कर उसी तरह रख दिया और गद्दी पर आकर बैठ गये, सोच और तरद्दुद ने चारो तरफ से आ कर उन्हें घेर लिया, उस पुरजे ने तो उनके दिल का भाव ही बदल दिया, इस समय उनकी सूरत देखकर उनका हाल उनका कोई सच्चा दोस्त भी नहीं मालूम कर सकता था, हां कुछ देर सोचने बाद इतना तो कुमार ने लम्बी सांस के साथ खुल कर कहा, "खैर कहां जाती है कम्बख्त! मैं बिना कुछ काम किये टलने वाला नहीं ॥"

इतने ही में वह औरत भी आ गई और बोली, "उठिये सब सामान दुरुस्त है।" कुमार उसके साथ नहाने वाली कोठड़ी में गये जिसमें हौज बना हुआ था। धोती गमछा और पूजे का सब सामान वहां मौजूद था, कुमार ने स्नान और सन्ध्या किया। वह औरत एक चांदी की रिकाबी में कुछ मेवा और खाये की चीज इनके सामने रख कर चली गई और दूसरी दफे पीने के लिये जल भी लाकर रख गई।

उसी समय कुमार ने सुना कि बगल के कमरे में दो औरतें बातें कर रही हैं, उन्हें ताज्जुब हुआ कि यह दूसरी औरत कहां से आई! कुमार भोजन करके उठे, हाथ मुंह धोकर कोठड़ी के बाहर निकला ही चाहते थे कि सामने का दरवाजा खुला और दो औरतें नजर पड़ीं जिन्हें देखते ही कुमार चौंक पड़े और बोले—"हैं! ये दोनों कहां से आ गईं!!"



तेरहवां बयान।

आधी रात के समय सुनसान मैदान में दो कमसिन औरतें आपुस में कुछ बातें करती चली जा रही हैं, राह में छोटे छोटे टीले पड़ते हैं जिन्हें तकलीफ के साथ लांघने और दम फूलने पर कभी कभी ठहर कर फिर चलने से मालूम होता है कि इन दोनों को इस समय किसी खास जगह पर पहुंचने या किसी से मिलने की ज्यादे जरूरत है। हमारे पाठक इन दोनों औरतों को बखूबी पहिचानते हैं इसलिये इन की सूरत शक्ल के बारे में कुछ लिखने की जरूरत नहीं, इन दोनों में से एक तो किन्नरी और दूसरी कमला है॥

किन्नरी०। कमला! देखो किस्मत का हेर फेर इसे कहते हैं, एक हिसाब से गया जी में हमलोग अपना काम पूरा कर चुके थे मगर अफसोस!!

कमला०। जहां तक हो सका तुमने किशोरी की मदद जी जान से की, बेशक किशोरी जन्म भर याद रक्खेगी और तुम्हें अपनी बहिन मानेगी, खैर कोई चिन्ता नहीं हम लोगों को हिम्मत न हारनी चाहिये और किसी समय ईश्वर को न भूलना चाहिये। मुझे घड़ी घड़ी बेचारे आनन्दसिंह याद आते हैं, तुमपर उनकी सच्ची मुहब्बत है मगर

तुम्हारा कुछ हाल न जानने से न मालूम उनके दिल में क्या क्या बातें पैदा होती होंगी, हां अगर वे जानते कि जिसको उनका दिल प्यार करता है वह फलानी है तो बेशक वह खुश होते॥

किन्नरी०। (ऊंची सांस लेकर) जो ईश्वर की मरजी!!

कमला०। देखो वह उस पुराने मकान की दीवार दिखाई देने लगी॥

किन्नरी०। ठीक है अब आ पहुंचे॥

इतने ही में वे दोनों एक ऐसे टूटे फूटे मकान के पास पहुंचीं जिसकी चौड़ी चौड़ी दीवारें और बड़े बड़े फाटक कहे देते थे कि किसी जमाने में यह इज्जत रखता होगा। चाहे इस समय यह इमारत कैसी ही खराब हालत में क्यों न हो तौ भी इसमें छोटी छोटी कोठड़ियों के अलावे कई बड़े बड़े दालान और कमरे अभी तक मौजूद हैं॥

ये दोनों उस मकान के अन्दर चली गईं, बीच में चूने मिट्टी और ईंटों का ढेर लगा हुआ था, उसके बगल से घूमती हुइ एक दालान में पहुंचीं, इस दालान में एक तरफ कोठड़ी थी जिसमें जाकर कम ने मोमबत्ती जलाई और चारो तरफ देखने लगी, बगल में एक अलमारी दीवार के साथ जड़ी हुई थी जिसमें पल्ला खैंचने के लिये मुट्ठे लगे हुए थे, कमला ने बत्ती किन्नरी के हाथ में देकर दोनों हाथों से दोनों मुट्ठों को तीन चार दफे घुमाया, तुरत पल्ला खुल गया और भीतर एक छोटी सी कोठड़ी नजर आई, ये दोनों उस कोठड़ी के अन्दर चली गईं और उन पल्लों को फिर बन्द कर दिया। उन पल्लों में भीतर की तरफ भी उसी तरह खोलने और बन्द करने के लिये दो मुट्ठे लगे हुए थे॥

इस कोठड़ी में तहखाना था जिसमें उतर जाने के लिये छोटी २

सीढ़ियां बनी हुई थीं, ये दोनों नीचे उतर गईं और एक आदमी को बैठे देखा जिसके सामने मोमबत्ती जल रही थी और वह कुछ लिख रहा था ॥

इस आदमी की उम्र लगभग साठ वर्ष के होगी, सर और मूछों के बाल आधे से ज्यादे सुपैद हो रहे थे तौ भी उसके बदन में किसी तरह की कमज़ोरी नहीं मालूम होती थी, उसके हाथ पैर गठीले और मजबूत थे, चौड़ी छाती उसकी बहादुरी को जाहिर कर रही थी, चाहे उसका रङ्ग सांवला क्यों न हो मगर चेहरा खूबसूरत और रोबीला था, बड़ी २ आंखों में अभी तक जवानी की चमक मौजूद थी, चुस्त मिरजई उसके बदन पर बहुत भली मालूम होती थी, सर नङ्गा था मगर पास ही जमीन पर एक सुपैद मुड़ासा रक्खा हुआ था जिसके देखने से मालूम होता था कि गरमी मालूम होने पर उसने उतार कर रख दिया है, इसके बाएं हाथ में पङ्खा था जिसके जरिये से वह गरमी दूर कर रहा था मगर अभी तक पसीने की नमी बदन में मालूम होती थी ॥

एक तरफ ठीकड़े में थोड़ी सी आग थी जिसमें कोई खुशबूदार चीज जल रही थी जिससे वह तहखाना अच्छी तरह सुगन्धित हो रहा था। कमला और किन्नरी के पैर की आहट पा वह पहिले ही से सीढ़ियों की तरफ ध्यान लगाये था और इन दोनों को देखते ही उसने कहा, "तुम दोनों आईं?"

कमला०। जी हां ॥

आदमी०। (किन्नरी की तरफ इशारा करके) इन्हीं का नाम कामिनी है?

कमला०। जी हां ॥

आदमी०। कामिनी! आओ बेटी तुम मेरे पास बैठो मैं जिस

तरह कमला को समझता हूं उसी तरह तुम्हें भी मानता हूं ॥

कामिनी० । बेशक कमला की तरह मैं भी आपको अपना सगा चचा मानती हूं ॥

आदमी० । तुम किसी तरह की चिन्ता मत करो जहां तक होगा मैं तुम्हारी मदद करूंगा (कमला की तरफ देख कर) तुझे कुछ रोहतासगढ़ की खबर भी मालूम है ?

कमला० । कल मैं वहां गई थी मगर अच्छी तरह हाल मालूम न कर सकी, आपसे यहां मिलने का वादा किया था इसलिये जल्दी लौट आई ॥

आदमी० । अभी पहर भर हुआ है मैं खुद रोहतासगढ़ से चला आता हूं ॥

कम० । तो बेशक आपको बहुत कुछ हाल वहां का मिला होगा ॥

आदमी० । मुझसे ज्यादे वहां का हाल कोई नहीं मालूम कर सकता क्योंकि मैं पच्चीस वर्ष तक ईमानदारी और नेकनामी के साथ वहां के राजा की नौकरी कर चुका हूं, चाहे आज दिग्विजयसिंह हमारे दुश्मन हो गये हैं फिर भी कोई काम ऐसा न करूगा जिस में उस राज्य का नुक्सान हो, हां तुम्हारे सबब से किशोरी की मदद जरूर करूंगा ॥

कमला० । दिग्विजयसिंह नाहक आपसे रञ्ज हो गये ॥

आदमी० । नहीं नहीं, उन्होंने अनर्थ नहीं किया, जब किशोरी को वह जबर्दस्ती अपने यहां रक्खा चाहते हैं और जानते हैं कि शेरसिंह ऐयार की भतीजी कमला किशोरी के यहां नौकर है और ऐयारी के फन में तेज है वह किशोरी को छुड़ाने के लिये दांव घात करेगी तो उन्हें मुझसे परहेज करना बहुत मुनासिब था, चाहे मैं कैसाही खैरख्वाह और नेक क्यों न समझा जाऊं । उन्होंने मुझे कैद करने का

इरादा ऐसा नहीं किया। हाय! एक वह जमाना था कि रणधीरसिंह (किशोरी का नाना) और दिग्विजयसिंह में दोस्ती थी, मैं दिग्विजयसिंह के यहां नौकर था मेरा छोटा भाई अर्थात् तुम्हारा बाप, ईश्वर उसे बैकुण्ठ दे, रणधीर के यहां रहता था। आज देखो कितना उलट फेर होगया है। मैं बेकसूर कैद होने के खौफ से भाग तो आया मगर लोग जरूर कहेंगे कि शेरसिंह ने धोखा दिया॥

कमला०। जब आप दिल से रोहतासगढ़ की बुराई नहीं करते तो लोगों के कहने से क्या होता है, वे लोग आपकी बुराई क्योंकर दिखा सकते हैं॥

शेर०। हां ठीक है, खैर इन बातों को जाने दो, हां कुन्दन बेचारी को लाली ने खूबही छकाया, अगर मैं लाली का एक भेद न जानता होता और कुन्दन को न कह देता तो लाली कुन्दन को जरूर बर्बाद कर देती। कुन्दन ने भी भूल की अगर अपना सच्चा हाल लाली से कह देती तो बेशक दोनों में दोस्ती हो जाती॥

कमला०। कुछ कुंअर इन्द्रजीतसिंह का भी हाल मालूम हुआ?

शेर०। हां मालूम है उन्हें उस चुड़ैल ने फँसा रक्खा है जो अजायबघर में रहती है॥

कमला०। कौन सा अजायबघर?

शेर०। वही जो तालाब के बीच में बना है और जिसे जड़-बुनियाद से खोद कर फेंक देने का मैंने इरादा किया है यहां से थोड़ी ही दूर तो है॥

कमला०। जी हां मालूम हुआ, उसके बारे में तो बड़ी २ विचित्र बातें सुनने में आती हैं॥

शेर०। बेशक वहां की सभी बातें ताज्जुब से भरी हुई हैं, अफसोस! न मालूम कितने खूबसूरत और नौजवान बेचारे वहां बेदर्दी

के साथ मारे गये होंगे ॥

इतनेही में छत के ऊपर किसी के पैर की आहट मालूम हुई, तीनों का ध्यान सीढ़ियों पर गया ॥

कमला०। कोई आता है ॥

शेर०। हमें तो यहां किसी के आने की उम्मीद न थी, जरा होशियार होजाओ ॥

कमला०। मैं होशियार हूं देखिये वह आया ॥

एक लम्बे कद का आदमी सीढ़ी से नीचे उतरा और शेरसिंह के सामने आकर खड़ा होगया। उसकी उम्र चाहे जो हो मगर बदन की कमजोरी, दुबलापन और चेहरे की उदासी ने उसे पचास वर्ष से भी ज्यादे उम्रका बना रक्खा था, उसके खूबसूरत चेहरे से उदासी और रञ्ज के निशान पाये जाते थे, बड़ी २ आंखों में आंसूओं की तरी साफ मालूम होती थी, उसकी हसरत भरी निगाहें उसके दिल की हालत दिखा रही थीं और कह रही थीं कि रञ्ज, गम, फिक्र, तरद्दुद और नाउम्मीदी ने उसके बदन में खून और मांस का नाम नहीं छोड़ा केवल हड्डीही हड्डी बच गई है। उसके कपड़े भी बहुत पुराने और फटे हुए थे ॥

इस आदमी की सूरत से भलमनसी और सीधापन झलकता था मगर शेरसिंह उसकी सूरत देखते ही कांप गया, खौफ और ताज्जुब ने उसका गला दबा दिया। वह एकदम ऐसा घबड़ा गया जैसे कोई खूनी जल्लाद की सूरत देखकर घबड़ा जाता है। शेरसिंह ने उसकी तरफ देख कर कहा, "अहा आ......आप...हैं आइ...ए" ये शब्द घबड़ाहट के मारे बिल्कुलही उखड़े पुखड़े शेरसिंह के मुंह से निकले ॥

उस आदमी ने कमला की तरफ इशारा करके कहा, "क्या यही लड़की........"

शेर०। हां......आप...(कमला और कामिनी की तरफ देख कर) तुम दोनों जरा ऊपर चली जाओ, ये बड़े ही नेक आदमी हैं मुझसे मिलने आये हैं मैं इनसे कुछ बातें किया चाहता हूं ॥

कमला और कामिनी दोनों तहखाने से निकल कर ऊपर चली आईं। उस आदमी के आने और अपने चचा की विचित्र अवस्था देखने से कमला घबड़ा गई, उसके जी में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं। ऐसे कमजोर, लाचार और गरीब आदमी को देख कर उसका ऐयारी के फन में बड़ाही तेज और शेरदिल चचा इस तरह क्यों घबड़ा गया! और इतना क्यों डरा! वह इसी सोच में परेशान थी। बेचारी कामिनी भी हैरान और डरी हुई थी, यहां तक कि घण्टे भर बीत जाने पर भी उन दोनों में कोई बातचीत न हुई, घण्टे भर के बाद वह आदमी तहखाने से निकल कर ऊपर चला आया और कमला और कामिनी की तरफ देखके बोला—"अब तुम लोग नीचे जाओ मैं जाता हूं।" इतना कहता हुआ उसी तरह किवाड़ खोल कर चला गया जिस तरह कामिनी को साथ लिये हुए कमला इस मकान में आई थी ॥

कमला और कामिनी तहखाने के नीचे जा शेरसिंह के सामने बैठ गईं। शेरसिंह के चेहरे से अभी तक घबड़ाहट और परेशानी नहीं गई थी। बड़े मुश्किल से थोड़ी देर में उसने अपने होश हवास दुरुस्त किये और कमला की तरफ देख कर कहा:—

शेर०। अच्छा अब हम लोगों को क्या करना चाहिये?

कमला०। जो हुक्म हो सो किया जाय। यह आदमी कौन था जिसे देख आप........

शेर०। था एक आदमी, उसका हाल जानने का उद्योग न करो और न उसका खयाल करो बल्कि उसे बिल्कुल ही भूल जाओ ॥

उस आदमी के बारे में कमला बहुत कुछ जानना चाहती थी मगर अपने चचा के मुंह से साफ जवाब पाकर दम न मार सकी और दिलकी दिलही में रखने पर लाचार हुई ॥

शेर० । कमला ! तू रोहतासगढ़ जा और दोही तीन दिन में लौट कर वहां का जो कुछ हाल हो मुझसे कह, किशोरी से मिल कर उसे ढाढ़स दीजियो और कहियो कि घबड़ाय नहीं उसी रास्ते से किले के अन्दर बल्कि उस बाग में जिसमें किशोरी रहती है चली जाइयो जिस राह का हाल मैंने तुझसे कहा था, उस राह से आना जाना कभी किसी को मालूम न होगा ॥

कमला० । बहुत अच्छा, मगर कामिनी के लिये क्या हुक्म होता है ?

शेर० । मैं इसे ले जाता हूं अपने एक दोस्त के सपुर्द कर दूंगा वहां यह बड़े आराम से रहेगी और जब सब तरफका फसाद मिट जायगा मैं इसे ले आऊंगा, तब यहभी अपनी मुराद को पहुंच जायगी ॥

कमला० । जो मर्जी ॥

तीनों आदमी तहखाने के बाहर निकले और जैसा ऊपर लिखा जा चुका है उसी तरह कोठड़ियों और दालानों में से होते हुए इस मकान के बाहर निकल आये ॥

शेर० । कमला ! ले अब तू जा और कामिनी की तरफ से बेफिक्र रह, मुझसे मिलने के लिये यही ठिकाना मुनासिब है ॥

कमला० । अच्छा मैं जाती हूं मगर यह तो कह दीजिये कि उस आदमी से मुझे कहां तक होशियार रहना चाहिये जो आप से मिलने आया था ?

शेर० । (कड़ी आवाज में) एक दफे जो कह दिया कि उसका ध्यान भुला दे, उससे होशियार रहने की कोई जरूरत नहीं और न वह तुझे कभी दिखाई देगा ॥

चौदहवां बयान।

रोहतासगढ़ किले के चारो तरफ घना जङ्गल है, जिसमें साखू, शीशम, तेंद, आसन और सलई इत्यादि के बड़े बड़े पेड़ों की घनी छाया से एक तरह का अन्धकर सा हो रहा है, रात को तो बातही दूसरी है वहां दिन को भी रास्ते या पगडण्डी का पता लगना मुश्किल था, सूर्य की सुनहरी किर्णों को पत्तों में से छन कर जमीन तक पहुंचने का बहुत कम मौका मिलता था। कहीं कहीं छोटे छोटे पेड़ों की बदौलत जङ्गल इतना घना हो रहा था कि उसमें भूले हुए आदमियों को मुश्किल से छुटकारा मिलता था। ऐसे मौके पर उसमें हजारों आदमी इस तरह छिप सकते थे कि हजार सिर पटकने और खोजने पर भी उनका पता लगना असम्भव था। दिन को तो इस जङ्गल में अन्धकार था ही मगर हम रात का हाल लिखते हैं जिस समय उस जङ्गल की अन्धेरी और वहां के सन्नाटे का आलम भूले भटके मुसाफिरों को मौत का समाचार देता था और वहां की जमीन के लिये अमावस्या और पूर्णिमा की रात एक समान थी॥

किले के दाहिने तरफ वाले जङ्गल में आधी रात के समय हम तीन आदमियों को जो स्याह चोगे और नकाबों से अपने को छिपाये हुए थे, घूमते हुए देख रहे हैं, न मालूम ये किसकी खोज और किस जमीन की तलाश में हैरान हो रहे हैं। इनमें से एक कुंअर आनन्दसिंह, दूसरे भैरोसिंह और तीसरे तारासिंह हैं। ये तीनों आदमी देर तक घूमने के बाद एक छोटीसी चारदीवारी के पास पहुंचे जिसके चारो तरफ की दीवार पांच हाथ से ज्यादे ऊंची न थी और वहां के पेड़ भी कम घने और गुंजान थे, कहीं कहीं चन्द्रमा की रोशनी भी जमीन पर पड़ती थी॥

आनन्द० । शायद यही चारदीवारी है ॥

भैरो० । बेशक यही है, देखिये फाटक पर हड्डियों का ढेर लगा हुआ है ॥

तारा० । खैर भीतर चलिये देखा जायगा ॥

भैरो० । जरा ठहरिये पत्तों की खड़खड़ाहट से मालूम होता है कि कोई आदमी इसी तरफ आ रहा है ॥

आनन्द० । (कान लगा कर) हां ठीक तो है, हमलोगों को जरा छिप कर देखना चाहिये कि वह कौन है और इधर क्यों आता है ॥

उस आने वाले की तरफ ध्यान लगाये हुए दोनों आदमी पेड़ों की आड़ में छिप रहे और थोड़ी ही देर में सुपेद कपड़े पहिरे एक औरत को आते हुए उन लोगों ने देखा । वह औरत पहिले फाटक पर रुकी और कान लगा कर चारो तरफ की आहट लेने बाद फाटक के अन्दर घुस गई । भैरोसिंह ने आनन्दसिंह से कहा कि आप दोनों इसी जगह ठहरिये मैं उस औरत के पीछे जा कर देखता हूं कि वह कहां जाती है । इस बात को दोनों ने मंजूर किया और भैरोसिंह छिपते हुए उस औरत के पीछे रवाना हुए ॥

ऐसे घने जङ्गल में उस चारदीवारी के अन्दर पेड़ झाड़ी या जङ्गल का न होना ताज्जुब की बात थी । भैरोसिंह ने वहां की जमीन बहुत साफ पाई, हां छोटे छोटे जङ्गली बैर के दस बीस पेड़ वहां जरूर थे जो किसी तरह का नुक्सान न पहुंचा सकते थे और न उसकी आड़ में कोई आदमी छिप सकता था, मगर मरे हुए जानवरों और हड्डियों की बहुतायत से वह जगह बड़ी ही भयानक हो रही थी । उस चारदीवारी के अन्दर बहुत सी कब्रें बनी हुई थीं जिनमें कई कच्ची, कई ईंट चूने और पत्थर की भी थीं और बीच में एक सब से बड़ी कब्र सङ्गमर्मर की बनी हुई थी ॥

भैरोसिंह ने फाटक के अन्दर पैर रखते ही उस औरत को जिसके पीछे गये थे बीच वाली सङ्गमर्मर की कब्र पर खड़े और चारो तरफ देखते पाया मगर थोड़ी ही देर में वह देखते देखते गायब हो गई। भैरोसिंह ने उस कब्र के पास जाकर उसे ढूंढा मगर पता न लगा, दूसरी कब्रों के चारो तरफ और इधर उधर खोजा मगर निशान न मिला। लाचार वे आनन्दसिंह और तारासिंह के पास लौट आये और बोले:—

भैरो०। वह औरत तो वहां ही चली गई जहां हमलोग जाया चाहते हैं॥

आनन्द०। हां !!

भैरो०। जी हां॥

आनन्द०। फिर अब क्या राय है ?

भैरो०। उसे जाने दीजिये चलिये हमलोग भी चलें अगर वह रास्ते में मिल ही जायगी तो क्या हर्ज है। एक औरत हम लोगों का कुछ नुकसान नहीं कर सकती॥

ये तीनों आदमी भी उस चारदीवारी के अन्दर गये और बीच वाली सङ्गमर्मर की बड़ी कब्र पर पहुंच कर खड़े हो गये, भैरोसिंह ने उस कब्र की जमीन को अच्छी तरह टटोलना शुरू किया, थोड़ी ही देर में एक खटके की आवाज आई और एक छोटा सा पत्थर का टुकड़ा जो शायद कमानी के जोर पर लगा हुआ था दर्वाजे की तरह खुल कर अलग हो गया, ये तीनों आदमी उसके अन्दर घुसे और उस पत्थर के टुकड़े को उसी तरह बन्द कर आगे बढ़े। अब ये तीनों आदमी एक सुरङ्ग में थे जो बहुत ही तङ्ग और लांबी थी, भैरोसिंह ने अपने बटुये में से एक मोमबत्ती निकाल कर जलाई और चारो तरफ अच्छी तरह निगाह करने बाद आगे बढ़े। थोड़ी ही देर में यह

सुरङ्ग खतम हो गई और ये तीनों एक भारी दालान में पहुंचे, इस दालान की छत बहुत ऊंची थी और उसमें कड़ियों के सहारे कई जञ्जीरें लटक रही थीं, इस दालान के दूसरी तरफ एक और दर्वाजा था जिसमें से होकर ये तीनों एक कोठड़ी में पहुंचे। इस कोठड़ी के नीचे तहखाना था जिसमें उतरने के लिये सङ्गमर्मर की सीढ़ियां बनी हुई थीं, ये तीनों नीचे उतर गये। अब एक बड़े भारी घण्टे के बजने की आवाज इन तीनों के कानों में पड़ी जिसे सुन ये कुछ देर के लिये रुक गये, मालूम हुआ कि इस तहखाने वाली कोठड़ी के बगल में कोई और मकान है जिसमें घण्टा बज रहा है, इन तीनों को वहां और भी कई आदमियों के मौजूद होने का गुमान हुआ॥

इस तहखाने में भी दूसरी तरफ निकल जाने के लिये एक दर्वाजा था जिसके पास पहुंच कर भैरोसिंह ने मोमबत्ती बुझा दी और धीरे से दर्वाजा खोल उस तरफ झांका। एक बड़ी सङ्गीन बारहदरी नजर पड़ी जिसके खम्भे सङ्गमर्मर के थे। इस बारहदरी में दो मशाल जल रहे थे जिनकी रोशनी से वहां की हर एक चीज साफ मालूम होती थी और पन्द्रह आदमी भी दिखाई पड़े जिनमें रस्सियों से मुश्कें बंधी हुई तीन औरतें भी थीं। भैरोसिंह ने पहिचाना कि इन तीन औरतों में एक किशोरी भी है जिसके दोनों हाथ पीठ की तरफ कस कर बांधे हुए हैं और वह सिर नीचे किये रो रही है। उसके पास वाली दोनों औरतों की भी वही दशा थी जिन्हें भैरोसिंह, आनन्दसिंह या तारासिंह नहीं पहिचानते थे। उन तीनों के पीछे नङ्गी तलवार लिये तीन आदमी भी खड़े थे जिनकी सूरत और पोशाक से मालूम होता था कि वे जल्लाद हैं॥

उस बारहदरी के बीचोबीच चांदी के सिंहासन पर स्याह पत्थर की एक सूरत इतनी बड़ी थी कि आदमी पास में खड़ा होकर भी

उस बैठी हुई मूरत के सिर पर हाथ नहीं रख सकता था। उस मूरत की सूरत शक्ल के बारे में इतना ही लिखना काफी है कि उसे आप कोई राक्षस समझें जिसकी तरफ आंख उठा कर देखने से डर मालूम होता था॥

भैरोसिंह, तारासिंह और आनन्दसिंह उसी जगह से खड़े होकर देखने लगे कि उस दालान में क्या हो रहा है। अब घण्टे की आवाज बड़े जोर से आ रही थी मगर यह नहीं मालूम होता था कि कहां बज रहा है॥

उन तीनों औरतों को जिसमें किशोरी भी थी छः आदमियों ने अच्छी तरह मजबूती से पकड़ा और बारी बारी से उस स्याह मूरत के पास ले गये और उसके पैरों पर जबर्दस्ती सिर रखवा कर पीछे हट उसी के सामने खड़े कर दिया॥

इसके बाद दो आदमी एक औरत को लेकर आगे बढ़े जिसे हमारे तीनों आदमियों में से कोई भी नहीं पहिचानता था। उस औरत के पीछे जो जल्लाद नङ्गी तलवार लिये खड़ा था वह भी आगे बढ़ा। दोनों आदमियों ने उस औरत को स्याह मूरत के ऊपर इस जोर से ढकेल दिया कि बेचारी बेतहाशा गिर पड़ी, साथ ही जल्लाद ने एक हाथ तलवार का ऐसा मारा कि सिर कट कर दूर जा पड़ा और धड़ तड़पने लगा। इस हाल को देख वे दोनों औरतें जिसमें बेचारी किशोरी भी थी बड़े जोर से चिल्लाईं और बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ीं॥

इस कैफियत को देखकर दोनों ऐयार और कुंअर आनन्दसिंह की अजब हालत होगई, गुस्से के मारे थरथर कांपने लगे। थोड़ी देर बाद लोगों ने किशोरी को उठाया और उस मूरत के पास ले चले, उसके साथ ही दूसरा जल्लाद भी आगे बढ़ा। अब ये तीनों किसी

तरह बर्दाश्त न कर सके, कुंअर आनन्दसिंह ने दोनों ऐयारों को ललकारा कि "मारो इन जालिमों को ! ये थोड़े से आदमी हैं क्या चीज !!"

तीनों आदमी खञ्जर निकाल कर आगे बढ़ना चाहते ही थे कि पीछे से कई आदमियों ने आकर इन लोगों को पकड़ लिया और "यही हैं यही हैं, पहिले इन्हीं को बली देना चाहिये" कहकर चिल्लाने लगे ॥

॥ तीसरा हिस्सा समाप्त ॥

पढ़ने योग्य पुस्तकें।

अनुताप—

जो लोग परिणाम पर बिचार किये बिना ही कोई काम करते हैं उन्हें पीछे कैसा अनुताप भोगना पड़ता है इसका हाल इस पुस्तक में लिखा गया है— ।)

अनङ्गपाल—

ऐतिहासिक उपन्यास, महमूद गजनवी ने भारत पर जब हमलों का तांता लगा दिया था उस समय का हाल लिखा गया है— ।-)॥

अभागे का भाग्य—

प्रसिद्ध फ्रान्सीसी लेखक विक्टर ह्यूगो कृत "ला मिजरेबुलस" का अनुवाद। फ्रान्सीसी गदर का हाल जानना हो तो इस पुस्तक को पढ़िये, बहुतही रोचक और मनोहर उपन्यास है, पांच भाग- २॥)

उपन्यास कुसुम—

इसमें छः उपन्यास हैं। सहायता का पुरस्कार, सूम का मकान, धूर्त चोर, विमला, आत्म कहानी और चित्र परिचय। सभी किस्से रोचक हैं— १)

किले की रानी—

रिनाल्ड साहब के 'दि यंग फिशरमैन' का अनुवाद। बहुत ही रोचक और पढ़ने योग्य उपन्यास है— ।॥)

कुसुमकुमारी—

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित प्रसिद्ध उपन्यास। स्त्री की हिम्मत और मित्र की मित्रता का नमूना— १।)





